सूत्र ७ अंग

बाल ब्रह्मचारी पंडित मुनि श्री अमोलक ऋषिजी महाराजकृत

६२५३

उपासकदशांग सूत्र

राजा बहादुर लाला सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी जौहरी

अमूल्य. प्रत १०००

जैन शास्त्रोद्धार मुद्रालय सीकंदराबाद (दक्षिण.)

अमूल्य शास्त्र दानदाता.

जैन स्थम्भ दानवीर

स्व. राजा बहादुर लाला सुखदेव सहायजी, जौंहरी.

स्वर्गस्थ सं० १९७४.

जैन शास्त्रोद्धार मुद्रालय, सिकंदराबाद, (दक्षिण.)

जैन प्रभावक धर्म धुरंधर

S. JWALAPRASHAD

लाला ज्वालाप्रसादजी, जौंहरी.

जन्म सं० १९५०

मुख्याधिकारी

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के शुद्धाचारी पूज्य श्री खूबा ऋषिजी महाराज के शिष्यवर्य स्व. तपस्वीजी श्री केवल ऋषिजी महाराज! आप श्रीने मुझे साथले बड़ा परिश्रम से हैद्राबाद जैसा बड़ा क्षेत्र साधुमार्गीय धर्म में प्रसिद्ध किया व धर्मोपदेश से राजाबहादुर दानवीर लाला सुखदेव सहायजी ज्वाला प्रसादजी को धर्मप्रेमी बनाये. उनके सहायसे ही शास्त्रोद्धार जैसा महा कार्य हैद्राबाद में हुए. इस लिये इस कार्य के मुख्याधिकारी आपही हुए. जो जो भव्य जीवों इन शास्त्र द्वारा महालाभ प्राप्त करेंगे वे आपही के कृतज्ञ होंगे.

शिष्य-अमोल ऋषि.

उपकारी महात्मा

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के कविवरेन्द्र महा पुरुष श्री तिलोक ऋषिजी महाराज के पाटवीय शिष्य वर्य, पूज्यपाद गुरु वर्य श्री रत्नऋषिजी महाराज! आप श्री की आज्ञासे ही शास्त्रोद्धार का कार्य स्वीकार किया और आपके परमाशिर्वाद से पूर्ण कर सका. इस लिये इस कार्य के परमोपकारी महात्मा आप ही हैं. आप का उपकार केवल मेरे पर ही नहीं परन्तु जो जो भव्यों इन शास्त्रोद्वारा लाभ प्राप्त करेंगे उन सबपर ही होगा.
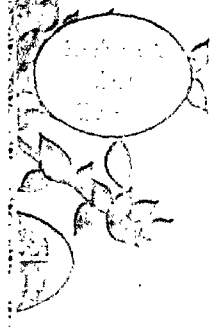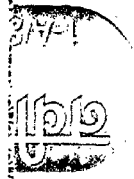
दास-अमोल ऋषि.

आभारी-महात्मा

कच्छ देश पावन कर्ता मोटी पक्ष के परम पूज्य श्री कर्मसिंहजी महाराज के शिष्यवर्य महात्मा कविवर्य श्री नागचन्द्रजी महाराज !

इस शास्त्रोद्धार कार्य में आद्योपान्त आप श्री प्राचिन शुद्ध शास्त्र, हुंडी, गुटका और समय २ पर आवश्यकीय शुभ सम्मति द्वारा मदत देते रहनेसेही मैं इस कार्य को पूर्ण कर सका. इस लिये केवल मैं ही नहीं परन्तु जो जो भव्य इन शास्त्रोद्वारा लाभ प्राप्त करेंगें वे सब ही आप के अभारी होंगे.

हिन्दी भाषानुवादक

शुद्धाचारी पुज्य श्री खूबा ऋषिजी महाराज के शिष्यवर्य, आर्य मुनि श्री चेना ऋषिजी महाराजके शिष्यवर्य बालब्रह्मचारी पण्डित मुनिश्री अमोलक ऋषिजी महाराज! आपने बडे साहस से शास्त्रोद्धार जैसे महा परिश्रम वाले कार्य का जिस उत्साहसे स्वीकार किया था उस ही उत्साह से तीन वर्ष जितने स्वल्प समय में अहर्निस कार्य को अच्छा बनाने के शुभाशय से सदैव एक भक्त भोजन और दिन के सात घंटे लेखन में व्यतीत कर पूर्ण किया. और ऐसा सरल बनादिया कि कोई भी हिन्दी भाषज्ञ सहज में समज सके, ऐसे ज्ञानदान के महा उपकार तल दबे हुअे हम आप के बडे अभारी हैं.

संघकी तर्फ से.

सहाय-मुनिमंडल

अपनी छत्ती ऋद्धि का त्याग कर हैद्राबाद सीकन्द्राबादमें दीक्षा धारक बाल ब्रह्मचारी पण्डित मुनि श्री अमोलक ऋषिजी के शिष्यवर्य ज्ञानानंदी श्री देव ऋषिजी वैय्यावृत्यी श्री राज ऋषिजी. तपस्वी श्री उदय ऋषिजी और विद्याविलासी श्री मोहन ऋषिजी. इन चारों मुनिवरोंने गुरु आज्ञाको बहुमानसे स्वीकार कर आहार पानी आदि सुखोपचार का संयोग मिला.. दो प्रहर का व्याख्यान, प्रसंगीसे वार्तालाप, कार्य दक्षता व समाधि भाव से सहाय दिया जिस से ही यह महा कार्य इतनी शीघ्रता से लेखक पूर्ण सके. इस लिये इस कार्य के उक्त मुनिवरों का भी बडा उपकार है.

सुखदेव सहाय ज्वाला प्रसाद

और भी-सहायदाता

पंजाब देश पावन करता पूज्य श्री सोहनलालजी, महात्मा श्री माधव मुनिजी, शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी, तपस्वीजी माणकचन्दजी, कवीवर श्री अमी ऋषिजी, सुवक्ता श्री दौलत ऋषिजी. पं. श्री नथमलजी, पं. श्री जोरावरमलजी. कविवर श्री मानचन्द्रजी. प्रवर्तिनी सतीजी श्री पार्वतीजी. गुणज्ञ सतीजी श्री रंभाजी. धोराजी सर्वज्ञ भंडार, भीनासरवाले कनीरामजी बहादरमलजी बाँठीया, लींबडी भंडार. कुचेरा भंडार, इत्यादिक की तरफ से शास्त्रों व सम्मति द्वारा इस कार्य को बहुत सहायता मिली है. इस लिये इन का भी बहुत उपकार मानते हैं.

सुखदेव सहाय ज्वालाप्रसाद

शास्त्र-प्रकाशक

दक्षिण हैद्राबाद निवासी जौहरी वर्ग में श्रेष्ठ दृढधर्मी दानवीर राजा बहादुर लालाजी साहेब श्री सुखदेव सहायजी ज्वालाप्रसादजी!

आपने साधु सेवा के और ज्ञान दान जैसे महालाभके लोभी बन जैन साधुमार्गीय धर्म के परम माननीय व परम आदरणीय बत्तीस शास्त्रों को हिन्दी भाषानुवाद सहित छपाने को रु. २०००० का खर्चकर अमूल्य देना स्वीकार किया और युरोप युद्धारंभ से सब वस्तु के भाव में वृद्धि होने से रु. ४०००० के खर्च में भी काम पूरा होनेका संभव नहीं होते भी आपने उस ही उत्साह से कार्य को समाप्त कर सबको अमूल्य महालाभ दिया, यह आप की उदारता साधुमार्गीयों की गौरव दर्शक व परमादरणीय है!

हैद्राबाद सिकन्द्राबाद जैन संघ

आवश्य कीय सूचना

घोघारी (काठियावाड) निवासी मणीलाल शिवलाल जो शास्त्रोद्धार कार्यलय का मेनेजर था और जो शास्त्रोद्धार जैसे महा उपकारी और धार्मीक कार्य के हिसाब को संतोष जनक और विश्वाशनीय ढंग से नहीं समझा सकने के सबब से हमको पूर्ण अविश्वाश होगया और आपखुद घबरा कर बिना इजाजत एक दम चलागया इस लिये जो पेश अखबार और धार्मीक कार्य के लिये मणीलाल को देना चाहाथा वो उसकी अप्रमाणीकता और घोटाला देखकर उस को नहीं देते हुवे आग्रा निवासी जैनपथप्रदर्शक पासिक के मसीर्द्द कर्ता बाबु पद्मसिंघ जैनको धार्मिक कार्य निमित्त दिया गया है सर्व सज्जन इस अखबार से फायदा उठावें

ज्वाला प्रसाद

॥ सप्तम्-उपासक दशाङ्ग ॥

* प्रथम-अध्ययन *

सूत्र

तेणंकालेणं तेणंसमएणं चंपाएनामं नयरींहोत्था वण्णओ, पुण्णभद्देचेइए वण्णओ ॥ तेणंकालेणं तेणंसमएणं अजसुहम्मे समोसरिए जाव जंबु पज्जुवा समाणे एवं वयासी-जइणं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थयरेणं जाव संपत्तेणं

अर्थ

उस काल चौथे आरे में और उस समय में (जिस समय में यह भाव प्रकाशे) चम्पा नाम की नगरी थी, पूर्णभद्र नामे यक्ष का चैत्य बगीचे युक्त था, इन दोनों का सविस्तार वर्णन उववाई उपांग से जानना॥ उस काल उस समय में, आर्य-शरल स्वभावी बाह्याभ्यन्तर शुद्धाचारी श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी के पांचवे गणधर श्री सुधर्मा स्वामी पधारे, गुणसिला चैत्य में यथाप्रतिरूप कल्पनिय अवग्रह ग्रहण कर तपसंयम से आत्मा भावते हुवे विचरनेलगे. परिषदा दर्शनार्थ आइ, धर्मकथा सुनाइ, परिषदा पीछी गइ. तब

छट्ठस्स अंगस्स णायधम्मकहाणं अयमट्ठे पण्णत्ते, सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जंबु! समणेणं जाव संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तंजहा-आणंदे, कामदेवे, गहावइ-चुलणीपिया, सूरादेव, चुल्लसयए, गाहावइ-कुंडकोलीए, सद्दालपुत्ते, महासए, नंदनिपिया, सालहीपिया ॥१॥ जइणं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं दस अज्झ-

सुधर्मा स्वामी के ज्येष्ठ शिष्य आर्य जम्बू स्वामी गुरु के अदूर सामंत [पास] रहे हुवे संशय उत्पन्न, हुवा तत्काल उठकर सुधर्मा स्वामी की पास आये वंदना नमस्कार कर प्रश्न पूछने लगे—यदि अहो भगवन्! श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी धर्मादि के करता, तीर्थ के करता, यावत् मुक्ति प्राप्त हुवे उनोंने छठा अंग ज्ञाताधर्मकथा का यह अर्थ कहा वह मैंने श्रवण किया, आगे सातवा अंग उपासक दशा सूत्र का क्या अर्थ कहा है? यों निश्चय, हे जम्बू! श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी मुक्ति पधारे उनोंने सातवा अंग उपासकदशा के दश अध्ययन कहे हैं, उन के नाम—१ आणंद का, २ कामदेव का, ३ गाथापति-चुलणीपिता का, ४ सूरादेव, का ५ चुल्लशतक, का ६ गाथापति-कुंड कोलिक का, ७ सकडाल पुत्र का, ८ महाशतक का, ९ नन्दनी पिता और १० सालही पिता का ॥ १ ॥ यदि अहो भगवन्! श्रमण यावत् मुक्ति पधारे उनोंने सातवे अंग उपासक दशा के दश अध्ययन कहे. तो अहो भगवन्!

सूत्र

यणा पण्णत्ता, पढमस्सणं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? ॥ २ ॥ एवं खलु जंबु ! तेणंकालेणं तेणंसमएणं वाणियगामे नामं नयरे होत्था वण्णओ ॥ तस्सणं वाणियगामस्स णयरस्स बहिया उत्तर पुरच्छिमेणं दूईपलासे णामं चेइएहोत्था ॥ तत्थणं वाणियगामस्स णयरस्स जियसत्तूणामं रायाहोत्था वण्णओ ॥ तत्थणं वाणियगामे आणंदेणामं गाहावई परिवसइ अड्ढे जाव अपरिभूए ॥ ३ ॥ तस्सणं अणंदस्स गहावईस्स चत्तारि हिरण्णकोडिओ निहाण

अर्थ

श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामीने प्रथम अध्ययनका किसप्रकारका अर्थकहाहै ? ॥२॥ यों निश्चय, हे जम्बू ! उस काल उस समय में वाणिज्य ग्राम नाम का नगर था. उस वाणिज्य ग्राम नगर के बाहिर उत्तर पूर्व दिशा के मध्य ईशान कौन में द्युति पलास नामे यक्ष का यक्षालय बगीचे युक्त था. तहां वाणिज्य ग्राम नगर का जितशत्रु नाम का राजा राज्य करता था, वह भी कोणिक राजा के जैसा वर्णन योग्य था. तहां वाणिज्य ग्राम नगर में आणंद नाम का गाथापति रहता था. वह ऋद्धिवंत यावत् अन्य से अपराभवित था; उस की जाति में उस के समान धनवान ऐश्वर्यवान अन्य कोई भी नहीं था ॥ ३ ॥ उस आणंद

पउत्ताओ, चत्तारि हिरण्णकोडिओ वुड्ढिपउत्ताओ, चत्तारि हिरण्णकोडिओ पवित्थर पउत्ताओ, चत्तारि वया, दसगो साहस्सिएणंवएणं होत्था ॥ ४ ॥ सेणं आणंदेगाहावइ बहुणं राईसर जाव सत्थवाहाणं बहुसुकजेसूय, कारणेसूय, गुज्झेसूय णिच्छएसूय ववहारेसूय, मंतेसूय, कुटुंबेसुय आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे सयस्सवि य णं कुटुंबस्स मेढिप्पमाणे आहारे, आलंबण चक्खूभूए(पाठांतर-मेढिभूए) सव्वकज्जवड्ढावएयाविहोत्था.

गाथापति के चार हिरण्य की कोडी का द्रव्य निधान (जमीन) में गाडा हुवा था, चार हिरण्यकोडी वृद्धि करने में व्यापार में था, और चार हिरण्य कोडी का पाथरा-घर विखेरा था. यों सब १२ कोड का द्रव्य था. और चार वर्ग (व्रज) गाइयों के अर्थात् एक वर्ग दशहजार गायका होता है. इसप्रकार चालीस हजार गौओं जिन के थी ॥ ५ ॥ वह आणंद गाथापति बहुत राजा ईश्वर [युवराज] यावत सार्थवाही प्रवृत्तिक (व्यापारीयों) इनोंके बहुत कार्यों में कारन में, गुप्तकामों में, निश्चय के कामर्मे, व्यवहार के काम में, मंत्र-आलोचन-विचार करनेमें, तैसे अपने भी कुटुंब में भी आंखोसमान मेंढीसमान-स्थम्भ समान आधार

सूत्र

॥ ५ ॥ तस्सणं आणंदस्स सिवाणंदाणामं भारिया होत्था, अहीणा जाव सुरूवा; आणंदस्स इट्ठा, आणंदेणं गाहावतिणासद्धिं अणुरत्ता अविरत्ता इट्ठसद्दे-रूवे-गंधे-रसे फासे पंचविहेणं माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणी विहरइ ॥ ६ ॥ तस्सणं वाणियगामस्स णगरस्स वहिया उत्तर पुरत्थिमे दिसीभाए एत्थणं कोल्लाएणामं संन्निवेसे होत्था, रिद्धत्थमिय समिद्धे जाव पासाइए॥७॥ तत्थणं कोल्लाएणामं सन्निवेसे आणंदेणामं गाहावइ, तस्सणं आणंदस्स गाहावईस्स बहुएमित्तणाति णियग सयणं संबंधि परिजणे परिवसइ. अड्ढा जाव अपरिभूया ॥ ८ ॥ तेणंकालेणं तेणंसमएणं समणे

अर्थ

भूत, आलम्बन भूत, सर्व कार्यों में प्रवृतानेवाला था ॥ ५ ॥ उस आणंद गाथापति के शिवानन्दा नाम की भार्या थी, वह पूर्ण अंगोपांग की धारक सुशीला, सुरूपवति, आनन्द को इष्टकारी, आनन्द गाथापति के साथ अनुरक्त अत्यन्त प्रेमवन्त इष्ट-मनोज्ञ शब्द रूप गंध रस स्पर्श पांचों इन्द्रिय सम्बन्धी मनुष्य के काम भोग भोगवती हुइ विचरती थी ॥ ६ ॥ उस वाणिज्यग्राम नगर के बाहिर ईशान कौन में तहां कोल्लाक नामका सन्निवेस (महल्ला-पुरा) था, वह ऋद्धि युक्त चित्तको अहलाद हर्ष का, उत्पादक देखने योग्य था ॥ ७ ॥ उस कोल्लाके सन्नीवेस में आनन्द गाथापति के बहुत मित्रजन, ज्ञातिजन, स्वयं के सज्जन सम्बन्धी, सामाजिकजन व परजन दास दासी आदि रहते थे, वेभी ऋद्धिवन्त यावत् अपरा

भगवं महावीरे समोसरिए, परिसाणिग्गया, कोणिएराया जहा तहाजियसत्तु निगच्छइ जाव पज्जूवासइ ॥ ९ ॥ तएणं से आणंदे गाहावइ इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे एवं खलु समणे जाव विहरइ, तं महाफलं गच्छामिणं समणं जाव पज्जुवासामि, एवं संपेहेइ २ त्ता ण्हाए सुद्धप्पावेसाइं वत्थाइं अप्पमहग्गा णालंकियसरिरा सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता सकोरंट मल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मणूस्स वग्गुरा परिक्खित्ते पायविहारचारेणं, वाणियगामं नयरं मज्झं-

थे ॥ ८ ॥ उस काल उस समय में श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी पधारे, परिषदा दर्शनार्थगइ, राजा की तरह जितशत्रु राजा भी दर्शनार्थ गया, यावत् वंदना नमस्कार कर सेवा भक्ति करने ॥ ९ ॥ तब आनन्द नाम के गाथापति को भगवंत पधारने की खबर मिली, उसे अवधारी—कियों निश्चय श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी दुतीपलास चैत्य में यावत् विचर रहे हैं वहां जाना यावत् उन की भक्ति करने से महाफल का कारण है. यों विचार किया, विचार कर स्नान किया शुद्ध मंजन किया उत्तम स्थान-सभा में प्रवेश करने योग्य अल्प भार वाले और बहुत मूल्य वाले वस्त्र भूषण धारन किये, इस प्रकार शरीको अलंकृतकर अपने घरसे निकला, निकलकर कोरंट वृक्षके फुलोंकी मालाका छत्र धारन

मज्झेणं णिग्गच्छइ २ त्ता जेणेव दूइ पलासेणामं चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता, तिक्खुत्तो आयाहीणं पयाहीणं करेइ २त्ता वंदइ नमंसइ जाव पज्जुवासइ ॥ १० ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे आणंदस्स गाहावईस्स तीसेय-महति महलियाए जाव धम्मकहा, परिसा पडिगया, रायापडिगओ ॥ ११ ॥ तएणं से आणंदे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतीए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियए, एवं वयासी—सद्दहामिणं भंते ! णिग्गंत्थं पावयणं, पत्तियामिणं भंते ! णिग्गंत्थं पावयणं, रोयामिणं भंते ! णिग्गंत्थं पावयणं,एववमेयं भंते !

करता, मनुष्यों के वृन्द से परिवरा हुवा. पांवसे चलताहुवा वणिज्याग्रामके मध्यमेंसे निकलकर जहां दूतिपालास चैत्य जहां महावीरस्वामी थे तहांगया, जाकर तीनवक्त हस्तद्वय जोड मस्तकपर प्रदक्षिणावर्त फिरताहुवा वंदना नमस्कार किया यावत् सेवा करनेलगा ॥१०॥ तब श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामीने आनन्द गाथापति को और उस महा परिषदा को धर्मकथा सुनाइ, परिषदा पीछी गई, जितशत्रु राजा भी गया ॥ ११ ॥ तब आनन्द गाथापति श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी के पास धर्मश्रवण कर अवधार कर हृष्ट तुष्ट हुवा हृदय विकसायमान हुवा. यों कहने लगा—अहो भगवन् ! मैंने निर्ग्रन्थ के वचनों का श्रद्धा न किया है, मुझे निर्ग्रन्थ प्रवचन की प्रतीत हुइ है, निर्ग्रन्थ प्रवचन ग्रहण करने की रुची हुइ है, अहो भगवन् ! जिस

मज्झेणं णिग्गच्छइ २ त्ता जेणेव दूइ पलासेणामं चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता, तिक्खुत्तो आयाहीणं पयाहीणं करेइ २ त्ता वंदइ नमंसइ जाव पज्जुवासइ ॥ १० ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे आणंदस्स गाहावईस्स तीसेय-महति महालियाए जाव धम्मकहा, परिसा पडिगया, रायापडिगओ ॥ ११ ॥ तएणं से आणंदे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतीए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियए, एवं वयासी—सद्दहामिणं भंते ! णिग्गंत्थं पावयणं, पत्तियामिणं भंते ! णिग्गंत्थं पावयणं, रोयामिणं भंते ! णिग्गंत्थं पावयणं, एववमेयं भंते !

करता, मनुष्यों के वृन्द से परिवरा हुवा. पांवसे चलताहुवा वाणिज्याग्रामके मध्यमेंसे निकलकर जहां दूतिपालास चैत्य जहां महावीरस्वामी थे तहांगया, जाकर तीनवक्त हस्तद्वय जोड मस्तकपर प्रदक्षिणावर्त फिरताहुवा वंदना नमस्कार किया यावत् सेवा करनेलगा ॥१०॥ तब श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामीने आनन्द गाथापति को और उस महा परिषदा को धर्मकथा सुनाइ, परिषदा पीछी गई, जितशत्रु राजा भी गया ॥ ११ ॥ तब आनन्द गाथापति श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी के पास धर्मश्रवण कर अवधार कर हृष्ट तुष्ट हुवा हृदय विकसायमान हुवा. यों कहने लगा—अहो भगवन् ! मैंने निर्ग्रन्थ के वचनों का श्रद्धा न किया है, मुझे निर्ग्रन्थ प्रवचन की प्रतीत हुइ है, निर्ग्रन्थ प्रवचन ग्रहण करने की रुची हुइ है, अहो भगवन् ! जिस

तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय पडिच्छिमेयं भंते ! से जहेयं तुब्भे वयहत्ति कट्टु, जहाणं देवा- देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवेराईसर तलवर माडंविय कोडंबिय सेट्ठि सत्थवाह प्पभिईया मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे जाव पव्वातित्त ए, अहन्नं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणूव्वातियं सत्तसिक्खावइयं दुवा- लस्सविहं गिहिधम्मं पडिवज्जइस्सामि ॥ अहासूहं देवाणुप्पिया ? मापडिबंधं करेहि ॥ १२ ॥ तत्तेणं से आणंदे गाहावती समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतीए

अर्थ

प्रकार आप कहते हो वैसा ही है, अवितथ्य—सत्य है, अहो भगवन् ! आपके वचन मैंने इच्छे हैं विशेष इच्छे हैं—वारम्वार चाह की है, जैसा आप फरमाते हो वैसा ही है, यदि अहो देवानुप्रिया ! आपके पास हुत से राजा युवराजा सेनापति कोतवाल मांडविय कुटुम्बिय शेठ सार्थवाही व्यारीयों प्रमुख मुण्डित होते ,, गृहस्थावास छोड साधु वनते हैं, परन्तु मैं तैसा मुण्डित होने, दीक्षा लेने, असमर्थ हूं. मैं तो देवानुप्रियके पास पांच अनुव्रत सात शिक्षाव्रत यह वारह प्रकार का जो गृहस्थ का धर्म है उसे अंगीकार करना चहा- ! हूं. भगवन्तने कहा. हे देवानुप्रिया! जिस प्रकार सुख हो वैसा करो परन्तु प्रातिवन्ध (विलम्ब-ढील) त करो ॥ १२ ॥ तब आनन्द गाथापति श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी के पास—प्रथम व्रत स्थू-

तप्पढमताते थूलयं पाणातिवायं पच्चक्खाति, जावजीवाए दुविहं तिविहेणं नकरेति नकारवेति मणसा वयसा कायसा ॥१३॥ तयाणं तरंचरं थूलयं मुसावायं पच्चक्खाति जाव जीवाए दुविहं तिविहेणं नकरेति नकारवेति मणसा वयसा कायसा ॥ १४ ॥ तद्दाणं तरंचणं थूलयं अदिण्णादाणं पच्चक्खाति जाव जीवाए दुविहं तिविहेणं नकरेति नकारवेति मणसा वयसा कायसा ॥ १५ ॥ तयाणं तरंचणं सदारसंतोसिते परिमाणं करेति—ननत्थ एकाए सिवाणंदाते भारियाते अवसेसं मेहुणविहं पच्चक्खाति

बडे त्रस जीव की हिंसा करने के प्रत्याख्यान किये, जावजीव पर्यन्त दो करन और तीन योग कर: दो करन—मैं स्वयं त्रस जीव की घात करूंगा नहीं, और अन्य के पास त्रस जीव की घात करावूंगा नहीं, तीनजोग-मनकर, वचन कर, और कायाकर ॥१३॥ तदनन्तर दूसरा व्रत स्थूल-बडा मृषावाद—झूट बोलने का प्रत्याख्यान किया जावजीव दो करन तीनयोगकर, मैं झूट बोलूं नहीं अन्य से झूट बोलवूं नहीं, मनसे वचन से और कायासे ॥१४॥ तदनन्तर तीसरा व्रत स्थूल—बडा अदत्तादान-विनादी वस्तुलेनेका प्रत्याख्यान किया दो करन तीनजोगकर, उक्त प्रकार ॥१५॥ तदनन्तर चौथाव्रत स्वस्त्री को सन्तोषपने मैथुन सेवन का प्रमाण किया, एक शिवानंदा भार्या उपरान्त अपरशेष मैथुन सेवनका प्रत्याख्यान ॥१६॥ तदनन्तर पांचवाव्रत

सूत्र

॥ १६ ॥ तदाणं तरंचणं इच्छापरिमाणं करेमाणे-हिरण्ण सुवण्ण विहिपरिमाणं करेति, ननत्थ चउहिं हिरण्ण कोडीहिं निहाण पउत्ताहिं, चउहिं हिरण्ण कोडिहिं वुड्डिय-उत्ताहिं, चउहिं हिरण्ण कोडीहिं पवित्थर पउत्ताहिं, अवसेसं सव्वं हिरण्ण सुवण्ण विहं पच्चक्खाति ॥१७॥ तदाणं तरंचणं चउप्पयाविहिं परिमाणं करेति, ननत्थ चउहिं वग्गेहिं दसगोसाहस्सिएणं वतेणं, अवसेसं सव्वं चउप्पयविहिं पच्चक्खाति ॥ १८ ॥ तदाणंतरंचणं खित्तवत्थुविहं परिमाणं करेति, ननत्थपंचहिं हलसतेहि नियत्तणसतेण हलेणं अवसेसं सव्व खित्तवत्थु पच्चक्खाति॥१९॥ तदाणं तरंचणं सगडाविहं परिमाणं

अर्थ

इच्छा-तृष्णा का परिमाण करना है जिसमें प्रथम हिरन्य-चान्दी का और सुवर्ण-सोने का परिमाण किया चार हिरन्य क्रोड निधान में हैं, चार हिरन्य क्रोड व्यापार में हैं, चार हिरन्य क्रोड पाथारा विखरा है, यों बारे क्रोड के द्रव्य उपरान्त अपर शेष हिरन्य सुवर्ण के प्रत्याख्यान ॥१७॥ तदन्तर चउपद—पशु—जानवर का प्रमाण किया फक्त दश हजार गौका एक वर्ग ऐसे चार वर्ग (चालीस हजार गौ) उपरान्त सर्व प्रकार के चतुष्पद का प्रत्याख्यान ॥ १८ ॥ तदन्तर क्षेत्र खुल्ली भूमिका-खेत बगीचे आदि, वस्तु-ढकी भूमिका घरादि का प्रमाण किया फक्त पांचसो हलकी जमीन नियमित भूमी है. उससे अपर शेष सब क्षेत्रा वत्थु के प्रत्याख्यान * ॥ १९ ॥ तदन्तर सगड-गाडा

* श्लोक-दशकरे भवते वंश, वंशवीसे निर्वतन, निर्वतन शतेमान हलं, क्षेत्र स्मृत बुद्रे ॥१॥ अर्थात १० हाथका

मूल

करेति, नन्नत्थहिं पंचहिंसगड सतेहिं दिसायत्तिएहिं, पंचहिंसगड सएहिं संवाहणिएहि अवसेसं सगडविहिं पच्चक्खाइ ॥ २० ॥ तयाणं तरंचणं वाहणविहिं परिमाणं करेइ नन्नत्थचउहुहिं दिसायणिएहिं वाहणेहिं, चउहिं संवाहणिएहिं अवसेसं वाहणविहिं पच्चक्खाति ॥ २१ ॥तदाणं तरंचणं उवभोग परिभोगविहिं पच्चक्खातिमाणा-उल्लाणियाविहिं परिमाणं करेति-नन्नत्थ एगाते गंधकासातीते अवसेसं उल्लणियाविहिं पच्चक्खाति ॥ २२ ॥ तदाणं तरचणं दंतणविहिं पच्चक्खाति-नन्नत्थ एगेणं अल्लट्ठीमहुएणं अवसेसं

अर्थ

गाडी का प्रमाण किया, इतना विशेष—पांचसो गाडे गाडी (थलपंथी) खेत में से या वाहन में से तृण काष्ट माल लाने केलिये, और पांचसो गाडे देशान्तर में व्यापरर्थ माल लाने पहोंचाने केलिये; यों एक हजार गाडे अपर शेष गाडा गाडी के प्रत्याख्यान ॥ २० ॥ तदनन्तर वाहन (जल पंथी) का प्रमाण किया—फक्त चार वाहन (जहाज) परदेश जाने आने के और चार वाहन माललाने के अपर शेष वाहन के प्रत्याख्यान ॥२१॥ तदनन्तर उपभोग परिभोग के प्रत्याख्यान करते हुवे-उला-भीजा हुवा शरीरको पूंछने के वस्त्रका प्रत्याख्यान किया-फक्त एक कषायित रंगका सुगन्धी वस्त्र, अपर शेष अंगूछे वस्त्र का प्रत्याख्यान ॥ २२ ॥ तदनन्तर दांतन की विधि का प्रत्याख्यान किया-फक्त एक हरा जेष्टिकमद

सूत्र

दंतणविहिं पच्चक्खाति ॥ २३ ॥ तदाणं तरंचणं फलविहिं परिमाणं करेति-नन्नत्थ एगेणं खीरामलएणं, अवसेसं फलविहिं पच्चक्खाति॥ २४ ॥तयाणं तरंचणं अब्भिंगणविहिं परिमाणं करेति—नन्नत्थ सयपाक सहस्स पागेहिं तेल्लेहिं अवसेसं अब्भिंगण, विहिं पच्चाक्खाति ॥ २५ ॥ तयाणं तरंचणं उवट्टणविहिं परिमाणं करेति-नन्नत्थ एगेणं सुरहिणा गंधवट्टिएणं, अवसेसं उवट्टणविहिं पच्चक्खति ॥२६॥ तयाणं तरंचणं मंज्जण विहिं परिमाणं करेति-नन्नत्थ अट्ठहिं उट्टितेहिं उदगस्स घडेहिं, अवसेसं मज्जणविहिं

अर्थ

का दांतन उपरान्त दांतने के प्रत्याख्यान ॥ २३ ॥ तदनन्तर फलविधी का परिमाण किया-फक्त एक क्षीर आमला (गुठली विन बन्धा) अपर नाम रायण (खिरनी) उपरान्त सर्व प्रकार के फल का प्रत्याख्यान ॥ २४ ॥ तदनन्तर अभ्यंगन अंग को तेल मर्दन का प्रमान किया—फक्त शतपाक सो द्रव्यों का बना और सहस्रपाक—हजार द्रव्यों का बना दोनों तरह के तेल उपरान्त अभ्यंगन के प्रत्याख्यान॥२५॥ तदनन्तर उवटन-पीठी मर्दन की विधीका प्रमाण किया-फक्त एक कोष्ठक गंध गोधूम (गहूं के आटे के साथ) वटी बनाइ सुगंधी गोलीयों उपरान्त उद्वर्तन विधि के प्रत्याख्यान ॥ २६ ॥ तदनन्तर मंजन—स्नान विधिका परिमाण किया-फक्त आठ पानी के उष्ट्रिक घडे(कलश)उपरान्त स्नानमें पानी वापरने के प्रत्याख्यान॥२७॥ तब फिर वस्त्र का परिमाण किया-फक्त एक क्षोमयुगल जाति के कपास के कपडे उपरान्त, अपर शेष

पच्चक्खाति॥२७॥तदाणं तरंचणं वत्थविहिं परिमाणं करेति-नन्नत्थ एकेणं खोमजुयलेणं, अवसेसं वत्थविहं पच्चक्खाइ ॥ २८ ॥ तदाणं तरंचणं विलेवणविहिं परिमाणं करेति-नन्नत्थ अगरु कुंकुम चंदण मादितेहिं, अवसेसं विलेवणविहं पच्चक्खाति ॥ २९ ॥ तदाणं तरंचणं पुप्फविहिं परिमाणं करेइ-णण्णत्थएगेणं सुद्धपउमेणं मालइयं कुसुम-दामेणं, अवसेसं पुप्फविहिं पच्चक्खाती ॥३० ॥ तदाणं तरंचणं आभरणविहिं परिमाणं करेइ-णण्णत्थ मट्ठकण्णेआतेहिं नाममुद्दाएय अवसेसं आभरणविहिं पच्चक्खाती॥३१॥ तदाणं तरंचणं धूवविहिं परिमाणं करेइ-नन्नत्थ अगरुतुरुक्क धूवमादितेहिं, अवसेसं धूवणविहिं पच्चक्खाति ॥ ३२ ॥ तदाणं तरंचणं भोयणविहिं परिमाणं करेमाणे

जाति के वस्त्र का प्रत्याख्यान ॥ २८ ॥ तदनन्तर विलेपन विधीका परिमाण किया-कृष्णागार, कुंकुम चंदन का मर्दन उपरान्त विलेपन विधिका प्रत्याख्यान॥२९॥ तदनन्तर फूलकी विधिका परिमाण किया-फक्त एक सुगन्धी पौंडारिक कमल और मालती का फूल इन की माला, इन उपरान्त फूल की विधी का प्रत्याख्यान ॥ ३० ॥ तदनन्तर आभरण (भूषण) विधी का परिमाण किया—फक्त चित्रवन्त आठ खूनेवाले कान के कुंडल और नामांकित मुद्रिका, इन दो भूषण उपरान्त भूषण के प्रत्याख्यान ॥ ३१ ॥ तदनन्तर धूप का [illegible] किया-फक्त अगर और कृष्णागर सेल्हारस धूप इन सिवाय धूप के प्रत्याख्यान ॥ ३२ ॥ तद-

पिज्जाविहिं परिमाणं करेति-नन्नत्थ एगाते कट्ठपिज्जाते अवसेसं पिज्जाविहिं पच्चक्खाति ॥ ३३ ॥ तदाणं तरंचणं भक्खणविहिं परिमाणं करेइ - नन्नत्थ एगेहिं घयपुण्णेहिं खंडखज्जेएहिंवा, अवसेसं भक्खणविहिं पच्चक्खाति ॥ ३४ ॥ तदाणं तरंचणं ओदणविहिं परिमाणं करेइ-नन्नत्थ कलमसालि ओदणेणं अवसेसं ओदणविहिं पच्चक्खाति॥३५॥ तदाणं तरंचणं सूपविहिं परिमाणं करेइ-नन्नत्थ कलयसूहेणवा मुग्गमाससूएणवा, अवसेसं सूपविहिं पच्चक्खाति ॥३६॥ तदाणं तरंचणं घयविहिं परिमाणं करेति-नन्नत्थ

अर्थ

नन्तर भोजन की विधी का परिमाण करते हुवे—पिज्जा—तली हुइ वस्तु का परिमान किया—फक्त घृतसे तले हुवे चांवल के पोया उपरान्त, अपर शेष पेज्ज विधी का प्रत्याख्यान ॥ ३३ ॥ तदनन्तर भक्षण विधी (पक्वान) का प्रमाण किया-फक्त एक घृत पूरित घेवर खांड—सक्कर से गलेफित किये मैदे के खाजे उपरान्त पक्वान के प्रत्याख्यान ॥ ३४ ॥ तदनन्तर ओदन—चांवल का परिमाण किया—फक्त एक कमल साल के चांवल के उपरान्त ओदन के प्रत्याख्यान ॥ ३५ ॥ तदनन्तर सूंप—दाल का प्रमाण किया—फक्त कलयर (कावली) चीने की दाल, मूंग की दाल, उडद की दाल, तीन प्रकार की दाल उपरान्त अपर शेष सूंप के प्रत्याख्यान ॥ ३६ ॥ तदनन्तर घृत की विधी का प्रमाण किया-फक्त एक
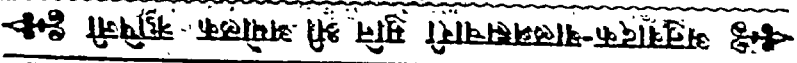
सारइएणं गोघयमंडेणं अवसेसं घयविहिं पच्चक्खाति ॥ ३७ ॥ तदाणं तरंचणं साग-विहिं परिमाणं करेइ-नन्नत्थ वत्थुसाएणंवा, सुत्थियसाएणंवा, मंडूक्कियसाएणंवा, अवसेसं सागविहिं पच्चक्खाति ॥ ३८ ॥ तदाणं तरंचणं माहुरयविहिं परिमाणं करेति-नन्नत्थ एगेणं पालुंकामाधुरएणं अवसेसं माहुरयविहिं पच्चक्खाति ॥ ३९ ॥ तदाणं तरंचणं जेमणविहिं परिमाणं करेति-नन्नत्थ सेहंबदालियंवेहिं, अवसेसं जीमणविहिं पच्चक्खाति ॥ ४० ॥ तदाणं तरंचणं पाणियविहिं परिमाणं करेति-नन्नत्थएगेणं अंत-

शरद् ऋतु—अश्विन कार्तिक का निष्पन्न हुवा गाय का घृत उपरान्त घृत के प्रत्याख्यान ॥ ३७ ॥ तदनन्तर शाख का प्रमाण किया—फक्त बत्थवे का, सूवे (सूवा पालखा) का शाख, मंडुकी का शाख (भाजी) इन तीन प्रकार के शाख उपरान्त अपर शेष शाख के प्रत्याख्यान॥३८॥ तदनन्तर मधुरफल का परिमाण करते फक्त एक पालंका—वल्लीका फल उपरान्त अपर शेष वल्ली के फल के प्रत्याख्यान॥ ३९ ॥ तदनन्तर जेमने की विधी का प्रमाण करते-फक्त दाल के वडे तथा पुडे और जेमन के प्रत्याख्यान ॥४०॥ तदनन्तर पानीका प्रमाण किया-फक्त एक आकाशका पडा हुवा अधर झेला हुवा (टंके प्रमुख में

सूत्र

लिक्खोदएणं अवसेसं पाणिविहिं पच्चक्खाति ॥ ४१ ॥ तदाणं तरंचणं मुहवासविहिं परिमाणं करेति-नन्नत्थ पंचसोगंधितेणं तंबोलेणं अवसेसं मुहवासविहिं पच्चक्खाति।४२। तदाणं तरंचणं चउविहं अणट्टादंड पच्चक्खाति तं जहा--अवज्झाणचरियं, पमायच-रित्तं, हिंसप्पयाणे, पावकम्मोवदेसं ॥४३॥ आणंदाति, समणे भगवं महावीरे आणंद समणोवासगं, एवं वयासी--एवं खलु आणंदा ! समणोवासतेणं अभिगय जीवाजीवेणं उवलद्ध पुण्णपावेहिं आसव-संवर-निज्जरा - किरिया-अहिगरण-बंधमोक्ख-कुसलेणं

अर्थ

सेचकर रखा हुवा) पानी उपरान्त अपर शेष पानी पीनेका प्रत्याख्यान ॥ ४१ ॥ तदनन्तर मुखवास का परिमान किया—फक्त पांच सोगन्धिक द्रव्य-१ इलायची, २ लवंग, ३ कर्पूर, ४ कंकोल और ५ जाय फल, इन उपरान्त मुखवास (तम्बूल) के प्रत्याख्यान (यहां तक सब उपभोग परिभोग परिमाण व्रत जानना) ॥ ४२ ॥ तदनन्तर चार प्रकार का अनर्था दंडके प्रत्याख्यान किया उनके नाम-१ अपध्यान का आचरन अर्थात् आर्त ध्यान रौद्रध्यान ध्याना-किसी का बुराचितवना, २ प्रमाद चरित--अर्थात् घृतादि प्रवाही (पतले) पदार्थों के बरतन उघाड रखना आदि, ३ हिंशाकारी उपकरन जैसे तलवार चक्कू विष वगैरे किसी को देना, और ४ पापकर्म का उपदेश अर्थात् कृषी कर्मादि का उपदेश करना, ॥ इसप्रकार आठव्रत आवज्जीवके धारनकिये ॥४३॥ फिर-आनंदसे श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामी कहने लगे-कि हे आनन्द !

असहिज्ज देवसुर नागसुवन्न जक्ख रक्खस किंन्नर किंपुरुष गरुल गंधव्व महोरगाइ-एहिं निग्गंथाओ पावयणाओ जाव अणातिक्कमणिज्जेणं. सम्मत्तस्स पंच आइयारा पेयाला जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा-संका, कंखा, वितिगिच्छा, परपासंडपसंसा परपासंड संथवो ॥ ४९ ॥ तदाणं तरंचणं थूलगपाणातिवाय वेरमणस्स समणोवास-

श्रमणो पासक श्रावक को जीव अजीव को जानना, पुण्य पाप को उपलब्ध करना, आश्रव संवर निर्ज्जरा क्रिया अधिकरण बंध इनके कार्य में कुशल होना, कदाचित् देवता दानवादि धर्म से चलावे तो चलना नहीं और सम्यक्त्व के पांच अतिचार पाताल में ले जाने वाले हैं उनको जाने परंतु आदरना नहीं, उन के नाम-१ श्री जिनेश्वर के वचन में शंका का करना अर्थात् यह जिन प्रणित कथनसत्य है या मिथ्या है ऐसा विकल्पकरे, २ कांक्षा-अन्य तीर्थिकपना आदरने की इच्छाकरे, ३ वितिगिछा-करनी के फलका संदेह लावे, तथा साधु की अस्नान वृत्ति की दुगंछा करे, ४ पाखंडियों के आडम्बर की परशंसा करे अन्य का मन उसतम की तरफ लगावे. और ५ पाखंडियों—मिथ्यात्वीयों या भ्रष्टाचारीयों का सदैव परिचय मित्रता करे ॥४८॥ तदनन्तर श्रावक को स्थूल प्रथम प्राणातिपात वेरमण व्रत के पांच अतिचार पातल में लेजानेवाले जानना. किन्तु आदरना नहीं, उनके नाम—१ बन्ध जीव (पशु मनुष्य) को मजबूत बंधन से

१. त्याग की वस्तु की—१ इच्छा करे वह अतिक्रम, २ लेने जावे वह व्यातिक्रम, ३ ग्रहण करे वह अतिचार,

तेणं पंच अइयारा पेयाला जाणियव्वा नसमायरियव्वा, तं जहा-बंधे, वहे, छविच्छेए अतिभारे, भत्तपाणवोच्छेते ॥ ४५ ॥ तदाणं तरंचणं थूलगमुसावाते वेरमणस्स पंच अईयारा जाणियव्वा नसमायरियव्वा तंजहा—सहस्सा भक्खणे; रहसाभक्खणे, सदारमंतभेए, मोसोवएसे, कूडलेहकरणे ॥ ४६ ॥ तदाणं तरंचणं थूलग अदिण्णादाण वेरमणस्स पंचअईयारा जाणियव्वा नसमायरियव्वा तंजहा-तेनाहडे,तक्करप्पओगे,विरुद्ध-

अर्थ

बंधना, २ मजबूत प्रहार से मारना, ३ अवयव-अंगोपांग का छेदन करना, ४ शक्ति उपरान्त वजन लादना, और ५ आहार, पानी का व्यच्छेद करना-भूखे-प्यासे रखना ॥४५॥ तदनन्तर दूसरे स्थूल मृषावाद वेरमण व्रत के पांच अतिचार जाने पर आदरे नहीं उनके नाम-१सहसत्कार-जानकर किसीपर आल चढाना दोपारोपन करना, २किसी की रहस्य-गुप्त वार्ता प्रगट करना,३ स्त्री के गुप्त भेद प्रगट करना, ४मिथ्या-झूठा उपदेश देना, तथा खोटी साक्षी भरना, और५खोटे लेख लिखना॥४६॥तदनन्तर तीसरे अदत्तादान व्रत के पांच अतिचार जाने परंतु आदरे नहीं, उन के नाम—१ चोर की चुराइ हुइ वस्तु लेना, २ चोरी का प्रयोग बताना, तथा चोर को सहायता करना, ३ राज्य विरुद्ध करे-राजा की आज्ञा [कानून] को उल्लंघना, ४ खोटा तोलना,खोटे मापना और५तत्प्रतिरूप अच्छी वस्तु में खराब वस्तु मिलाकर व्यवहार

रज्जातिकम्मे, कूडतुल्लकूडमाणे, तप्पाडिरूवगववहारे ॥ ४७ ॥ तदाणं तरंचणं सदार संतोसीए पंचअइयारा जाणियव्वा नसमायरियव्वा तंजहा-इत्तिरिय परिग्गहीयागमणे, अपरिगहियागमणे, अनंगकीडाकरणे, परविवाहकरणे, कामभोगातिव्वाभिलासे ॥ ४८ ॥ तयाणं तरंचणं इच्छापरिमाणस्स समणोवासएणं पंचअइयारा जाणियव्वा नसमारियव्वा तंजाह-खित्तवत्थु प्पमणातिक्कम्मे, हिरण्णसुवण्ण प्परमाणातिक्कमे, धणधन्न

व्यापार करना॥४७॥ तदनन्तर चौथा स्वदारा (स्वस्त्री) सन्तोषित व्रत के पांच अतिचार जाने परंतु आदरे नहीं, उन के नाम—१ इतर छोटी उमर की स्वस्त्री से गमन करे २ अपरणित [सगाइ हुइ] स्वस्त्री से गमन करे * ३ पर स्त्री से-या प्रत्याख्यान के दिन स्वस्त्री से योनि छोड कुचादि अनङ्ग के साथ क्रीडा करे, ४ अन्य के विवाह करावे, तथा अन्य की मांग से आप विवाह करे और ५ काम भोग की तिव्र अभिलाषा करे भोग में आशक्त बने अनियामित भोग भोगवे.॥४८॥ तदनन्तर पांचवा इच्छा परिमाण व्रत के पांच आतिचार जाने परंतु आदरे नहीं उनके नाम—१ खेत्र-खुली भूमि वत्थुढकी भूमिका जो प्रमाण किया हो उसे उल्लंघे, २ हिरण्य-चांदी, सुवर्ण-सोने का परिमाण उल्लंघे, ३ द्वीपद मनुष्य पक्षी, चतुष्पद-पशु का

---

* इन दोनों आतिचार का कितनेक ऐसा अर्थ करते हैं वेश्याआदि को कुछ स्वल्प काल के लिये द्रव्य दे कर अपनी स्त्री बनावे, २ कुमारिका विधवा से गमन करे, परन्तु यह तो अनाचार होते हैं, इस लिये यह स्वस्त्री ही मानना.

सूत्र

प्पमाणातिक्कमे, दुप्पयचउप्पय प्पमाणातिक्कमे, कुविय प्पमणातिकमे ॥ ४९ ॥ तदाणं तरंचणं दिसिव्वयस्स पंचअइयारा जाणियव्वा नसमायरियव्वा तंजाहः-उड्ढदिसि प्पमाणातिक्कमे, अहोदिसि प्पमणातिक्कमे, तिरियदिसि प्पमाणातिकमे, खेत्तवुड्ढीसइ, अंतरद्धा ॥ ५० ॥ तदाणं तरंचणं उवभोगे परिभोगे दुविहे पन्नत्ते तंजहा—भोयणाओय, कम्मओय ॥ तत्थणं भोयणाओ समणोवासतेणं पंचअइयारा जाणियव्वा नसमायरियव्वा

अर्थ

परिमाण उल्लंघे, ४ धन-नगदनाणा, धान्य-अनाज का परिमाण उल्लंघे और ५ कुप्य-घर के बिखेरे का प्रमाण किया हो उसे उल्लंघे ॥ ४९ ॥ तदनन्तर छठा दिशी व्रत के पांच अतिचार जाने परंतु आचरे नहीं, उन के नाम—१ ऊर्ध्व-ऊंची दिशा में गमन करने का परिमाण उल्लंघे, २ अधो-नीची दिशी में गमन करने का परिमाण उल्लंघे, ३ तिरछी दिशी में गमन करने का परिमाण उल्लंघे, ४ पूर्वादि दिशी का प्रमाण पश्चिमादि दिशा में मिलाकर क्षेत्र की वृद्धि करे, और ५ परिमाण को भूलकर आगे जावे ॥ ५० ॥ तदनन्तर सातवा उपभोग परिभोग व्रत के दो भेद उन के नाम-१ भोजन आश्रित और २ कर्म आश्रित. भोजन आश्रित के पांच अतिचार जाने परंतु आदरे नहीं उन के नाम—१ सचित्त वस्तु का आहार करे, २ सचित्त प्रतिबन्ध (सचित्त से लगी हुइ) अचित्त वस्तु का आहार करे, ३ अपक्व वस्तु का आहार

तंजहा-सचित्ताहारे, सचित्त पडिबद्धाहारे, अप्पोलित्तोसहिभक्खणया, दुप्पउलित्तो सहिभक्खणया, तुच्छोसहि भक्खणया ॥ कम्मओणं समणोवासएणं पण्णरस्स कम्मा दाणाति जाणियव्वाति नसमारियव्वाति तंजहा-इंगालकम्मे, वणकम्मे साडीकम्मे, भाडीकम्मे, फोडीकम्मे; दंतवणिज्जे, रसवणिज्जे, केसवणिज्जे, विसवणिज्जे, लक्खणिज्जे

करे, ४ दुपक्व-पककर विगडगइ-सडगइ वस्तु काआहारकरे, ५ तुच्छ-असार खाना थोडा डालना बहुत ऐसी वस्तु का आहार करे ॥ और कर्म-व्यापर से पन्द्रे प्रकार के कर्म आने के कारन रूप व्यापर जानना. परंतु आदरना नहीं उनके नाम-१ अग्निकर्म-अग्नि प्रयोगकर व्यापार कर-लोहकार सुवर्णकार कुंभ कारादिका या कोयले बेंचनेका व्यापारकरे २ वनकर्म-वन कटाकर-काष्टपत्र फुल फलादिका व्यापरकरे, ३ साडी कर्म गाडा गाडी आदि वाहन का व्यापर करे, ४ भाडी कर्म-गाडी बेल अश्वादि पशुओं को भाडे देने का व्यापर करे, ५ फोडी कर्म-खदान खोदाने का, दालादि दलाने का पिसाने का, धातुओं के आगरों का व्यापर करे, ६ दंत-वणिज्य दान्तो का हड्डीयों का नखका चमडे का व्यापरकरे, ७ रस वणिज्य-घृत तेल दूध दही गुडसक्कर प्रमुख परवाही वस्तुका व्यापर करे, ८ विष वाणिज्य-अफीम वच्छनागादि जहरी वस्तु काया व शस्त्र का व्यापर करे, ९ केस वणिज्य-चमरी गायके वालों (चमरों) का तथा मनुष्य पशु को बेंचने का व्यापरकरे, १० लक्ष वणिज्य-लाख, चपडी, धावडी, गुली, हरताल, मणसिल, वगैर का व्यापरकरे, ११

जंतपीलणकम्मे, निल्लंछणकम्मे, दवग्गिदावणया, सरदह तडाग परिसोसणिया, असईजण पोसणया ॥ ५१ ॥ तदाणं तरंचणं अणट्ठदण्ड वेरमणस्स समणोवासएणं पंचअइयारा जाणियव्वा नसमायरियव्वा तंजहा-कंदप्पे, कुक्कुए, मोहरिए, संजुत्ताहिकरणे, उवभोग परिभोगातिरत्ते ॥ ५२ ॥ तदाणं तरंचणं सामाइयस्स समणोवासएणं पंचअइयारा जाणियव्वा नसमायरियव्वा तंजहा-मण दुप्पणिहाणे, वय

यंत्र पीलन कर्म-घट्टी ऊखल चरक्खे कोल्हु धानी मील गिरनी आदिका व्यापारकरे, १२ निलंछन कर्म बेल अश्वादि का पुरुष चिन्ह का छेदन—मर्दन करे, अङ्गो पाङ्ग के छेदने का व्यापार करे, १३ वन में खेतमें अग्नि लगाने का कर्म करे १४ तलाव कूप बावडी आदि सरोवर के पानी उलीचने का व्यापर करे, और १५ असतिजन-स्त्रीयों का पोषन कर उनके पास वेश्या जैसे कर्म करा उनकी कमाइ का द्रव्य आप ग्रहण करे, या कुत्ते बिल्ली सिकारी बना उनका व्यापार करे, ॥ ५१ ॥ तदनन्तर आठवा अनर्थ दंड वेरमान व्रतके पाच अतिचार जाने परंतु आदरे नहीं उन के नाम-१ कंदर्प-कामराग जागृत होवे ऐसी कथा करे, २ भांड जैसे अंग की कुचेष्टा (उपहांस्य) करे, ३ मुख अरी-वैरी जैसे (वर्षक) वचन बोले, ४ अधिकरण-हथीयार को संयुक्त करे, संयोग मिलावे, संग्रह करे और ५ उपभोग परिभोग में अतिरक्त बने ॥ ५२ ॥ तदनन्तर नवये सामायिक व्रत के पांच अतिचार जाने परंतु आदरे नहीं, उनके नाम-१ मन से

दुप्पणिहाणे, काय दुप्पणिहाणे, सामाइयस्स सइ अकरणयथा, सामाइयस्स अणवट्ठियस्स करणया ॥ ५३ ॥ तदाणं तरंचणं दिसावगासियस्स समणोवासएणं पंचअइयारा जाणियव्वा नसमायरियव्वा तंजहा-आणवणप्पओगे, पेसवणप्पओगे, सद्दाणूवाए, रूवाणूवाए, बहिया पुग्गले पक्खेवे ॥ ५४ ॥ तदाणं तरंचणं पोसहोववासस्स समणोवासएणं पंचअइयारा जाणियव्वा नसमायरियव्वा तंजहा-अप्पडिलेहिए दुप्पडिलेहिय सिज्जासंथारे, अप्पडिलेहिए दुप्पडिलेहिय उच्चारपासवणभूमी, अप्पमज्जिय दुप्पमज्जिय सिज्जासंथारे, अप्पमज्जिय दुप्पमज्जिय उच्चार पासवणभूमी, पोसहोव-

से खराब विचार करे, २ वचन से खराब उच्चार करे, ३ काय अयत्ना से प्रवर्तावे, ४ सामायिक काल पूर्ण हुवे पहिले पारे, और ५ सामयिक किये बाद उसकी शुद्धी भूलजावे ॥ ५३ ॥ तदनन्तर दशवा दिशावकाशीक व्रत के पांच अतिचार श्रमणो पासक जाने परंतु आदर नहीं, उनके नाम-१ मर्यादा की हुई भूमीका के बाहिर की वस्तु मंगावे, २ मर्यादा के बाहिर वस्तु भेजावे, ३ शब्दनुपात करे, ४ रूपानुपात करे, और ५ मर्यादके बाहिर कंकरादि पुद्गलानुपात करे, ॥ ५४ ॥ तदनन्तर इग्यारवा पौषध व्रतके पांच अतिचार जाने परंतु आदरे नहीं उनके नाम-पौषध करने का मकान व बिछोना-की प्रतिलेखना नहीं करे, व खराबतरे करे, २ पौषध का मकान व बिछोना की प्रमार्जना नहीं करे. व खराबतरेकरे, ३ लघुनीत व वडीनीत की भूमी

वासरस सम्मं अणणूपालणया ॥ ५५ ॥ तदाणं तरंचणं अतिहि समविभागस्स समणोवासएणं पंचअइयारा जाणियव्वा नसम्मारियव्वा तंजहा-सचित्तनिक्खेवणया, सचित्तपेहणया, कालातिकम्मे, परउवदेसं, मच्छरिया ॥ ५६ ॥ तदाणं तरंचणं अपाच्छिम मारणंतिय संलेहणा झूसणाराहणाए पंच अइयारा जाणियव्वा नसमायरियव्वा तंजहा-इहलोगे संसप्पओगे, परलोगे संसप्पओगे, जीविया संसप्पओगे,

अर्थ

की प्रतिलेखना नहीं करे, व खराबतरेकरे, ४ बडीनीत लघुनीत की भूमी का प्रमार्जे नहीं व खराबतरे प्रमार्जे. और ५पौषध उपवास का यथाविधि पालन नहीं करे ॥५५॥ तदनन्तर बारवा अतिथी-जिन के आने की तिथी का नियम नहीं ऐसे साधुओं को देने के लिये आहार आदि का संविभाग करे, जिस के पांच अतिचार जाने परंतु आदरेने नहीं, उन के नाम-साधु को देने योग्य फ्रासुकवस्तु-१. सचित के ऊपररखे, २ सचित्त के नीचेरखे, ३ गोचरी का काल उलघे विनंतिकरे, ४ आप देने योग्य हो परके पास दिलावें, और ५ अन्यदातरों से मात्सर्य भाव-ईर्षा करे व दानदेते कृपणताकरे. ॥५६॥ तदनन्तर अपश्चिम अन्तिम मरणांतिक सलेपना, पापकी झोंसना धर्म की आराधना के पांच अतिचार, जानना परंतु आदरना नहीं. उन के नाम-१ इस लोक के सुख की इच्छा करे, २ परलोक के सुख की इच्छा करे, ३ ज्यादा जीते रहने की इच्छा करे, ४ जल्दी मरने की इच्छा करे, और ५ काम भोग-पांचों इन्द्रियों के सुख

मरणासंसप्पओगे, कामभोगासंसप्पओगे. ॥ ५७ ॥ तएणंसे आणंदेगाहावइ समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वईयं सत्तासिक्खावइयं दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-णो खलु मे भंते ! कप्पइ अज्जप्पभइओ अणउत्थिएवा अणउत्थिय देवयाणिवा अणउत्थिय परिग्गहियाणिवाइं चेइयाति १ वंदित्तएवा नमंसित्तएवा पुव्विअणालवतेणं आलवित्तएवा संलवित्तएवा, तेसिं असणंवा पाणंवा खाइमंवा साइमंवा दाउवा अणुप्प-

मासि की इच्छा करे ॥ ५७ ॥ (इस प्रकार व्रतों को शुद्ध रखने भगवंतने आणंद को सम्यक्त्व मूल बारह व्रत अन्तिम संलेपना सहित ८९ अतिचारों का स्वरूप दर्शाया) तब आणंद नामक गाथापतिने श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी के पास पांच अनुव्रत सात शिक्षाव्रत रूप बारे प्रकार का श्रावक का धर्म अंगीकार किया. श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार किया और यों कहने लगा. अहो भगवन् ! मुझे आज पीछे अन्य तीर्थिकों को अथवा अन्य तीर्थिक के धर्मदेव शाक्यादि साधुओं, अथवा अन्य तीर्थिकने ग्रहण किये जैन के चैत्य-साधु भृष्टचारी को वंदना नमस्कार करना उन के बोले पहिले उन से बोलना वारम्बार बोलना, उन को अशन पान खादिम स्वादिम चार प्रकार का आहार

१ बंगाल देश के काल कत्ते की तरफ से प्राप्त हुइ जूनीप्रत में ऐसा ही पाठ है. किन्तु अधुनिक प्रतों में बहुत स्थान " अरिहंत चेइयाइ ,, ऐसा पाठ देखाता है वह प्रक्षित संभवता है.

सूत्र

दाऊवा, नन्नत्थ-रायाभिओगेणं, गणाभिओगेणं, बलाभिओगेणं, देवाभिओगेणं, गुरु-निग्गहेणं, वित्तीकंतारेणं ॥ कप्पतिमे समणे निग्गथं फासूएसणिज्जेणं असणं पाणं खाइमं साइमं वत्थ पडिग्गह कंबल पादपुंच्छणेणं पीढ फलग सिज्जा संथारएणं ओसह भेसज्जेणं पडिलाभेमाणस्स विहरित्तए त्तिकट्टु ॥५८॥ इमे एतारूवं अभिग्गहं गिण्णति२त्ता पसिणाइं पुच्छति२त्ता अट्ठाइ मादियति२त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं वंदति नमंसंति वंदित्ता नमंसित्ता समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतियातो दूईपलासाओ चेइयातो पडिणिक्खमइ २त्ता जेणेव वाणियागाम

अर्थ

[धर्मार्थ] देना, व (धर्म होगा ऐसा उपदेश कर) दिलाना, नहीं कल्पे. जिस में १ राजा के अग्रह कर, २ जाति के अग्रह कर, ३ बलवन्त के अग्रह करे, ४ देवता के कारण कर, ५ मातपितादि जेष्ठ जानों के निग्रहकर, और ६ कन्तार अटवी में पडे हुवे या दुर्भिक्षादि विपाति में पडे हुवे को देनेका आगार है. और अहो भगवन् ! मुझे श्रमण-तपस्वी-निर्ग्रन्थ को फासुक एषनिक-शुद्ध अशन पान खादिम स्वादिम वस्त्र पात्र कम्बल रजोहरण, पाट, पाटला, स्थनक, बिछोना औषध-सूंठ लवंगादि भेषध—तेल चूरणादि प्रतिलाभता—देता हुवा विचरना कल्पता है.॥५८॥ यों इतने प्रकारके अभिग्रह—नियम धारन किये, इसमें या अन्य किसी प्रकार की शंका थी उस के प्रश्न पूछे, पूछकर अर्थ धारन किये. अर्थ धारन कर श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी को तीन वक्त हाथ जोड प्रदक्षिणावर्त फिराकर वंदना नमस्कार किया, वंदना

णगरे जेणेव सएगिहे, तेणेव उवागच्छइ २त्ता सिवाणंदा भारियं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिए! मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं णिसंते, सेवियधम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुतिते, तंगच्छहणं तुमंदेवाणुप्पिया! समणं भगवं महावीरं वंदइ जाव पज्जुवासाइ समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतीतं पंचाणुव्रतियं सत्त-सिक्खाव्रतियं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जाहि ॥ ५९ ॥ तएणं सासिवाणंदा भारिया अणंदे समणोवासएणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ २

नमस्कारकर श्रमण भगवन्त श्री महावीर स्वामी के पास से द्युतिपलास चैत्य से निकला, निकलकर जहां वाणिज्यग्राम नगर जहां स्वयं का घर था तहां आया, आकर शिवान्दा भार्या से यों कहने लगा—यों निश्चय हे देवानुप्रिय! मैंने श्रमण भगवन्त श्री महावीर स्वामी के पास धर्म श्रवन किया, वह धर्म इच्छा विशेपच्छा सार भूत जाना, इसलिये हे देवानुप्रिय! तुम भी जावो श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार करो यावत् पर्युपासना—सेवा करो, श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी पास पांच अनुव्रत सात शिक्षाव्रत बारह प्रकार का गृहस्थ का धर्म अङ्गीकार करो ॥५९॥ तब वह शिवानन्दा भार्या आनन्द श्रमणो पासक के उक्त वचन श्रवणकर हृष्ट तुष्ट हुइ कुटुम्बिक पुरुष को बोलाया, बोलाकर यों कहने लगी-शीघता से शीघ्रगति वाला अश्वोंका धर्मरथ तैयार कर लावो, वह राथ तैयार कर लाया यावत् भगवन्त के

त्ता एवं वयासी-खिप्पामेव लहुकरण जाव पज्जुवासति ॥ ६० ॥ तएणं समणं भगवं महावीरे सिवानंदाते तीसेयमहाति धम्मंकहेति ॥६१॥ ततेणं सासिवाणंदा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मंसोच्चा हट्ठ जाव गिहिधम्म पडिवज्जाति २ त्ता ॥ तमेव धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहति २ त्ता जामेवदिसं पाउब्भूया तामेवदिसं पडिगया ॥ ६२ ॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे–समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-पभूणं भंते ! आणंदे समणोवासए देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वत्तिते ? नोतिणट्ठे समट्ठे ॥ गोयमा ! आणंदेणं समणोवासते बहुइं

अर्थ

समीप आई यथाविधी वंदना कर सेवा भक्ति करने लगी ॥ ६० ॥ तब श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी उस शिवानन्दा को उस महा परिषद् को धर्म कथा सुनाई ॥ ६१ ॥ तब वह श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी के पास धर्म श्रवण कर शिवानन्दा हृष्ट तुष्ट हुई यावत् बारेव्रत रूप ग्रहस्थ का धर्म अङ्गीकार किया, उस ही धर्म रथ पर स्वार हो जिस दिशा से आई थी उस दिशा पीछी (अपने घर) गई ॥६२॥ भगवंत, भगवन् गौतम ! श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार किया, और यों कहने लगे–अहो भगवन् ! आनन्द श्रावक देवानुप्रिय के पास मुण्डित हो यावत् दीक्षा धारन करने समर्थ है ? भगवन्तने कहा, यह योग्य नहीं है अर्थात् दीक्षा लेने समर्थ नहीं है, परंतु हे गौतम ! आनन्द श्रावक

वासाइं समणोवासग परियागं पाउणिंति २ त्ता जाव सोहम्मेकप्पे अरुणभ विमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति ॥ तत्थणं अत्थेगतियाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ट्ठिती पण्णत्ता, तत्थणं आणंदस्सवि चत्तारिपलिओवमाइं ट्ठिती पण्णत्ता ॥ ६३ ॥ तत्तेणं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइ बहिया जाव विहरइ ॥ ६४ ॥ तत्तेणं से आणंदे समणोवासतेजाते, अभिगय जीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरति ॥६५॥ तत्तेणं सा सिवाणंदा भारिया समणो वासियाजाया जाव पडिलाभेमाणिविहरति॥६६॥ तत्तेणं तस्स आणंदस्स समणोवासगस्स उच्चएवतेहिं सीलव्वयएस्स गुणवेरमणस्स

बहुत वर्षतक श्रमणोपासक की पर्याय का पालन कर यावत् सौधर्म कल्प के अरुणाभविमान में देवतापने उत्पन्न होगा, तहां कितनेक देवताओं की चार पल्योपम की स्थिति कही है, तहां आनन्द की भी चार पल्योपम की स्थिति होगी ॥ ६३ ॥ तब श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी यावत् बाहिर जनपद देश में विचरने लगे ॥ ६४ ॥ तब वह आनन्द श्रावक जीवाजीव का जान हो यावत् श्रमण निर्ग्रन्थ को चउदह प्रकार का दान प्रतिलाभता हुवा विचरने लगा ॥ ६५ ॥ तब वह शिवानन्द आनन्द की भार्या श्रमणोपासिका हुई यावत् प्रतिलाभती हुइ विचरने लगी ॥ ६६ ॥ तब उस आणंद श्रमणोपासक को ऊंचवृत्ति-वृद्धमान परिणाम से शीलव्रत गुणव्रत में प्रवृत्त न करते पोषध उपवास कर अपनी आत्मा को भावते विचरते

पच्चक्खाण पोसहोववासेहिं अप्पाणंभावेमाणस्स चौदस संवच्छराति वीतिक्कंताति पणरसमस्स संवच्छरस्स अंतरावट्टमाणस्स अन्नयाकयाइ पुव्वरत्तावरताकाल समयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेएयारूवे अज्झत्थीए चिंतीए मणोगएसंकप्पे समुप्पजित्था-एवं खलु अहं वाणियगामेणयरे वहुणं राइसरा जाव सयरस कुडुंवस्स जाव आधारे, तं एतेणं वक्खवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं पण्णात्तिं उवसंपजित्ताणं विहरतत्ते, तंसेय खलु ममं कल्लं जाव जलंते विपुलं असणं

अर्थ

हुवे चौदह वर्ष व्यतिक्रान्त हुवे, पन्नरवे संवत्सर-[वर्ष] के अन्तर में वर्तते अन्यदा किसी वक्त आधी रात्रि व्यतीत हुवे धर्म जागरणा जागते हुवे इस प्रकार अध्यवसाय—चिन्तवना समुत्पन्न हुइ-यों निश्चय में वाणिज्य ग्राम नगर में बहु ईश्वरादि या स्वयं के कुटुम्ब में यावत् आधार भूत हूं. इसलिये इन के कार्य में लगकर मैं श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी के पास ग्रहण किया हुवा धर्म को अंगीकार कर शुद्ध पालने समर्थ नहीं हूं. इसलिये मुझे प्रातःकाल होते यावत् ज्वलायमान सूर्योदय होते विस्तीर्ण अशनादि चारों प्रकार का आहार निष्पन्न कराके यावत् भगवती सूत्र में कहे पूर्ण शेठ की तरह मित्रज्ञाती जनों को जीमा के सत्कार सन्मान करके बडे पुत्र को कुडुम्ब का भार अर्पन करके

पाणं राइयं खाइमं जहा पूरणे जाव जेट्ठपुत्तं कुटुबट्ठावत्ता, तामत्तणाइ जेट्ठपुत्तं आपु-
च्छित्ता कोल्लागसन्निवेसे नायकुलंसि पोसहसालं पडिलेहित्ता समणं भगवं महावीरस्स
अंतियं धम्मं पण्णंति उवसंपजित्ताणं विहरित्तए, एवं संपेहेति २ ता कल्लंविउलं तहेव ज़िमिय
भुत्तरागए, तंमित्त जाव विपुलेणं पुप्फवत्थ जाव सक्कारेति समाणेति २ त्ता तस्सेव मित्तणाति
पुरओ जेट्ठपुत्तं सद्दावेइ २ त्ता, एवं वयासी एवं खलु ते पुत्ता ! अहं वाणियगामे बहुणं
राइसरं जहा चिंतित्तं जाव विहरित्तए तं सेयं खलु मयइदाणिं तुमं सयस्स कुटुंबस्स
आलबंणठवेत्ता जाव विहारत्तए ॥६७॥ तत्तेणं जेट्ठे पुत्ते आणंदस्स समणोवासयस्स

उन मित्र ज्ञातीयों को पूछकर वडे पुत्र को पूछकर कोल्लाक सन्नीवेश (पुरे) की पौपधशाला में श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी का कहाहुवा धर्म अंगीकार करके विचरना श्रेयहै. ऐसा विचारकिया, विचार करके प्रातः काल होते ही चारों प्रकारका आहार निष्पन्न कराके मित्रादि को बोलाकर, उन मित्र ज्ञाती आदि के लोगों को जीमारकर विस्तीर्ण फूल, माला, गंध अलंकारसे सत्कार सन्मान कर, उनही मित्र ज्ञातीके सन्मुख वडे पुत्र बोलाया बोलाकर यों कहने लगे-यों निश्चय हेपुत्र! मैं निश्चयसे इसवाणिकग्राम नगरमें बहुत राजा इश्वरादिको आधार भूतहूं इत्यादि सब कहा. अब तुम को कुटुम्बका आधार स्थापनकर यावत् पोषध शाला में धर्मध्यान करता रहना मुझे श्रेष्ट है॥६७॥तब जेष्ट पुत्र आनन्द श्रमणोपासकका उक्त कथन तहिती-हितकारक जानक

पडिलेहेति२त्ता दब्भसंथारयं संथरइ २ त्ता दब्भसंथारयं दुरुहति २ त्ता पोसहसालाए पोसहिए दब्भसंथारोवगते समणस्स भगवतो अंतिए धम्मपण्णत्तियं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥७०॥ तएणं से आणंदे समणोवासए पढ्मं उवासगपडिमाणं उवसंपज्जित्ताणं

दर्भ-घास के बिछोने पर बैठे पोषध शालामें पोषध सहित दर्भ-घास के संथारेपर रहे हुवे श्रमण भगवंत महावीर स्वामी के पास अङ्गीकार किया हुवा धर्म का विशेष शुद्ध विधीसे पालन करते विचरने लगे ॥ ७० ॥ तब आनन्द श्रमणोपासक प्रथमादि इग्यरह श्रावक की प्रतिमा अङ्गीकार कर विचरने लगे-उन के नाम-१, सम्यक्त्व प्रतिमा-एक महिने तक छ छंडी पांच अतिचार रहित सम्यक्त्व निर्मल पाले, २ व्रत प्रतिम दो महीने तक सम्यक्त्व युक्त अतिचार रहित व्रत निर्मल पाले, ३ सामायिक प्रतिमा—तीन महीने तक सम्यक्त्व व्रत युक्त ३२ दोष रहित त्रिकाल की सामायिक अवश्य करे, ४ पौषध प्रतिमा-चार महीने तक उक्त गुणयुक्त १८ दोष रहित एक महीने में छ (दो अष्टमी, चार चतुदर्शी अमावस्य चतुदर्शी पूर्णिमा) का व उदिष्ट तिथीयोंका पोषध जरूरकरे, ५ नियम प्रतिमा पांच महिनेतक उक्तगुणयुक्त-१ दिनका ब्रह्मचर्य पाले, २ स्नानकरे नहीं ३ पगरखी पहने नहीं, ४ धोतीकी लांग खुल्लीरखे, और ५ पौषध में चार प्रहर रात्रिका कायुत्सर्गकरे, यह पांच नियम धारे, ६ ब्रह्मचर्य प्रतिमा—उक्त गुणयुक्त छ महीने तक सर्वथा ब्रह्मचर्य पाले, ७ सचित्त त्याग प्रतिम—युक्त गुणयुक्त सात महीने तक सचित वस्तु का आहार करे नहीं, ८ उदिष्ट

विहरति, पढमं उवासग पडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं, सम्मंकाएणं फासेति पालेति, सोहेति, तीरेति किट्टेति आराहेति ॥ तत्तेणं से आणंदे समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं एवं, तच्चं, चउत्थं, पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एक्कारसमं, जाव आराहेति ॥ ७१ ॥ ततेणं से आणंदे समणोवासए इमेणं एतारूवेणं

प्रतिमा-उक्त गुणयुक्त आठ महिनेतक आपस्वयं आरंभकरे नहीं, ९ पेसारंभ—उक्त गुणयुक्त नव महीने तक अन्य के पास आरंभ करावे नहीं, १० अनारंभ—उक्त गुणयुक्त दश महीने तक अपने वास्ते आरंभ किया हो उस वस्तु को ग्रहण करे नहीं और ११ समण भूत प्रतिमा—उक्त गुणयुक्त इग्यार महीने तक साधु जैसा भेष धारन करे, पांचसमिती युक्त विचरे, सिरमुंडन करावे, शिखारक्खे, स्वयं कुल में गौचरीकरे, कोइ पूछेतो कहेकि मैं प्रतिमा धारक श्रमणोपासकहूं * यों अनुयोगद्वार सूत्रानुसार इग्यारेही प्रतिमा प्रतिज्ञा सूत्रोक्त विधी प्रमाने, श्रावकके कल्प प्रमाने, जैन मार्गकी रीति प्रमाने, यथातथ्य सम्यक् प्रकारपाल स्पर्शा शुद्ध पार पहोंचा कीर्ति युक्त भगवंत की आज्ञाका आराधन किया + ॥ ७१ ॥ तब आणंद श्रमणोपासक

---

* पहिली प्रतिमा में में एक महिने तक एकान्तर उपवास दूसरी, में दो महिने तक बेले २ पारना यावत् इग्यारवी प्रतिमा में इग्यारे महीने तक इग्यारे २ उपवास के पारने करे ऐसा वृद्धकथन हैं.

+ प्रथम आकाश से ग्रहण किये हुवे पानी सिवाय अन्य पानी पीने का नियम किया था उस नियम का प्रतिमा में भी पालन किया, जो वैसा पानी उष्ण किया व धोवन किया मिलता उसे ही ग्रहण करते, अन्य नहीं.

सूत्र

जलंते अपच्छिम मारणंतिय संलेहणा झूसणा झूसितस्स भत्तपाणं पडियाक्खितए काल अणवकंक्खमाणस्स विहरित्तए, एवं संपेहेहि, कल्लं पाउ जाव अप्पच्छिम जाव कालं अणव कंक्खमाणे विहरंति॥७३॥ तएणं तस्स आणंदस्स समणोवासगस्स अन्नयाकयाइ सुभेणं अज्झवसाणेणं, सुभेणं परिणामेणं, लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं, तदावरणिज्जाणं कम्माणं खउवसमेणं ओहिणाणे समुप्पन्ने-पुरच्छिमेणं लवणसमुद्दे पंचजोयण सयाइं खेत्तं जाणति पासति, एवं दक्खिणेणं पच्चत्थिमेणं, उत्तरेणं जाव चुल्ल हिमवंतवासधरपव्वयं जाणति पासति, उड्ढं जाव सोहम्मेकप्पे जाणति पासति, अहे जाव इमीसे रयणप्पभाए

अर्थ

सूर्योदय होते अपाश्चिम मारणान्तिक सलेषणा में पाप की झोंसना धर्म की आराधना कर भक्त प्रत्याख्यान कर काल की वांच्छा नहीं करता हुवा विचरना श्रेय है. यों विचार कर प्रातःकाल हुवे अपाश्चिम मारणांतिक सलेषना कर यावत् काल की वांच्छा नहीं करता हुवा विचरने लगा ॥ ७३ ॥ तब अन्यदा किसी वक्त उस आणंद श्रावक को शुभअध्यवसाय कर शुभपरिणाम कर लेश्याकीविशुद्धि कर अवधि ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम होने से अवधिज्ञान की प्राप्ति हुइ, जिस से पूर्व में पश्चिम में और दक्षिण में तो लवण समुद्र में ५०० योजनतक क्षेत्र. उत्तर में चूल्ल हिमवन्त पर्वत तक क्षेत्र, तैसे ही ऊपर सौधर्म देवलोक और नीचे पहिली नरक का लोलुचुत नरकावास में चौरासी हजार वर्ष की स्थिति तक क्षेत्र

पुढवीए लोलुयच्चुते नरयंवासे चउरासीतं वाससहस्स ट्ठितियं जाणति पासति॥ ७४॥
तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसरिते, परिसा निग्गया, जाव
पडिगते॥ ७५॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी
इंदभूई नामं अणगारे, गोयम गुत्तेणं, सत्तूस्सेहे, समचउरंस संट्ठाण संट्ठीए, वज्जरि-
सहनारायसंघयणे, कणगपुलगनिघसपम्हगोरे, उग्गतवे, दित्ततवे, तत्ततवे, घोरतवे,
महातवे, उराले, घोरगुणे, घोरतवसी, घोरबंभचेरवासी, उच्छुढसरीर, संकित्त

अवधिज्ञान कर जाना अवधिदर्शन कर देखा ॥ ७४ ॥ उस काल उस समय मे श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी पधारे, परिषदा वंदने गई, धर्मकथा श्रवण कर पीछी गई ॥ ७५ ॥ उस काल उस समय में श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी के बडे शिष्य इन्द्र भूती नामक अनगार, गौतम गौत्र के धारक, सात हाथ के ऊंचे, समचतुरस्र संस्थान से संस्थित, वज्र वृषभ नाराच संघयनी, सुवर्ण के अन्दर के विभाग जैसे पद्म गौर वर्ण शरीर के धारक, उग्र तप के करनेवाले, दिप्त तप के करनेवाले, तप्त तप के करनेवाले, महा तपस्वी, उदार तपस्वी, घोर-बहुत क्षमादि गुन के धारक, कायर को कम्पनी उत्पन्न करे ऐसे तप के करनेवाले, शरीर की ममत्व रहित, विस्तीर्ण तेजोलेश्या को संक्षिप्त कर रखनेवाले, सदैव निरंतर छठ २

सूत्र

विउल तेऊलेसे, छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ ७६ ॥ तएणं से भगवं गोयमे छट्ठक्खमण पारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ, विईयाए पोरसीए ज्झाणंज्झियाइ, तईयाए पोरिसीए अतुरियं अचवल मसंभंते मुहपत्तियं पडिलेहेइ, २त्ता भायण वत्थाइं पडिलेहेइ, भायणं पमज्जइ २ त्ता, भायणाइं उग्गाहेइ २त्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २त्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामिणं भंते ! तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे छट्ठ खमणस्स पारणगंसि वाणियगामे नयरे उच्चनीय

अर्थ

(बेलेर) पारने करनेवाले, संयम तप कर अपनी आत्मा को भावते हुवे विचरते थे ॥ ७६ ॥ तब भगवंत गौतम ! बेले के पारने के दिन प्रथम प्रहर में स्वाध्याय किया, दूसरे में ध्यान किया, तीसरे प्रहर में आतुरता रहित, चपलता रहित, घबरावट रहित, मुहपति की, पडिलेहणा की, पात्र की प्रतिलेहणा की, पात्रे को गोछे से पूंजे, पात्रे ग्रहण किये, ग्रहण कर जहां श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी थे तहां आये, श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर यों कहने लगे—अहो भगवन् ! जो आपकी आज्ञा हो तो छठ [बेले] के पारणे के लिये वाणिजय ग्राम नगर में ऊंच नीच मध्यम कुल के घरों में

मज्झिम इं कुलाई घर समुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए ? अहासुहे देवाणुप्पिया ! मापडिबंधं करेह ॥७७॥ तएणं भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुणाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ दुइपलासाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता अतुरिय मचवल मसभंते जुगंतर परिलोयणाए दिट्ठीए पुरतो इरियं सोहमाणे जेणेव वाणियगामे णयरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता वाणियगामे णयरे उच्च नीय मज्झिमाइं कुलाइं घर समुदाणियस्स भिक्खायरियाए अडई ॥ ७८ ॥ तएणं से भगवं गोयमे वाणियगाम नयरं जह पण्णतीए तहा भिक्खायरियाए जाव अडमाणे अहपज्जतं

सामुदानिक-बहुत घरों की भिक्षाचरी के लिये जाना चहाता हूं ? भगवंतने कहा—अहो देवानुप्रि ! यथा-सुख करो प्रतिबन्ध मत करो ॥७७॥ तब भगवंत गौतम श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की आज्ञा प्राप्त होते श्रमण भगवंत महावीर स्वामी के पास से उस द्युतिपलास चैत्य से निकल कर, अत्वरित अचपल घबरावट रहित चार हाथ प्रमाणे दृष्टी से आगे की जमनी देखते हुवे, ईर्या पंथ सोधते हुवे जहां वाणिज्य ग्राम नगर था तहां आये, वाणिज्यग्राम नगरके ऊंचनीच मध्यमकुलों में भिक्षा केलिये फिरनेलगे ॥ ७८ ॥ तब भगवंत गोतम भगवती में कहे मुजब रीत्यानुसार भिक्षा ग्रहण की यथा प्रज्ञप्ति-यथारुचि आहारपानी ग्रहण किया, ग्रहण, करके वाणिज्यग्राम के मध्य२ में हो निकल, कोल्लाक सन्नीवेस के पाससे जातेहुवे बहुतलोगोंका शब्द

भत्तपाणसम्मं पडिगाहेति २त्ता वाणियगामाओ पडिणिगच्छइ २त्ता कोल्लागसन्निवेसस्स अदूर सामंतेणं वीतिवयमाणे बहुजण सद्दणिसामेत्ति बहुजणो अन्नमन्नस्स एवं आइक्खति ४ एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी आणंदे णामं समणोवासए पोसह सालाए अपच्छिम जाव अणवकंखमाणे विहरति॥७९॥तएणं तस्स गोयमस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-तं गच्छामिणं आणंदं समणोवासयं पासामि, एवं संपेह २ त्ता जेणेव कोल्लाए संन्निवेसे जेणेव आणंदे समणोवासए जेणेव पोसह साला तेणेव उवागच्छइ ॥ ८० ॥ तत्तेणं से आणंदे समणोवासए भगवं गोयमं एजमाणं पासति २ त्ता हट्ठ जाव हियते भगवं गोयमं वंदति नमंसति एवं वयासी-एवं खलु

सुननेमें आया, बहुतलोगों परस्पर इसप्रकार वार्तालाप कररहेथे-योंनिश्चय अहो देवानुप्रिय! श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी के शिष्य आणंद नामक श्रमणोपासक पौषध शाला में अपश्चिम मारणांतिक संलेपना करके कालकी वांच्छा नहीं करते हुये विचररहे हैं.॥७९॥ उन गौतम स्वामीने बहुत लोगोंके पास उक्त अर्थ श्रवण किया, इस प्रकार का अध्यवसाय यावत् समुत्पन्न हुवा जावूं मैं आणंद श्रमणोपासक को देखूं, ऐसा विचार करके जहां कोल्लाक सन्निवेश जहां पौषध शाला तहां आये ॥ ८० ॥ तब वह आणंद श्रमणोपासक

ओहिणाणे समुप्पजइ ? हंता अत्थि ॥८३॥ जइणं भंते! गिहिणो जाव समुप्पज्जति, एवं खलु भंते ! ममंवि गिहिणो गिहिमज्झे वसंतस्स ओहिणाणे समुप्पण्णे, पुरत्थिमेणं लवण समुद्दे पंच जोयण सयाइं, जाव लोलुए नरयं जाणामि पासामि ॥ ८४ ॥ तएणं से गोयमे आणंदे समणो वासएणं एवं वयासी-अत्थिणं आणंदा! गिहिणो जाव समुप्पजति, णो चेवणे एवं महालए! तणं तुम्हं आणंदा ! एयस्स ट्ठाणस्स आलोएहि जाव तवोकम्मं पडिवज्जाहि ॥ ८५ ॥ तएणं से आणंदे भगवं गोयमं एवं वयासी

होता है॥८३॥ यदि अहो भगवन्! गृहस्थावास में रहते हुवे गृहस्थको अवधिज्ञान होता है तो अहो भगवन् ! मुझे भी गृहस्थावास में रहते हुवे को अवधि ज्ञान समुत्पन्न हुवा है, जिस से पूर्व दक्षिण और पश्चिम में तो लवण समुद्र में पांच सो २ योजन तक जानता देखता हूं, उत्तर में चूल्ल हेमवन्त पर्वत तक उपर प्रथम देवलोक और नीचे रत्न प्रभा नरक का लोलुचुत नरकावास में चौरासी हजार वर्ष की स्थितितक क्षेत्र जानता देखता हूं ॥८४॥ तब वे गौतम स्वामी आणंद श्रमणोपासक से ऐसा बोले-हे आणंद ! गृहस्थावास में रहते हुवे को अवधि ज्ञान तो होता है परंतु इतना बडा, इतना क्षेत्र देखे जितना नहीं होता है, इसलिये तुम यह मिथ्यालाप क्रिया इस की आलोचना निन्दना कर यावत् प्रायश्चित ग्रहण करो ॥ ८५ ॥ तब

अत्थिणं भंते ! जिणवयणं संताणं तच्चाणं तहियाणं सब्भूतभावाणं आलोइज्जंति जाव पडिवज्जिजंति ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥८६॥ जइणं भंते! जिणवयणे संताणं जाव भावाणं णो आलोईज्जंति जाव तवकम्मनो पडिवज्जिज्जंति तएणं भंते!तुब्भे चेव एयस्स ट्ठाणस्स आलोएह जाव पायच्छित्तं पडिवज्जह ॥ ८७ ॥ तएणं से भगवं गोयमे आणंदेणं एवं वुत्तसमाणे संकिए कंखिए वितिगिच्छा समावण्णे आणंदस्स अंतियाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता जेणेव दुतिपालासे चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव

आणंद भगवन्त गौतम स्वामी से इस प्रकार कहने लगा—अहो भगवन् ! जिन वचन सच्चे सही यथा तथ्य सद्भूत भाव जैसा देखा वैसा कहा उसे आलोचन यावत् प्रायःश्चित कुछ है क्या ? भगवन्त गौतम स्वामी बोले—यह अर्थ योग्य नहीं. अर्थात् सच्चे को प्रायःश्चित नहीं है ॥८६॥ यदि अहो भगवन् ! जिन वचन सत्य सही यावत् सद्भाव हैं कहनेवाले को आलोचना यावत् प्रायःश्चित नहीं है, तब तो अहो भगवन् ! आपही इस स्थानक की आलोचना करें यावत् प्रायःश्चित्त लेवें ॥ ८७ ॥ तब वे भगवंत गौतम आणंद श्रावक का उक्त कथन श्रवण कर शंकाशीलबने, उस के निर्णय के अभिलाषी बने, प्रहस्थ को भी इतना ज्ञान होता है ऐसे करनी के फल में वितिगिच्छ बने, आणंद श्रावक के पास से निकलकर

समणे भगवं महावीरे एवं वयासी-एवं खलु गोयमा ! तुमं चेवणं तस्स ट्ठाणस्स आलोएहि जाव पायच्छित्त पडिवज्जाहि, आणंद समणोवासयं एयमट्ठं खामेहि ॥८९॥ तत्तेणं से भगवं गोयमे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहत्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसूणेति २ त्ता तस्स ट्ठाणस्स आलोईए जाव पायच्छित्तं पडिवज्जाहि, आणंदस्स समणोवासयं एयमट्ठं खामेति ॥ ९० ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे अण्णयाकयाइ बहिया जणवय विहारं विहरइ ॥ ९१ ॥ तएणं से आणंदे समणोवासए बहुहिं सीलव्वएहिं जाव अप्पाणं भावेत्ता वीसं वासाहि समणोवासग परियाग पाउणीत्ता

उस स्थानक की आलोचना करो यावत् प्रायःश्चित्त ग्रहण करो, और आनन्द श्रावक को इसलिये खमावो ॥ ८९ ॥ श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी का वचन भगवन्त गौतम तहति कर, उस आज्ञा को विनय युक्त मान्य की उस मिथ्या उच्चार की आलोचना निन्दा कर यावत् प्रायःश्चित्त लिया, आनन्द श्रावक के निर्दोष वचन को दोपन किया जिस की क्षमा याची ॥ ९० ॥ अन्यदा किसी वक्त श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी ने वहां से बाहिर जनपद देश में विहार किया ॥ ९१ ॥ वे आनन्द नामक श्रमणोपासक बहुत विशुद्ध परिणाम से पांच अणुव्रत सात गुणव्रत सामायिक पोषधोपवास श्रावक

ट्ठितक्खएणं अणंतरं चइत्ता कहिंगच्छाहिंति कहिं उववज्जाहिंति ? ॥ गोयमा ! महा विदेह वासे सिज्झिहिंति बुज्झिहिंति मुच्चिहिंति परिनिव्वाहिंति सव्वदुक्खाणं मंतं करेंति ॥ ९४ ॥ निक्खेवओ उवासग दसाणं पढमंज्झयणं सम्मत्तं ॥ १ ॥

किया हुवा आयुष्य का क्षय कर, देवता का भव और देवता की स्थिति का क्षय कर कहां जावेगा कहां उत्पन्न होगा ? अहो गौतम ! महा विदेह क्षेत्र में ऋद्धिवंत गृह में जन्म लेकर संयम लेकर कर्म क्षय कर सिद्ध होगा बुद्ध होगा, मुक्त होगा, निर्वाण प्राप्त होगा, शारीरिक मानसिकादि सर्व दुःखका क्षय करेगा. ॥ ९४ ॥ निश्चय, उपासक दशांग का आनन्द श्रावक प्रथम अध्ययन संपूर्ण ॥ १ ॥

॥ द्वितिय-अध्ययनम् ॥

जतिणं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सत्तमस अंगस्स उवासग दसाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नते दोच्चसणं भंते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? ॥ १ ॥ एवं खलु जबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपाएणामं नयरीए होत्था, पुण्णभद्दे चेइए, जियसत्तूराया, कामदेवे गाहावती, भद्दाभारिया, छ हरिण्ण कोडीओ निहाणपउत्ता, छ हिरण्ण कोडीओ बुड्ढिपउत्ताओ, छ हिरण्ण कोडीओ

अहो भगवन् ! यदि श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी यावत् मोक्ष पधारे उनोंने सातवे अंग उपासक दशांग का प्रथम अध्ययन का उक्त अर्थ कहा. तो अहो भगवन् ! दूसरे अध्ययन का क्या अर्थ कहा है ? १ ॥यों निश्चय अहो जम्बू ! उस काल उस समय में चम्पा नगरी थीं, पूर्णभद्र यक्षाका यक्षालय बगीचे था; तहां जीत शत्रु नाम का राजा राज्य करता था. तहां चम्पा नगरी में कामदेव नाम का गाथा-पति रहता था, उस की भद्रा भार्या थी. उस कामदेव गाथापति के छे हिरण्य कोडी का द्रव्य तो निधान गडा हुवा था, छे हिरण्य कोडी का द्रव्य व्यापार में वृद्धि करने में लगाया हुवा था, और छे का द्रव्य का पाथरा घर बिखेरा था; छे वर्ग गाई के दश हजार गाई का एक वर्ग ऐसे साठ

पवित्थर पउत्ताओ, छव्वया दसगो साहस्सिएणं वएणं ॥ २॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं भगवं महावीरं समोसड्ढे जहां आणंदो तहा निग्गतो, तहेव सावय धम्म पडिवज्जति, सव्ववत्तव्वया जाव जेट्ठ पुत्तं मित्तनाइ आपुच्छइ २ त्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता जहा आणंदो जाव समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्म पण्णति उवसंपजित्ताणं विहरित्तए ॥३॥ तत्तेणं तस्स काम देवस्स पुव्वरत्तावरत्ता काल समयंसि एगेदेवे माईमिच्छदिट्ठी अंतियं पाऊब्भूते ॥ ४ ॥ तएणं सेदेव एगमहं पिसायरूवं विउव्वति, तस्सणं देवस्स पिसायरूवस्स इमेएतारूवे वन्नावासे पण्णत्ते-सीसं से

हजार गौ थी ॥ २ ॥ उस काल उस समय में श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी पधारे, जिस प्रकार आनन्द महावीर स्वामी के दर्शनार्थ जा धर्म श्रवण कर श्रावकपना अंगीकार किया था, तैसे ही इसने भी यावत् श्रावक धर्म अंगीकार किया, सर्व वक्तव्यता तैसी ही कहना, यावत् बडे पुत्र को घर का भार सुपरत कर जहां पौषधशाला थी, तहां आया श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी के पास ग्रहण किया हुवा धर्म विशुद्ध प्रकार पालता हुवा विचरने लगा ॥३॥ तब उस कामदेव श्रावक के पास आधीरात्रि व्यतीत हुवे बाद एक माया मिथ्यादृष्टि देवता प्रगट हुवा ॥ ४ ॥ तब उस देवताने एक बडा पिशाच का रूप वैक्रय बनाया, उस देवता का पिशाच का रूप इस प्रकार का कहा है—मस्तक तो गाय के चरने का (चांट।

पवित्थर पउत्ताओ, छव्वया दसगो साहस्सिएणं वएणं ॥२॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं भगवं महावीरं समोसड्ढे जहां आणंदो तहा निग्गतो, तहेव सावय धम्म पडिवज्जति, सव्ववत्तव्वया जाव जेट्ठ पुत्तं मित्तनाइ आपुच्छइ २ त्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता जहा आणंदो जाव समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्म पण्णत्ति उवसंपाज्जित्ताणं विहरित्तए ॥३॥ तत्तेणं तस्स काम देवस्स पुव्वरत्तावरत्ता काल समयंसि एगेदेवे माईमिच्छदिट्ठी अंतियं पाऊब्भूते ॥ ४ ॥ तएणं सेदेव एगमहं पिसायरूवं विउव्वति, तस्सणं देवस्स पिसायरूवस्स इमेएतारूवे वन्नावासे पण्णत्ते-सीसं से

हजार गौ थी ॥ २ ॥ उस काल उस समय में श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी पधारे, जिस प्रकार आनन्द महावीर स्वामी के दर्शनार्थ जा धर्म श्रवण कर श्रावकपना अंगीकार किया था, तैसे ही इसने भी यावत् श्रावक धर्म अंगीकार किया, सर्व वक्तव्यता तैसी ही कहना, यावत् बडे पुत्र को घर का भार सुपरत कर जहां पौषधशाला थी, तहां आया श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी के पास ग्रहण किया हुवा धर्म विशुद्ध प्रकार पालता हुवा विचरने लगा ॥३॥ तब उस कामदेव श्रावक के पास आधीरात्रि व्यतीत हुवे बाद एक माया मिथ्यादृष्टि देवता प्रगट हुवा ॥ ४ ॥ तब उस देवताने एक बडा पिशाच का रूप वैक्रय बनाया, उस देवता का पिशाच का रूप इस प्रकार का कहा है—मस्तक तो गाय के चरने का (वांस)

गोकिलेंज संठाणं संठियं, सालिभसेल्ल सरिसे केसा. कविलतेएणं दिप्पमाणा, महल्ल उट्टिया कभल्ल संठाणं संठियं णिडालं;मुगुंसपुच्छंवतस्स भूमुगाओ फुग्गफुग्गओ विगय विभत्थ दंसणओ, सीसंघडिविणिग्गयाइं. अत्थीणि विगय बीभत्थ दंसणाओ, कण्णाओ जहसुप्पकत्तरंचेव विगय बीभत्थ दंसणिज्जा, उरब्भपुडसन्निभासे नासा, झूसिरा जमल चुल्ली संठाण संठिया दोवितस्स नासा पुडया, घोडयपुच्छं वतस्स मंसूइं कविलकविलाइं, विगय विभत्थ दंसणाइं, उट्टाउट्टस्सचेवलंबा, फालसरिसासेदंता,

रखानेक) सुंडला ऊंधा किया हो इस प्रकार के संस्थान से संस्थित था, काले कपिले कबरे बिखरे हुवे शाल्यधान्य के तुस के जैसे भयंकर मस्तक के केश थे, तेज कर दीप्त हुवा रोटी पकाने का कडाहला [तवा] जैसा निलाड-ललाट था, गिलेरी की पूछके जैसे परस्पर नहीं मिलते अलगर भयंकर विभत्स दर्शनी भौं-भांवारे थे, मस्तक रूप घडे को अतिक्रम भयंकर विभत्स दर्शनी दोनों आंखों थी, सूप (धान्य झाटक-नेका) के टुकडे के जैसे लम्बे २ कान थे, उरभ्र [मेंढे] के जैसा चपटा तथा उरभू वाजित्र तथा बडे उंदिरादि के बिलों के जैसी नाशिका थी, नाशिका के दोनों पुड चूले के दोनों ठीये के संस्थान जैसे संस्थित थे, घोडे के पूंछ के बाल जैसे कठोर खडे हुवे भयंकर दाढी मूंछों के बाल थे, ऊंठ के जैसे

जिब्भा जहा सुप्पकत्तरंचेव, विगय विसत्थ देसणिज्जा, हलकुद्दाल संठित्ता सेहणया, गल्लकडिल्लंच तस्स खड्डफुट्टं कविलं फरुसं महल्लं मुइंगाकारोवमेसे खंधे, पुरवरकवा-डोवमे सेवत्थे, कोट्ठिया संठाण संठिया दोवितस्स बाहा, निसापाहाण संठाण संठिया दोवित्तस्स अग्गहत्था, निसालोढ संठाण संठियाओ हत्थेसु अंगुलीओ, सिप्पिपुडग संठाण संठिया सेणक्खा, ण्हाविय पसेवओव्व उरंसि लंबंति दोवितस्स थणया, पोट्टं अयकोट्ठओव्ववट्टं, पाणकलंद सरिसा सेणाही; सिक्कग संठाण संठित्ते सेनेत्ते, संडव-

लम्बे होंट थे, लोह की काउ (हल्लिका दांता) जैसे दांत थे, शूर्प-कैंची जैसी जिव्हा थी, कंदरा-पर्वत की गुफा जैसा मुख था, हल्के लक्कड जैसी बांकी हडवची-जयाडे थे, फूटा कडीला या खड्डे के जैसे मध्य में शल्य पडे हुवे कठोर खराब कपोल-गाल थे, मृदंग के आकार स्कन्ध था, नगर के द्वार के कमाडों के पटके जैसा हृदय (छाती) था, धातु की गद्दी को धमने के कोठे समान भुजा थी, निसा-थोर के हाथे जैसी हाथ की हथेलियों थी, निसा-के अग्र जैसी हाथ की अंगुलियों थी, सीप के पुट जैसे नख थे, ना-पिक के शस्त्र रखने की थेली जैसे लटकते स्तन थे, लोहार के कोठार जैसी गोल पृष्ट थी, पानी की कुंडी जैसी ऊंडी डूंठी थी, शिखा जैसे सेकना पुट था, सांड के वृषण के संस्थान दोनों वृषण (गुदे) थे,

सूत्र

सण संठाण संठिया दोवितरस वसणा, जमल कोट्ठिया संठाण संठिया दोवीतरसउरु, अज्जणगुट्टं व तरस जाणूति, कुडिल लकुडिलाइं विगय बीभत्थ दंसणाइं जंघाओ, करकाडिओ लोमेहिं उवचियातो,अहिरी संठाण संठिया दोवीतरसपाया,अहिरीलोढ संठाण संठित्ताओ पादेसु अंगुलिओ, सिप्पिपुड संठाण संठिया सेणक्खा, लडहमडह जाणूए विगय भाग भुग्गय भमुहे,अवदालित वदणविवरे,निल्लालियग्गजीहे,सरडकय मालियाए, उंदुरमालापरिणद्ध सुकयचिंधे, णउलकय कण्णपुरे, सप्पकयविगच्छे, अफोडंते अभि-

अर्थ

धान्य के भरे हुवे दो कोठे जैसी दोनों जंघा थी, अर्जुन वृक्षकी गांठ के जैसे दोनों जानू-घुटने थे, जंघापर बांके कुटिल भयंकर दर्शनवाली कठिन रोमावाली थी, अधर शिला समान पगथलीयों थी, अहिरन के लोढे (बत्ते) के संस्थान पांवकी अंगुलीयों थी, सीपके पुट संस्थान व स्थिल पदांगुलीके नख थे. दोनों जानू लटकते हुवे भयंकर लालगलित बांका मुख के बाहिर जिव्हाग्र निकाला हुवा था, सरटा का-कांकीडे की माला मस्तकमें पहने हुवे, ऊंदरके भूषन गलेमें बंधे हुवे. नवलके आभरण कानोंमें पहने हुवे, सर्पका उत्तरासन कियाहुवा, या हाररूप पहने हुवे. इस प्रकार रूपवनाकर आकाश को फोडे ऐसे अट्टहास्य करता करस्फोट करता-तालीयों पीटता. मेघज्यों गर्जनाहुवा बहुत प्रकार के पांचों वर्णके रोमकर उपचित-पुष्ट बना, ऐसा रूपबना

सूत्र

गज्जंते भीममुक्कट्टहासे, नाणाविहं पंचवण्णेहिं लोमेहि उवचित्तो, एगमहंनिलुप्पलुगवल गुलिय अयसि कुसुमप्पगासं असिंखुरधारं गहाय ॥ ५ ॥ जेणेव पोसहासाला जेणेव कामदेव समणोवासए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता असुरुत्ते रुट्ठे कुविए चाण्डिक्किए मिसिमिसीय माणं कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी-हंभो ! कामदेवा ! समणोवासया! अपत्थिय पत्थिया, दुरंतपंत्तलक्खणा, हीणपुण्ण, चाउद्दसीया, हिरीसीरिधिईकित्ति परिवज्जिया, धम्मकामया, पुण्णकामया, सग्गकामया, मोक्खकामया; धम्मकंखिया. पुण्णकंखिया, सग्गकंखिया, मोक्खकंखिया; धम्मपिवासीया, पुण्णपिवासिया, सग्गपिवासीया,

अर्थ

कर एक बडा निलोत्पल कमल समान पाडे समान गली के वर्ण समान अलसी के फूल समान प्रकाश-वाला तीक्षण धारा का धारक खड्ग हाथ में धारन किया ॥ ५ ॥ उक्त प्रकार पिशाच का रूप बनाकर जहां पौषधशाला है जहां कामदेव श्रावक है तहां आया, आकर क्रोध में धमधमायमान होता कामदेव श्रमणोपासक से इस प्रकार बोला—भो कामदेव श्रमणोपासक ! अप्रार्थिक के प्रार्थिक—मृत्यु के इच्छक दुरंत-खराब प्रांत-नीच लक्षण के धारक, हीन पुण्यवाला, काली चतुर्दशी का जन्मा, ह्री-लज्जा श्री-शोभा, धैर्यता व कीर्ति रहित, धर्म-पुण्य-स्वर्ग, और मोक्ष के कामी; धर्म पुण्य, स्वर्ग और मोक्ष के वांछक,

मोक्खविवासिया, नोखलुकप्पइ तव देवाणुप्पिया ! जंसीलवयाई वेरमणाइं, पच्चक्खा-
णाइं, पोसहोववासाइं, चलितएवा खोभित्तएवा; खंडित्तएवा, भंजित्तएवा, उज्झित्तएवा,
परिट्ठित्तएवा (पाठांतर-परिच्चइत्तएवा) तंजंतिणं तुमं अज्जसीलाइं जाव पोसहोव
वासति नछंड्डेसि नभंजेसि तो ते अहं अज इमेणं नीलुप्पल जाव असिणाइं खंडाखंडिं
करेमि, जहणं तुमं अट्ट दुहट्टवसट्ट अकाले चेव जीवीयाओ विवरोविज्जसि ॥ ६ ॥
तत्तेणं से कामदेव समणोवासए तं देवेणं पिसायरूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए
अतत्थे अणुविग्गे अक्खुभीए अचलिए असंभंते तुसणीए धम्मज्झाणोवगए विहरंति

अर्थ

धर्म-पुण्य स्वर्ग और मोक्ष के प्यासे, अहो देवानुप्रिय ! तुझे तो शील व्रत वेरमण प्रत्याख्यान पौषध उपवास से चलना क्षोभित होना खण्डित करना, भंग करना, न्हाखना, छोडदेना कल्पता नहीं है, परंतु जो आज तू पौषध उपवासादि को नहीं, छोडेगा, नहीं भंग करेगा तो मैं आज तेरे शरीर के इस निलोत्पल जैसे खड्ग कर टुकडे २ कर डालूंगा, जिस से तू आहट दोहट चिल्लाकर अकाल में जीवित रहित होवेगा ॥ ६ ॥ तब कामदेव श्रावक, उस मायावी मिथ्यात्वी देवता का उक्त कथन श्रवण कर डरा नहीं, त्रास पाया नहीं, उद्वेग पाया नहीं, व्याकुल हुवा नहीं, स्वस्थान से चलायमान भी हुवा नहीं; मौनस्थ धर्म ध्यान ध्याता हुवा

॥ ७॥ तएणं से देवे पिसायरूवे कामदेवं अभीयं जाव धम्मं उझाणोवगयं विहरमाणं पासइ २त्ता दोच्चंपि तच्चंपि कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी-हंभो कामदेवा ! अप-त्थिय पच्छिया जइणं तुमं अज्ज जाव ववरोवजसि ॥ ८ ॥ तत्तेणं से कामदेव सम-णोवासए तेणं देवेणं दोच्चंपि तच्चंपि एवंवुत्ते समणे अभीते जाव धम्मंउझाणोवगए विहरइ ॥९॥ तएणं से देवे पिसायरूवे कामदेवं अभीए जाव विहरमाणं पासइ २त्ता आसुरुत्ते तिवलियंभिउडिंणिलाडे साहट्टु कामदेवं समणोवासए नीलुप्पल जाव असिणा खंडाखंडिंकरेति ॥ १० ॥ तत्तेणं कामदेवे तं उजलं जाव दुरहियासं वेयणं

अर्थ

विचरने लगा ॥७॥ तब वह पिशाच रूपधे देव कामदेवको निडर यावत् धर्म ध्यान ध्याता हुवा देखकर, दो वक्त तीन वक्त ऐसा बोला—भो कामदेव ! अप्रार्थिक के प्रार्थिक मृत्यु के इच्छक यावत् तुझे आज जीवित राहित करूंगा ॥८॥ तब कामदेव श्रावक उस दिव्य पिशाच रूपधारी देव के दोवक्त तीन वक्त उक्त वचन श्रवनकर निर्भय पने धर्म ध्यान ध्याता विचरने लगा ॥ ९ ॥ तब वह पिशाच रूपीदेव कामदेव को निडर यावत् धर्मध्यान में स्थिर देखकर असुरक्त कोपायमान हुवा त्रिवली निलाडपर चढाइ कामदेव श्रावक के शरीर पर निलुत्पल कमल समान यावत् तलवार के घाव किये—शरीर का खंडोखंड किया ॥ १० ॥ तब काम देव को उस खड्ग के प्रहार से अतिउज्वल यावत् सहन करना दुष्कर हो ऐसी वेदना हुई जिसको सम्यक्

सू.

लियं संविल्लियग्गसोंडं कुम्मिव पडिपुण्ण चलणं, वीसातिणक्खं अल्लीणपमाण जुत्त पुच्छं, मत्तंमेहमिव गुलगुलित्तं मणपवण जईणवेगं दिव्वं हत्थिरूवं वेउवेइ २ ॥ १२॥ जेणेव पोसहसालाए जेणेव कामदेवे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता कामदेवं एवं वयासी-हंभो कामदेवा ! तहेव भणंति जाव नभंजेसि, ततो अज्ज अहं सोंडाए गिण्हामि२त्ता पोसहसालातो णीणेमि२त्ता उड्ढं वेहासं उव्विहामि२त्ता तिक्खेहिं दंतमुसलेहिं पडिच्छामि २ त्ता अहे धरणितलंसि तिक्खुत्तो पाएसु लोलेमि जहाणं

अर्थ

नम्र किये वक्र किये धनुष्य समान, संकोचित किया सूंड का विभाग, काछवेके समान प्रतिपूर्ण पांव, वीसनख प्रतिपूर्ण, अलीन प्रमाणोपेत युक्त पूंछ, मदमस्त सर्व अंगोपांग से सुजात भाद्रव के मेघ समान गुलगुलाट शब्द से गर्जारव करताहुवा मन और पवन जैसी शीघ्र गति का धारक ऐसा दिव्य] हाथीका रूप वैक्रय किया ॥ १२ ॥ उक्त प्रकार हाथी का रूपबनाकर पौषध शाला में जहां कामदेव श्रमणोपाशक था, तहां आया, आकर कामदेव श्रमणो पासक से इस प्रकार कहने लगा—भो कामदेव ! यावत् जो तू पोषधो-पवासादि व्रतों का भङ्ग नहीं करेगा तो आज में तुझे इस सूंड में पकडकर पौषध शाला से बाहिर लेजाकर ऊंचा आकाश में फेंकदूंगा, नीचे पडतेको तीक्षण दांतोंपर झेलकर दांतों से तेरे शरीर में छिन्द्रकर

तुमं अट्टदुहट्ट वसट्टे अकालेचेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥ १३ ॥ तएणं ते कामदेव समणोवासए तेणंदिव्वेणं हत्थिरूवेणं एवंवुत्ते समाणे अभीए जाव विहरई ॥ १४ ॥ तएणं से देवेदिव्वे हत्थिरूवं कामदेवं अभीयं जाव विहरमाणं पासित्ता दोच्चंपि तच्चंपि कामदेव समणोवासयस्स एवं वयासी-हंभो कामदेवा ! तहेव जाव विहरइ ॥ १५ ॥ तएणं से संदेवे हत्थिरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं जाव विहरमाणं पासति २ त्ता आसूरुत्ते कामदेवं समणोवासए सोंडाए गिण्हति२त्ता उड्ढं वेहासं उविहामि२त्ता तिक्खेहिं दंतमूसलेहिं पडिच्छइ२त्ता अहे धरणितलंसि तिक्खुत्तो

फिर धरतीपर डालकर तीनवक्त पांवों कर रोलुंगा मर्दन करूंगा जिससे तू आर्त्त रौद्र चित्तहोकर अकाल में मृत्यु पावेगा ॥ १३ ॥ तब कामदेव श्रावक उस दिव्य हस्तिरूप देवता के उक्त वचन श्रवनकर डरा नहीं, त्रास पाया नहीं, तैसे ही धर्म ध्यान में स्थिर रहा विचरने लगे ॥ १४ ॥ तब उस हस्ति रूप देवता कामदेव को निडर यावत् धर्मध्यान ध्याता हुवा देखा, देखकर दोवक्त तीनवक्त ऐसे वचन कहे भो कामदेव! यावत् मारूंगा, तोभी कामदेव धर्मध्यान ध्याता विचरने लगा ॥१५॥ तब वहदेव अत्यन्तकोपायमान होकर कामदेव श्रमणोपासक को सुंडमें ग्रहणकर पौषध शालाके बाहिरलाकर आकाशमें उछालदिये, पडतेको तीक्ष्ण

मूल

पदेसुलोलेति॥१६॥तत्तेणं से कामदेवे तं उज्जलं जाव अहियासेति ॥१७॥ तएणं से देवे हत्थिरूवे जाव नो संचाएति संते तंते जाव साणियं२पच्चोसक्कइ२त्ता पोसह सालाओ पडिनिक्खमइ२त्ता दिव्वं हत्थिरूवं विप्पजहइ२त्ता एगं महं दिव्वं सप्परूवं विउव्वइ, तं उग्गविसं,चंडविसं घोरविसं दिट्ठिविसं,महाकाय,मसिमुसाकालगं नयणविसरोसपुण्णं, अंजणपुंज निगरप्पगासं, रत्तच्छं लोहियलोयणं,जमलजुयल चंचलजीहं धरणीयलवेणी

अर्थ

दांतोंपर झेलकर, शरीर में छिद्रकर जमीन पर डालकर पांवों से रोलने (मर्दने)-लगा ॥ १६ ॥ जिस से कामदेव को अत्यन्त उज्वल सहन करना दुष्कर ऐसी वेदना हुई उसे समभावकर सही ॥ १७ ॥ तब वह हस्तिरूप देव यावत् कामदेव को किंचित मात्र भी चलायमान नहीं करसका, तब थका बहुत ही थका यावत् शनैः २ पीछा हटकर पौषध शाला के बाहिर निकला, दिव्य हाथी का रूप छोडकर, एक दिव्य सांप का रूप बनाया, वह सर्प उग्रविष का धारक, रौद्र विषका धारक घोर भयंकर विषका धारक, दृष्टी विषका धारक, महामत्सर शरीर वाला, मस्ती—काजल या सोनार की मूस के समान आखों की किकी (पुतली) वाला, रक्त आंखों वाला, अंजन—काजल के ढग जैसा प्रकाश वाला, क्रोध पूर्ण रक्त आखों वाला, यमल युगल दोनों चंचल चपल जिव्हा वाला, लम्बाइ में और कृष्णता में धरती की वेनी (शिखा—चोटी) समान, उत्कट अन्य को पराभव करने केलिये स्फुट प्रगट

भूयं, उक्कड फुड कुडिल जडिल कक्कस वियड फुडाडोव करण दच्छं, लोहागर धम्ममाण धमधमेंतघोसं अणागलिय तिव्वचंडरोसं सप्परूवं विउव्वेइ २ ॥ १८ ॥ जेणेव पोसहसाला जेणेव कामदेवे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता कामदेवं एवं वयासी-हंभो कामदेवा! जाव णभंजसितो ते अज्ज अहं सरसरस्सकाय दुरूहामि २ त्ता पच्छिमेणं भायणं तिक्खुत्तोगीवं वेढेमि २ त्ता तिक्खाहिं विस परिगयाहिं दाढाहिं उरंसिचेव नकुट्टेमि, जहणं तुमं अट्टदुहट्ट वसट्टे अकालंचेव जीवियाओ ववरोविज्जासि ॥ १९ ॥ तएणं

अतिकुटिल जटाजुट विकट फणका विस्तारकर टोपाकार करने में कुशल, लोहकी भट्टी में अग्नी धमधमायमान होती है सो धमधमाय मान होता हुवा अथवा लोहार की धौंकनी समान धम २ भयंकर शब्द करता हुवा अतिप्रचंड रोशकर भराहुवा. इस प्रकार कालंदर सर्पकारूप वैक्रय किया॥१८॥ उक्त प्रकार सर्पकारूप वैक्रयकर पोपध शालामें जहां कामदेव श्रावकथा तहा आया, आकर कामदेव श्रावक से इसप्रकार कहनेलगा भो कामदेव! अप्रार्थिक के प्रार्थिक यावत् जो तू व्रत नियमादि का भंग नहीं करेगा तो आज मैं सरसराट करता हुवा तेरे शरीर पर चढकर-मेरे शरीर के पश्चात् भाग पूंछ करके तेरे सर्व शरीर को त्रिवली कर वेष्टित करूंगा मेरी विप भरी हुइ तीक्षण दाढों कर तेरे उर-हृदय को दंश करूंगा, जिस कर तू आहट दोहट वस्य हो अर्थात् तार्थ ध्यान ध्याता दुःखी हो अकाल में ही मृत्यु पावेगा ॥ १९ ॥ तब वह कामदेव उस दिव्य

सूत्र

से कामदेवे तेणं देवेणं सप्परूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरइ, सोवि दोच्चंपि तच्चंपि भणाति, कामदेवोवि जाव विहरति॥२०॥ तएणंसे देवे सप्परूवे कामदेवं अभीयं जाव पासंति २त्ता आसुरत्ते, कामदेवस्स समणोवासगस्स सरसरस्सकायं दुरुहंति २त्ता पत्थिम भाएणं तिक्खुत्तो गीवं वेढेति २त्ता तिक्खाहिं विसप्परिगयाहिं दाढाहिं उरंसिचेव निकुट्टेति ॥ २१ ॥ तएणं से कामदेवे तं उज्जलं जाव अहियासेति॥२२॥ तएणं से देवे सप्परूवे कामदेवं अभीयं जाव पासंति, जाहे नो संचाएति कामदेवं

अर्थ

सर्प के रूप देव के उक्त वचन श्रवण कर किंचित् मात्र भय नहीं पाये, त्रास नहीं पाये, आसन से चलायमान नहीं हुवे, यावत् धर्मध्यान ध्याते स्थिर रहे विचरने लगे. तब उस सर्प रूप देवने दो वक्त तीन वक्त उक्त वचन कहे तो भी कामदेव पूर्वोक्त प्रकार ही धर्मध्यान ध्याते हुवे विचरने लगे ॥ २० ॥ तब वह दिव्य सर्प रूप धारी देवता कामदेव को निडर यावत् विचरता हुवा देख कर आसुरक्त धमधमायमान अत्यन्त कोपित हुवा, उसही वक्त कामदेव के शरीर पर सरसराट करता आरूढ हुवा अपने शरीर के पश्चिम (पुच्छ) भाग कर कामदेव की ग्रीवा में तीन आंटे दिये-ग्रीवा वैष्टित की, तीक्षण विषारी दांतों कर हृदयमें दंशदिया॥२१॥ तब उस कामदेव श्रावक को उस की अति उज्वल सहन न हो ऐसी वेदना हुइ, उसे समभाव कर सहन की ॥ २२ ॥ तब दिव्य सर्प रूप धारी देवता कामदेव को निडर यावत् धर्मध्यान में

समणोवासयं निग्गंथाओ पावयणाओ चालितएवा खोभित्तएवा विप्परिणामित्तएवा, ताहे संते तंते परितंते सणियं २ पच्चोसक्कति, पोसहसालाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता दिव्वं सप्परूवं विप्पजहति २ त्ता, एगं महं दिव्वंदेवरूवं वेउव्वई-हारविराईय वत्थं जाव दसदिसाओ उज्जोवेमाणं पभासेमाणं पासाइयं ४ ॥ २३ ॥ दिव्वं देवरूवं वेउव्वित्ता कामदेव समणोवासयस्स पोसहसालं अणुप्पविसति २त्ता अंतलिक्ख पडि॰ वण्णे सखिंखिणीयातिं पंचवण्णाइं वत्थाइं पवरिहिते कामदेवं समणोवासयं एवं

स्थिर देखा, देख कर वह देव उस कामदेव को निर्ग्रन्थ प्रवचन से चलाने क्षोभित करने परिणाम मात्र भी विपरीत प्रवृताने समर्थ नहीं हुवा, तब थका अति ही थका हार गया, शनै २ पीछा सरक कर पौषध शाला के बाहिर आया, बाहिर आकर वह दिव्य सर्प का रूप छोडा, और एक महा दिव्य प्रकाशित देवता का रूप वैक्रय किया, जिस देवता का हारों कर हृदय विराजमान है, यावत् दशोदिशा में उद्योत करता हुवा प्रभा डालता हुवा-प्रकाशता हुवा चित्त को प्रसन्न करनेवाला देखने योग्य अभीरूप प्रतिरूप बना ॥ २३ ॥ उक्त प्रकार दिव्य देवता का रूप वैक्रय कर जहां कामदेव श्रावक पोषधशाला में था तहां आया, आकर आकाश में अधर खडा हुवा नन्हीं२घुघरियों घमकाता-मधुर आवाज करता हुवा, पांचों

सूत्र
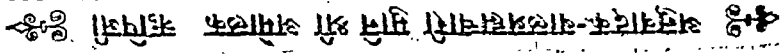
वयासी-हंभो कामदेवा समणोवासिया! धण्णेसिणं तुमं देवाणुप्पिया! संपुन्ने, कयत्थे कयलक्खणे, सुलद्धेणं तव देवाणुप्पिया! माणुस्सए जम्मजीवीयफले, जस्सणं तव णिग्गंथे पावयणे इमेयारूवे पडिवित्ती लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया॥ एवं खलु देवाणुप्पिया! सक्के देविंदे देवराया जाव सक्कंसि सिंहासणंसि चउरासीते सामाणिय साहस्सीणं जाव अन्नेसिंच बहुणं देवाणय देवीणय मज्झगते एवमाइक्खति ३-एवं खलु देवाणुप्पिया! जंबूद्दीवेदीवे भारहेवासे चंपाएनयरिए कामदेवे समणोवासए पोसहसालाए पोसहिते बंभचेरवासी

अर्थ

वर्ण के वस्त्र पहने हुवा कामदेव श्रावक से यों कहने लगा—अहो कामदेव श्रमणोपासक! धन्य है तुमारे को, अहो देवानुप्रिय! तुम संपूर्ण प्रतिज्ञा के पालक हो, अहो देवानुप्रिय! तुम उत्तम लक्षण के धारक हो, कृतार्थ हो, अहो देवानुप्रिय! तुमारेको मनुष्य जन्म जीवित का फल अच्छा प्राप्त हुवा, जिस कर तुमारेको निर्ग्रन्थ प्रवचनकी इस प्रकार दृढता प्राप्त हुइ, सन्मुख आई, इसलिये ही तुमारी शक्र देवेन्द्र देवता के राजा शक्र सिंहासनपर बैठेहुवे चउरासी हजार सामानीकदेव और भी बहुत से देवता देवीयों की परिषदा के मध्य में ऐसा कहा ऐसे प्ररूपा प्रसिद्ध किया कि—यों निश्चय है देवानुप्रियाओं! जंबूद्वीप नामक द्वीप के भरत क्षेत्र की चम्पा नगरी में कामदेव श्रावक पौषध शाला में पौषध ग्रहण कर ब्रह्मचर्य युक्त दर्भ के बिछोनोंपर बैठा

सूत्र

जाव दब्भसंथरोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्म पण्णंति उवसंप- ज्जित्ताणं विहरंति॥णो खलु से सक्का केणइ देवेणवा दाणवेणवा जाव गंधव्वेणवा निग्गं- थाओ पावयणाओ चालित्तएवा खोभित्तएवा विप्परिणामित्तएवा॥ तत्तेणं अहं सक्करस देविंदस्स देवरण्णो एयमट्ठं असद्दहमाणे २ इहं हव्वमागए॥तं अहोणं देवाणुप्पिया! इड्ढी लद्धा पत्ताणं तं दिट्ठाणं देवाणुप्पिया! इड्ढि जाव अभिसमण्णागया, तंखामेमिणं देवाणु- प्पिया! खमंतु मज्झ देवाणुप्पिया! खंतुमरुहंतिणं देवाणुप्पिया! नाइ भुज्जो २ करणयाए

अर्थ

हुवा श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी के पासे अङ्गीकार किया हुवा धर्म की विशेष प्रकार से पालन करता हुवा विचरता है, उसे कोई भी देवता दानव—असुर कुमारादी यावत् गंधर्व पर्यंत कोई भी निग्रन्थ के प्रवचन (धर्म) से चलाने क्षोभितकरने विपरीत परिणमाने समर्थ नहीं है. हे देवानुप्रिया! शक्रदेवेन्द्र देवता के राजा का उक्त कथन को मैं नहीं श्रधता नहीं परतीत करता हुवा यहां शीघ्र आया, अहो इतिआश्चर्य मनुष्य जाति में ऐसी दृढता? हे देवानुप्रिया! अच्छी तुमारे को धर्मसम्बन्धी ऋद्धि प्राप्त हुई है वह आज मैं ने प्रत्यक्ष देखी, जिस प्रकार की तुमारी धर्म दृढता की इन्द्रने व्याख्या की उसही प्रकार की तुमारी दृढता है, इसलिये मै तुम को क्षमताहु आप मेरा अपराध क्षमकरो, तुम पूज्य हो यहे हो तुमेक्षमा करना उचित है, हे देवानुप्रिया! अब फिर ऐसा अपराधन नहीं करूंगा; यों बोलता हुवा वह

तिकट्टु पायवडिए पंजलिउडे एयमट्ठं भुज्जो खामेइ २ त्ता जामेवदिसिं पाउब्भूए तामेवदिसिं पडिगए ॥ २४ ॥ तएणं से कामदेवे समणोवासए निरुवसग्गं तिकट्टु पडिमंपारेइ ॥ २५ ॥ तेणंकालेणं तेणंसमएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे जाव विहरइ ॥ २६ ॥ तत्तेणं से कामदेवस्स इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे-एवं खलु समणे जाव विहरइ, तं सेयंखलु मम समणं भगवं महावीरं वंदित्ता नमंसित्ता ततो पडि-नियत्तस्स पोसहं पारित्तए तिकट्टु, एवं संपेहेइ २ त्ता सुद्धप्पावेसाइं वत्थाइं जाव अप्पमणुस्स

देव कामदेव के चरणों में पड गया, दोनों हाथ जोडे हुवे उक्त कृत अपराध को वारम्वार क्षमाकर जिस दिशा से आया था उस दिशा (देवलोक में) पीछागया ॥ २४ ॥ तब उस कामदेव श्रावकने उपसर्ग की समाप्ति हुई जानी—उपसर्ग दूर हुवा जाना, वह उपसर्ग दूरनहो वहां तक ध्यान पारना नहीं, इस प्रकार जो पहिले अभिग्रह धारन किया था वह पूरा होनेसे उस प्रतिज्ञाको पारी ॥२५॥ उस काल उस समय में श्रमण भगवन्त श्री महावीर स्वामी चम्पा नगरी के पूर्णभद्र बगीचे में पधारे, तप संयम कर आत्मा भावते हो विचरने लगे ॥ २६ ॥ तब कामदेव श्रमणो पासक को महावीर स्वामी पधारने के समाचार प्राप्त हुवे, उसे अवधार कर हृष्ट तुष्ट हुवा विचार करने लगा कि-यों निश्चय श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी विचरते हैं इसलिये श्रेय है मुझे श्रमण भगवन्त श्री महावीर स्वामीको वंदना नमस्कारकर धर्मकथा श्रवण

घरगुरा परिक्खित्ते सयातो गिहातो पडिनिक्खमति २ त्ता चंपानगरी मज्झंमज्झेणं निगच्छाति २ त्ता जेणेव पुण्णभद्दे चेइए जहा संखो जाव पज्जुवासति ॥ २७ ॥

तत्तेणं समणे भगवं महावीरे, कामदेवस्स तीसेय जाव धम्मकहा सम्मत्ता ॥ २८ ॥ कामदेवा,त्ति समणं भगवं महावीरे कामदेव समणोवासयं एवं वयासी-सेणूणं कामदेवा! तुब्भे पुव्वरत्तवरत्तकाल समयंसि एगेदेवे अंतिए पाउब्भूए, तएणं ते देवे एगं महं दिव्वं पिसायरूवं विउव्वई २ त्ता आसुरुत्त ४, एगं महं निलुप्पल असिगहाय तुमं एवं

कर फिर पीछा यहां आकर पौषध पारना श्रेय है. यों विचार किया, ऐसा विचार कर शुद्ध पवित्र शभा में प्रवेश करने योग्य वस्त्र धारन किये, अल्प मनुष्यों के परिवार से परिवरा हुवा स्वयं के घर से निकला,निकलकर चम्पानगरी के मध्य२में होकर जिस प्रकार भगवती सूत्रमें कहे शंख श्रावक आयाथा तैसे आकर यावत् सेवा भक्ति करने लगा ॥ २७ ॥ तब श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामीने कामदेव श्रावक को और उस महा परिषध को धर्म कथा सुनाइ, धर्म कथा पूर्ण हुई॥२८॥ तब सर्व परिषदा सन्मुख कामदेव से श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी इस प्रकार कहने लगे—हे कामदेव ! अर्धरात्रि व्यतीत हुवे बाद तेरे पास एक देवता प्रगट हुवा था, उस देवताने एक बडा पिशाच का रूप बनाया था वह अशुरक्त कोपाय मान होकर एक महानिलोत्पल कमल समान खड्ग हाथ में धारनकर तेरे से यों बोला

वयासी-हंभो कामदेवा ! जाव जीवीयाओ ववरोविज्जासि तं तुमं तेणंदेवेणं एवंवुत्ते समाणे अभीए जाव विहरति, एवं वण्णगरहिया तिणविउवसग्गा, तहेव पडिउच्चार यव्वा, जाव देवो पडिगओ ॥ सेणूणं कामदेवा ! अट्ठेसमट्ठे ? हंता अत्थि ॥ २९ ॥ अज्जोति समणे भगवं महावीरे बहवे समणे णिग्गंथेय निग्गंथीओय आमंतेत्ता एवं वयासी-जति ताव अज्जो ! समणोवासगा गिहिणो गिहिमज्झावसंता, दिव्वमाणुस्स तिरिक्खजोणिए उवसग्गो सम्मं सहंति, जाव अहियासेंति, सक्कापुणाइ अज्जो ! समणेहिं

भो कामदेव ! जो तूनियम व्रत का भंग नहीं करेगा तो तुझ को आज इस निलोत्पल समान खड्ग कर जीवित रहित करूंगा, उस देवता के ऐसे वचन श्रवणकर तू निडरपने यावत् धर्मध्यान ध्याता हुवा स्थिर रहा. यों तीनों (पिशाच का, हाथी का और सर्प का) उपसर्गों जिस प्रकार पडे थे उस प्रकार कह सुनाये यावत् देवता क्षमामांगकर पीछा गया. हे कामदेव! यह कथन सच्चा हैं ? कामदेव बोला—हां भगवंत ! सच्चा है ॥२९॥ आर्यों ! श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी बहुत श्रमण निग्रन्थ व निग्रन्थीयोंको बोलाकर यों कहने लगे—हे आर्यों श्रमणोपासक गृहवास में रहा हुवा ही देवता मनुष्य तिर्यंच सम्बन्धी उपसर्ग को सम्यक् प्रकार से सहन किया यावत् अहीयासा तो, हे आर्यों तुम श्रमण निर्ग्रन्थ होकर द्वादशांग

सूत्र

निग्गंथेहिं दुवालसंगं गणिपिडगं अहिज्जमाणेहिं दिव्व माणूस्सेहिं तिरिक्खजोणिए सम्मं सहित्तए जाव अहियासित्तए॥३०॥तओ ते बहवेसमणा निग्गंथाय णिग्गंथीओय समणस्स भगवओ महावीरस्स तहित्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणंति ॥ ३१ ॥ तत्तेणं से कामदेवे हट्ठे तुट्ठे जाव समणं भगवं महावीरं पसिणाति पुच्छति, अट्ठमादियइ, समणं भगवं महावीरं तिक्खूत्तो वंदाति नमंसति जाव पडिगता ॥३२॥ तत्तेणं समणं भगवं महावीरे अन्नयाकयाइं चंपाओ पडिनिक्खमइ, २ त्ता बहिया जणवय विहारं विहरति ॥ ३३ ॥ तएणं से कामदेवे पढमं उवासग पडिमं उवसंपजित्ताणं

अर्थ

शास्त्र के जान मुक्ति पन्थ के साधक हो समर्थ हो इसलिये तुमतो अवश्यही देवता मनुष्य तिर्यंच सम्बन्धी उपसर्ग समभाव से सहना यावत् अहियासना चाहिये ॥ ३० ॥ तब बहुत श्रमण निर्ग्रन्थनेनिर्ग्रन्थीओने श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामीजी का कथन प्रमाण किया सहित किया, आपका कहना सत्य है यों कह नमित्त मान्य किया ॥ ३१ ॥ तब कामदेव श्रावक हृष्ट तुष्ट आनन्दित हो वंदना नमस्कार कर प्रश्न पूछे अर्थ धारन किये, फिर श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को तीन वक्त वंदना नमस्कार कर जिस दिशा से आया था उस ही दिशा पीछा (अपने घर) गया ॥ ३२ ॥ तब वे श्रमण भगवंत महावीर स्वामी अन्यदा किसी वक्त चम्पा नगरी से विहार कर बाहिर जनपद देश में विचरने लगे ॥ ३३ ॥ तब

विहरंति ॥ ३४ ॥ तएणं से कामदेव समणोवासए वहुहिं जाव भावेत्ता वीसंवासाइं समणोवासगं परियागं पाउणीत्ता, एक्कारस उवसग्ग पडिमाओ सम्मं काएणं फासित्ता, मासियाए, संलेहणाए अप्पाणं ज्झूसित्ता सट्ठिंभत्ताइं अणसाइं छेदित्ता, आलोइय पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा, सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसयस्स महा विमाणेस्स उत्तर पुत्थिमेणं अरूणाभेविमाणे देवत्ताए उववण्णे, तत्थेणं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइंठ्ठिइ पण्णत्ता, तत्थणं कामदेवस्सवि देवस्स चत्तारि पलिओ वमाइं ठ्ठिई पण्णत्ता ॥ ३५ ॥ सेणं भंते ! कामदेवेताओ देवलोगाओ

वे कामदेव श्रावक पहिली श्रावकी प्रतिमा से लगाकर यावत् इग्यारे प्रतिमा आनन्द श्रावक की तरह अंगीकार की ॥ ३४ ॥ तब कामदेव श्रावक बहुत प्रकार के तप करते हुवे यावत् आत्मा को भावते हुवे वीस वर्ष श्रावकपने की पर्याय का पालन किया, इग्यारे श्रावक की प्रतमा का सम्यक् प्रकार से पालन किया, अन्तिम अवसर में संथारा किया साठ भक्त अनसन का छेदन किया आलोचना प्रतिक्रमण कर समाधी से काल के अवसर काल पूर्ण कर सौधर्म कल्प वैमान के ईशान कौन में अरुणाभ विमान में देवता पने उत्पन्न हुवे. तहां कितनेक देवताओंकी चार पल्योपम की स्थिति है, कामदेवदेवकी भी चार पल्योपमकी

आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चईत्ता कहिंगछंति, कहिं उववज्जहिंति? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झहिंति जाव सव्व दुक्खाणं अंतं करेंति ॥ ३६ ॥ निक्खेवो कामदेवस्स उवासक दसाणं बीयज्झयणं सम्मत्तं ॥ २ ॥

अर्थ

स्थिति कही है. अहो भगवन् ! कामदेव उस देवलोक से आयुष्य भव का स्थिति का क्षय कर निरन्तर चव कर कहां जायगा कहां उत्पन्न होगा ? अहो गौतम ! महा विदेह क्षेत्र में सिद्ध होगा. यावत् सर्व दुःख का अन्त करेगा ॥ इति कामदेव श्रावक का द्वितीय अध्ययन संपूर्ण ॥ २ ॥

॥ तृतीय-अध्ययनम् ॥

उक्खेओ तइयस्स अज्झयणस्स एवं खलु जंबू ! तेणंकालेणं तेणंसमएणं वाणारसी नामं नयरीहोत्था. कोट्ठगनामचेइए, जितसतूराया ॥ १ ॥ तत्थणं वाणारसीए चुलणी. पिता नामं गाहावती परिवसति, अड्ढे जाव अपरिभूए; सामाभारिया ॥ अट्ठ हिरण्ण कोडीओ निहाण पउत्ताओ, अट्ठहिवुड्ढीपउत्ताओ, अट्ठहिं पवित्थरपउत्ताओ, अट्ठवया दसगो साहस्सिएणं वएणं, जहा आणंदो राईसर जाव सव्वकज्ज वट्टावएयावि होत्था

अर्थ तीसरे अध्ययन का—यों निश्चय, अहो जम्बू ! उस काल उस समय में बानारसी नाम की नगरी थी. कोष्ठक नाम के यक्ष का यक्षालय [illegible] था, बानारसी नगरी में जित शत्रु नाम का राजा राज्य करता था ॥ १ ॥ तहां बानारसी नगरी में चुल्लनीपिता नाम का गाथापति रहता था, वह ऋद्धिवन्त यावत् अपराभवित था, उस के शामा नाम की भारिया थी. चुल्लनी पिता गाथापति के आठ हिरण्य कोडी द्रव्य तो निधान (जमी .) में था, आठ हिरण्य कोडी का द्रव्य व्यापार में, आठ हिरण्य कोडी का पाथरा घर विखेरा था और दश हजार गाय का एक वर्ग ऐसे आठ वर्ग गायों के (८० हजार गौ) थे. जिस प्रकार आनन्द गाथापति राजा ईश्वरादि में मान में योग्य सबको आधारभूत था, उस ही

॥२॥सामी समोसड्ढे परिसानिग्गया चुल्लणीपितावि जहा आणंदो तहा निग्गओ,तहेव गिहि-धम्मं पडिवज्जति॥गोयम पुच्छा,तहेव सेसं जहा कामदेवस्स जाव पोसहसालाते पोसहिए बंभचारी समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णति उवसंपाजित्ताणं विहरति ॥३॥ तएणं तस्स चुल्लणीपियस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरतकाल समयंसि एगेदेवे अंतियं पाउब्भ-वेता ॥ ४ ॥ तत्तेणं से देवे एग नीलुप्पल जाव असिंगहाय चुल्लणीपितं समणोवा-सयं एवं वयासी-हंभो चुल्लणीपिया ! जहा कामदेवे जाव नभंजसी तो ते अहं अज्ज,

अर्थ

प्रकार चुल्लनी पिता भी आधारभूत यावत् वृद्धि का करनेवाला था ॥ २ ॥ श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी पधारे,कोष्टक नामके उद्यानमें तप संयमसे आत्मा को भावते हुवे विचरने लगे,परिषदा दर्शनार्थ आई, चुल्लनी पिता गाथापति भी आया, धर्मकथा सुनाइ, परिषदा पीछी गइ, चुल्लनीपिता गाथापतिने आनन्द श्रावक की परेही गृहस्थका धर्म बारा व्रत अंगीकार किये,गौतम स्वामीने प्रश्न पूछा-दीक्षालेवेगा क्या ? उत्तर आणंद के जैसा ही दिया, भगवन्त विहार कर गये, चुल्लनी पिताने बडे पुत्र को गृहभार संभलाया, आप पौषध शाला में आकर विशुद्ध प्रकार से धर्म ध्यान करता हुवा विचरने लगा॥३॥तब अन्यदा चुल्लनीपिता श्रमणो-पासक के पास अर्ध रात्रि व्यतीत हुवे एक देवता प्रगट हुवा ॥ ४ ॥ तब उस देवताने कामदेव के अध्य-यन में कहा वैसा ही रूप बनाया यावत् हाथ में निलोत्पल कमल समान खड्ग ग्रहण कर चुल्लनीपिता

जेट्ठं पुत्तं सातो गिहातो णीणेमी तव अग्गतोघाएमि, रत्ता ततो मंससोल्लेकरेमि, रत्ता आदाण भरियंसि कडाइयंसि अद्दाहेमि, रत्ता तवगातं मंसेणय सोणिएणय आइचामि, जहाणं तुमं अट्ट दुहट्टे वसट्टे अकाले चेव जीवीयाओ ववरोविज्जासि॥५॥ तएणं से चुल्ल-नीपीए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरंति॥६॥ तएणं से देवे चुल्लनी पियं अभीयं जाव पासती दोच्चंपि, तच्चंपि चुल्लणीपियं समणोवासयं एवं वयासी-हंभो

श्रमणोपासक से यों कहने लगा—भो चुल्लनीपिता ! जिस प्रकार कामदेव से कहा था उस ही प्रकार यावत् तू जो पौषधोपासादि व्रत का भंग नहीं करेगा तो मैं आज तेरे जेष्ठ पुत्र को तेरे घर में से पकड कर यहां लावूंगा, तेरे सन्मुख लाकर उसे मारूंगा, उस के मांस के तीन टुकडे करूंगा, भटी पर कडाह चढा कर उदक तैलादि से आदन आवे वैसी बनाकर उस कडाइ में मांस को तलूंगा, वह तप्त मांस रक्त तेरे शरीर पर छांटूंगा, जिस से तू आहट दोहट वश्य हो आर्तध्यान ध्याता हुवा दुःखी हुवा, अकाल में मृत्यु को प्राप्त होगा ॥ ९ ॥ तब चुल्लनीपिता उस देवता का उक्त वचन श्रवण करके निडर रहा, क्षोभित नहीं हुवा, स्वस्थान से चला भी नहीं यावत् धर्मध्यानमें स्थिर हो विचरने लगा ॥ ६ ॥ चुल्लनीपिता श्रमणोपासक को निर्भय यावत् धर्मध्यान ध्याता हुवा देखकर वह देव दो वक्त तीनवक्त ऐसा बोला-भो चुल्लनीपिता!

चुलणीपिय! ! अपत्थीया पत्थीया जाव नभंज [illegible] तं चेव भणइ सो जाव विहरंति॥७॥ तएणं से देवे चुलणी पियाणं अभीयं जाव पा[illegible]ता आसुरुत्ते, चुलणीपितस्स समणो वासगस्स जेठ पुत्तं गिहातो णीणेती२त्ता आग[illegible] घाएती२त्ता तओ मंससोल्लए करेति २ त्ता आदण भरियंसि कडाहयंसि अद्दहे[illegible] २ त्ता चुलणीपियस्स गायं मंसेणय सोणीएणय अइच्चंति ॥ ८ ॥ तएणं से चु[illegible]नीपिया समणोवासाया तं उज्जलं जाव अहियासंती ॥९॥ तत्तेणं से देव चुलणिपि[illegible]यं समणोवासयं अभीयं जाव पासइ २त्ता

अर्थ

अप्रार्थिक के प्रार्थिक यावत् व्रत को नहीं भंगेगा तो [illegible] बडे पुत्र को मारूंगा इत्यादि, कहा तो भी चुलनीपिता धर्म ध्यान ध्याता ही रहा ॥ ७ ॥ तब व[illegible] देवता चुल्लनीपिता को निडर यावत् धर्म ध्यान ध्याता देखकर आसुरक्त धमधमायमान कोपातुर हो चुल्लनीपिता के जेष्ठ पुत्र को पकडलाया, चुल्लनीपिता के सन्मुख उसे मारा, उस के मांस के तीन टुकडे किये, मांस रक्त कडाइ में तलकर चुल्लनीपिता के शरीर पर छांटा ॥ ८ ॥ तब चुल्लनीपिता को महा उज्वल वेदना हुइ उस को सम्यक् प्रकार से सही परंतु किंचित भी च[illegible]यमान नहीं हुवा ॥ ९ ॥ तब वह देवता चुल्लनीपिता श्रावक को निडर यावत् धर्म ध्याता हुवा देखकर दूसरी वक्त फिर यों कहने लगा—भो चुल्लनीपिता ! अप्रार्थिक के प्रार्थिक यावत् जो तू आज तेरे [illegible] का भंग नहीं करेगा तो मैं तेरे मध्यम पुत्र को तेरे घरसे

दोच्चंपि चुल्लणिपियं समणो वासयं एवं वयासी—हंभो चुल्लणीपिया ! अपत्थीया पत्थीया जाव नभंजसि तो ते अहं अज्ज माज्झिमं पुत्तं साओगिहातो नीणेमी २ त्ता तव अग्गओ घाएमि जहा जेठं पुत्तं तहेव भणइ, तहेव करेइ ॥ एवं तच्चं कणियासंपि, जाव अहियासेति ॥ १० ॥ तएणं से देवे-चुल्लणीपिया ! अभीयं जाव पासइ २ त्ता चउत्थंपि चुलणीपियं एवं वयासी—हंभो चुल्लणिपिया ! अपत्थीया पत्थीया जइणं तुम्हं जाव नभंजसि ततो अहं अज्ज जा इमा तव माया भद्दासत्थवाहीणी देवयं गुरु

पकड कर लावूंगा, तेरे आगे मारूंगा, मांसके तीन टुकडेकर कडाइमें तलकर तेरे शरीरपर छांटूंगा; जिससे तू अकालमें मृत्यु पावेगा. ऐसा सुनकर भी चुल्लनीपिता चलायमान नहीं हुवा. तब वह देवता मध्यम पुत्र को भी पकडलाया मारकर तीन टुकडे कर उस का मांस रक्त कडाइ में तलकर चुल्लनीपिता के शरीर पर छांटा, जिस से चुल्लनीपिता को अति उज्वल वेदना उत्पन्न हुइ, परंतु किंमचिंम्मात्र भी चलायमान नहीं हुवा. जिस प्रकार दूसरे पुत्र की घात की उस ही प्रकार तीसरे कनिष्ट-छोटे पुत्र को भी मारकर तलकर शरीर पर छांटा तो भी चलायमान नहीं हुवा, यावत् धर्म ध्यान ध्याता हुवा विचरने लगा ॥१०॥ तब वह देवता चुल्लनीपिता को निर्भय यावत् धर्म ध्यान ध्याता हुवा देखकर चौथी वक्त वह देवता चुल्लनीपिता से

तचंपि एवं वुत्ते समाणे इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्ता-अहोणं इमे पुरिसे अणारिए अणारिय बुद्धी अणायरियाइं पावाइं कम्माइं समायरंति-जेणं मम जेट्ठं पुत्तं साओ गिहाओ णीणेति ममं अग्गओ घाएति २ त्ता जहा कयं तहा चिंतीयं जाव आइचेति ॥ जेणं ममं मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ णीणेति जाव आइचंति, जेणं मम कणीएसं पुत्तं साओगिहाओ तहेव जाव आइचंति, जा ति यणं, इमा मम माया भद्दा सत्थवाही देवगुरु जणणी दुक्कर२कारिया तं पि य णं इच्छंति सयाओ गिहाओ णीणेत्ता मम अग्गओ घाइत्ताए, तं सेयंखलु मम एयं पुरिसं गिहितए त्तिकट्टु,उट्ठाइए,

चुल्लनीपिता उस देवता के दो वक्त तीन वक्त उक्त वचन श्रवण कर इस प्रकार अध्यवसाय उत्पन्न हुवा. अहो इति आश्चर्य ! यह पुरुष अनार्य (अधर्मी) है, अनार्य बुद्धिवाला है, अनार्य कर्म का समाचरनेवाला है कि—जिसने मेरे बडे पुत्र को घर से लाकर मेरे सामने मारकर मेरे शरीर पर छांटा, इस प्रकार ही मेरे विचले पुत्र को और इस प्रकार ही मेरे कनिष्ट—छोटे पुत्र को मारकर तलकर मेरे शरीर छांटा, अब यह मेरी माता भद्रासार्थवाहीनी देव गुरु समान जनीता दुक्कर २ कष्ट की सहनेवाली उसे भी घर से निकालकर लाकर मेरे सन्मुख मारना चहाता है. इसलिये इस पुरुष को पकडना मुझे श्रेय है. ऐसा विचारकर उठा, इतने में वह देव आकाश में भग गया, और चुल्लनीपिता के हाथ में स्थंभ आया, तब वह चुल्लनी-

एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहारमी ॥ तएणं से पुरिसे मम अभीयं जाव विहर माणं पासंति दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी-हंभो चुल्लणीप्पिया ! तहेव जाव आइचंति, तत्तेणं अहं तं उज्जलं जाव अहियासेमि, एवं तहेव जाव कणीयसं जाव अहियासेमि तएणं से पुरिसे मम अभिते जाव पासति २ ममं चउत्थंपि एवं वयासी-हंभो चुल्लणी पिया! अपत्थीय पत्थीया जाव न भंजसि तो ते अज्जा जा इमा तव माता भद्दा गुरुदेवे जाव ववरोविज्जासी,॥तत्तेणं अहं तेणं पुरिसेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरामी

अकाल में मृत्यु पावेगा, तब मैं उस पुरुष का उक्त वचन श्रवणकर डरा नहीं यावत् धर्म ध्यान ध्याता हुवा विचरनेलगा. तब वह पुरुष मुझ निर्भय धर्मध्यान ध्याता हुवा देखकर दूसरीवक्त तीसरीवक्त उक्त प्रकारके वचन किये, तो भी मैं चलायमान न हुवा, तब बडे पुत्र को यहां लाकर मारा, उसका रक्त मांस कढाइ में तलकर गरमागरम मेरे शरीरपर छांटा, जिसेकी उज्वल वेदना मुझ हुई तो भी मैं चलायमान नहीं हुवा, यों तीनों पुत्रों को मारकर कढाइ में तलकर मेरे शरीर पर छांटे, उस की उज्वल वेदना मैंने सही परंतु चलायमान नहीं हुवा. तब वह पुरुष मुझे निडर देखे चौथी वक्त मेरे से यों बोला—भो चुल्लनीपिता ! अप्रार्थिक के प्रार्थिक यावत् व्रतों का भंग नहीं करेगा तो आज यह तेरी भद्रा माता देव गुरु समान

सूत्र

तएणंसे पुरिसे दोच्चंपि तच्चंपिमम एवं वयासी-हंभो चुल्लणिया अज्ज जाव ववरोविज्जासितएणं तेणं पुरिसेणं दोच्चंपि ममं तच्चंपि एवं वुत्त समाणेस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-अहोणं इमे पुरिसे अणारिए जाव अणायरिय कम्माइं समायरति,जेणं मम जेट्ठं पुत्तं साताओगिहातो तहेव कणियसं जाव आइंचाति, तुज्झेवियणं इच्छीत साताओगिहातो णीणेत्ता मम आगाओ घाएति. तं सेयंखलु ममं एयं पुरिसं गिण्हत्तए त्तिकट्टु उट्ठाइए. सेविय आगासे उप्पत्तिए, मएविय, खंभे आसाइए महया २ सद्देणं कोलाहलेकए॥ १६॥

अर्थ

यावत् उस को भी तेरे सन्मुख मारकर रक्त मांस तल्कर तेरे शरीर पर छांटूंगा. तब मैं चौथी वक्त उस का यह वचन श्रवण करके भी डरा नहीं यावत् धर्म ध्यान ध्याता हुवा विचरने लगा. तब वह पुरुष दो वक्त तीन वक्त उक्त प्रकार वचन बोला. तब मेरे मन में विचार हुवा कि—यह पुरुष अनार्य है यावत् अनार्य कर्म का करनेवाला है, इसने मेरी तीनों पुत्रों को मारकर उन का मांस रक्त तल्कर मेरे शरीर पर छांटा, अब चौथी वक्त यह मेरी माता भद्रा सार्थवाहीनी देव गुरु समान जीवों दुःकर २ कष्ट की हटानेवाली उसेमारना चहाता है, इसलिये इस पुरुषको पकडना मुझे श्रेय है. यों विचारकर उठा,इतनेमें यह पुरुष भी आकाश में उड गया, और मेरे हाथ में स्थंभ आगया, जिस से मैंने महा २ शब्द कर कोलाहल

* चौर्थ-अध्ययनम् *

सूत्र — उक्खेवओ चउत्थस्स अज्झयणस्स—एवं खलु जंबू !—तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसीणामं नयरी, कोट्टए चेइए, जियसत्तुराया, सुरादेवे गाहवइ! अड्ढे जाव अपरिभूए. छहिरण्ण कोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ वुड्ढी पउताओ, छपावित्थर पउताओ, छवग्ग दसगो साहस्सिएणं वएणं ॥ धन्ना भारिया ॥ सामी समोसढ्ढे ॥ जहा आणंदो तहेव गिहधम्मं पडिवज्जंति जाव समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मंपण्णतिं जाव विहरइ॥ १॥

अर्थ — उक्षेप चौथा अध्ययन का—यों निश्चय, हे जम्बू ! उस काल उस समय में बनारसी नाम की नगरी, कोष्टक चैत्य उद्यान, जित शत्रु राजा राज्य करता था. वहां बनारसी नगरीमें सूरादेव नामका गाथापति रहता था, जिस के छे हिरण्य कोडी द्रव्य निधान में, छे कोडी द्रव्य व्यापार में छे कोडी द्रव्य का पाथरा, छे वर्ग गायों के और धन्ना नाम की स्त्री थी. श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे परिषदा वंदने गइ, सूरादेव भी गया, धर्मकथा सुनाई, परिषदा पीछीगइ, सूरादेवने गृहस्थ का धर्म श्रावक के व्रत आनंद श्रावक के जैसे ही अङ्गीकार किये, धन्ना भारिया को भी अङ्गीकार कराये, भगवं गौतम स्वामीने प्रश्न किया, आणंद के जैसा ही उत्तर दिया ॥ भगवंतने विहार किया ॥ सूरादेव बडे पुत्रको घर का भार सुपरतकर पौषध शाला में धर्म ध्यान ध्याता

सूत्र

आणंदो जाव इक्कारस उवासग पडिमा आराहेइ॥ १९॥ तएणं से चुल्लणीपिया समणोवासए जहा कामदेवो जाव सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसगस्स महाविमाणस्स उत्तर पुरत्थिमेणं अरूणप्पभे विमाणे देवत्ताए उववन्नो, चत्तारि पलिओवमाई ठिई जाव महाविदेहेवासे सिज्झंति॥ २०॥ निक्खेवो तहेव ॥ उवासग दसाणं तइयं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ ३ ॥

अर्थ

कार की, जिस प्रकार आनन्द श्रावकने की थी उस ही प्रकार इग्यारे प्रतिमा का सम्यक् प्रकार से आराधन किया ॥ १९ ॥ तब चुल्लनीपिता जिस प्रकार कामदेव श्रावकने अनशन किया था उसही प्रकार अनशन संथारा कर, साठ भक्त अनशन छेद, वीस वर्ष श्रावकपना पाल, काल के अवसर में काल कर, प्रथम सौधर्म देवलोक में सौधर्म वैमान से ईशान कौनमें अरुणाभ नामक विमानमें देवतापने उत्पन्न हुवा॥२०॥ वहां चुल्लनीपिता देव का भी चार पल्योपम का आयुष्य कहा है. वहां से आयुष्य का क्षय कर, भव का क्षय कर, स्थिति का क्षय कर, निरन्तर चवकर महा विदेह क्षेत्र में जन्म ले यावत् सिद्ध बुद्ध होगा सर्व दुःख का अन्त करेगा. निक्षेप तैसे ही कहना ॥ इति तीसरा चुल्लनीपिता श्रावकका अध्ययन संपूर्ण ॥३॥
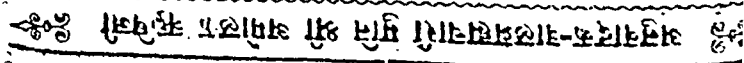
कणीयसं नवरं, एक्केके पंचसोलया तहेव करेइ जहा चुलणीपियस्स ॥ २ ॥ तएणं से देवे सूरादेवस्समणोवासयं चउत्थंपि एवं वयासी—हंभो सूरादेवा! अपत्थिय पात्थिया४ जाव न भंजसि ततो अहं अज्ज तव सरीरंसी जमगसमगमेव सोल सरोगायंको पक्खिवेमि तं जहा-सासे खांसे, जवरा, दाहे, कुत्थिसूल, भगंदर, आरिसा, अजीरए, दिट्ठीसूल, मुहसूल, ओकारए, अत्थिवेयणा, कण्णवेयणा, कंडवे, उदरे, कोढए, जहणं तुब्भे अट्ट दुहट्ट वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोवज्जसि ॥ ३ ॥ तएणं से

अर्थ

तीनों पुत्रों को मारे इतना विशेष एक के पांच २ टुकडे करे, तलकर सूरादेव के शरीर पर छांटे, परंतु सूरादेव किंचित मात्र भी चलायमान नहीं हुवा ॥ २ ॥ तब वह देव चौथी वक्त यों कहने लगा-भो सूरादेव! अप्रार्थिक प्रार्थिक यावत् जो तू व्रत नियम का भङ्ग नहीं करेगा तो आजतेरे शरीर में एक ही साथ सोले रोग प्रक्षेप करूंगा, उन के नाम—१ श्वास, २ खांस ३ ज्वर ४ दाहाज्वर ५ कुक्षी शूल, ६ भगंदर, ७ अर्ष-मस्सा, ८ अजीरन, ९ दृष्टी सूल, १० मस्तक सूल, ११ वमन, १२ आंख की वेदना, १३ कानकी वेदना, १४ कमर की वेदना, १५ उदर वेदना और १६ कुष्टरोग. इस प्रकार सोलेही रोग एक ही साथ में प्रक्षेप करूंगा; जिस से तू आहट दोहट चित्त के वश्यहो अकाल में मृत्यु पावैगा ॥ ३ ॥ तब वह

तएणं तस्स सुरादेवस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्ता वरतकाल समयंसी एगेदेवे अंतियं पाउब्भूवित्ता, से देवे एगं महं निलुप्पल जाव असिग्गहाय सुरादेवं समणोवासयं एवं वयासी-हंभो सुरादेव समणोवासया! अपत्थिय पत्थिया जइणं तुमं सीलव्वयाइं जाव न भंजासि, तो ते जेठं पुत्तं सातो गिहातो णीणेमी २त्ता तव अगातो घाएमी, २त्ता पंच मंस सोल्लए करेमि, २त्ता आयाणं भारियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, २त्ता तव गाय मंसणय सोणिय- णम आइंचमि, जहाणं तुमं अकाले चेव जीवियाओ विवरोविज्जसि ॥ एवं मज्झिमं

अर्थ

हुवा विचरने लगा ॥ १ ॥ तब सुरादेव श्रावक के पास पूर्वरात-आधी रात व्यतीत हुवे एक देवता प्रगट हुवा उसने कामदेव के अध्ययन में कहा जैसा ही रूप बनाया यावत् निलोत्पल समान खड्ग हाथ में लिये हुवे यों कहने लगा—भो सुरादेव ! अप्रार्थिक के प्रार्थनेवाले यावत् जो तू शील व्रत पौषधादि भंग नहीं करेगा तो आज तेरे बडे पुत्र को तेरे आगे लाकर मारूंगा, उस के शरीर के पांच के पांच २ टुकडे कर आद्रन से उकलती कडाइ में तलकर तेरे शरीर पर छांटूंगा, जिस से तू आर्त ध्यान ध्याता दुःखी हो अकाल में मरेगा. उक्त वचन देवताका श्रवण कर सुरादेव चलायमान नहीं हुवा, तब देवता कोपायमान हो जिस प्रकार चुल्लनीपिता के तीनों पुत्रों को मारकर तलकर उस के शरीर पर छांटे थे. तैसे सुरादेव के

कणीयसं नवरं, एक्केके पंचसोलया तहेव करेइ जहा चुलणीपियस्स ॥ २ ॥ तएणं से देवे सूरादेवस्समणोवासयं चउत्थंपि एवं वयासी—हंभो सूरादेवा ! अपत्थिय पत्थिया ४ जाव न भंजसि ततो अहं अज्ज तव सरीरंसी जमगसमगमेव सोल सरोगायंको पक्खिवेमि तं जहा-सासे खांसे, जवरा, दाहे, कुत्थिसूल, भगंदर, आरिसा, अजीरए, दिट्ठीसूल, मुहसूल, ओकारए, अत्थिवेयणा, कण्णवेयणा, कंडवे, उदरे, कोढए, जहणं तुम्भे अट्ट दुहट्ट वसट्ट अकाले चेव जीवियाओ ववरोवज्जसि ॥ ३ ॥ तएणं से

अर्थ

तीनों पुत्रों को मारे इतना विशेष एक के पांच २ टुकडे करे, तलकर सूरादेव के शरीर पर छांटे, परंतु सूरादेव किंचित मात्र भी चलायमान नहीं हुवा ॥ २ ॥ तब वह देव चौथी वक्त यों कहने लगा-भो सूरादेव ! अप्रार्थिक प्रार्थिक यावत् जो तू व्रत नियम का भङ्ग नहीं करेगा तो आजतेरे शरीर में एक ही साथ सोले रोग प्रक्षेप करूंगा, उन के नाम—१ श्वास, २ खांस ३ ज्वर ४ दाहाज्वर ५ कुक्षी शूल, ६ भगंदर, ७ अर्ष-मस्सा, ८ अजीरन, ९ दृष्टी सूल, १० मस्तक सूल, ११ वमन, १२ आंख की वेदना, १३ कानकी वेदना, १४ कमर की वेदना, १५ उदर वेदना और १६ कुष्टरोग. इस प्रकार सोलेही रोग एक ही साथ में प्रक्षेप करूंगा; जिस से तू आर्ट दोहट्ट चित्त के वश्यहो अकाल में मृत्यु पावेगा ॥ ३ ॥ तब वह

सूत्र

सूरादेव जाव विहरंति ॥४॥ एवं देवो दोच्चंपि तच्चंपि भणंति, जाव ववरोवज्जासि ॥५॥ तएणं तस्स सुरादेवस्स तेणं देवेणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्तसमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए४समुप्पन्ने अहोणं इमे पुरिसे अणारीए जाव समायरंती, जेणे ममं जेट्ठं पुत्तं जाव कणीयासं जाव आइचंति, जेविय इमे सोलसरोगायंके तेविय ईछंति ममसरीरगंसि पक्खिवित्तए, तं सेयं खलु मम एयं पुरिसं गिण्हीत्तए निकट्टु, उठ्ठाइतिए सेविय आगासे उप्पईए, तेणयखंमे आसादेति, महता सद्देणं कोलाहलेकए ॥ ६ ॥ तएणं साधन्नाभारिया कोलाहल सद्दंसोच्चा निसम्म जेणेव सुरादेव समणोवासए तेणेव

अर्थ

सूरादेव श्रावक देवका उक्त वचन श्रवण कर किंचित भी चलायमान नहीं हुवा यावत् विचरने लगा॥४॥तब वह देव दो वक्त तीन वक्त उक्त वचन कहे यावत् सोलह रोग से अतिदुःखी होकरमर जावेगा ॥ ५ ॥ तब उस सूरादेव को उस देवता का दो वक्त तीन वक्त उक्त वचन श्रवन कर इस प्रकार विचार हुवा अहो यह पुरुष अनार्य है,इसने मेरे तीनों पुत्रों की घात की,अब यह मेरे शरीर में एक ही साथ सोले प्रकार के रोग प्रक्षेपना चहाता है, इसलिये इस पुरुष को पकडना श्रेय है. ऐसा विचार कर उठा, कि वह देव तत्काल आकाश में भगगया, सूरादेव के हाथ में स्थंभा आगया, सूरादेवने कोलाहल शब्द किया ॥ ६ ॥ तब

सूत्र

उवागच्छइ २त्ता एवं वयासी-किण्णं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं महता २ सद्देण कोलाहलेकए? ॥ ७ ॥ तएणं से सूरादेवे धणं भारियायं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! केइ पुरिसे, तहेव कहेति ॥ जाह चूलणिप्पिया धण्णावि पडिभणाति जाव कणियस्स, नो खलु देवाणुप्पिया ! तुब्भे केइ पुरिसे सरीरंसी जमगसमगं सोलस रोगायंके पक्खिवइ, एसणं केइ पुरिसे तुब्भं उवसग्गकरेति, सेसं जहा चूलणीपियस्स तहा-भणाति ॥ ८ ॥ एवं सेसं जहा चुल्लणीपियस्स णिरवसेसं जाव सोहम्मकप्पे अरुणं

अर्थ

सूरादेव की धन्ना भार्याने वह कोलाहल शब्द सुना सूरादेव के पास आकर पूछा—हे देवानुप्रिया! कोलाहल शब्द क्यों किया ? ॥७॥ तब सूरादेवने सब हकीगत कह सुनाइ. तब जिसप्रकार भद्रामाता चुल्लनीपिता को बोलीथी, उस ही प्रकार धन्ना भार्याने भी सूरादेव से कहा-कि निश्चय हे देवानुप्रिया ! किसी पुरुषने तुमारे पुत्रकी घातकी नहीं है, कोई तुमारे शरीरमें रोगप्रक्षेप करसक्ताभी नहींहैं यह तो किसी पुरुषने उपसर्ग किया, (किसी देवताने मायावताकर तुमारी परिक्षा की है,) इससे तुमारे नियम का पोषाका भंग हुआ उसकी आलोचनाकर प्रायश्चितले शुद्ध होवे. सूरादेव प्रायश्चितले शुद्ध हुवा ॥ ८ ॥ और सब कथन चुल्लनीपिता जैसा कहना, इग्यारे प्रतिमा का सम्यक प्रकार आराधन किया, एक महीने का संथारा आया, आयुष्य

सूत्र

कंतेविमाणे चत्तारि पलिओवमाट्ठिती, महाविदेहवासे सिज्झहिति जाव सव्व दुक्खाण अंतं करेस्सि ॥ ९ ॥ निक्खेवो उवासगदसाणं चउत्थं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ ४ ॥

अर्थ

पूर्ण कर, प्रथम देवलोक के अरुणकंत विमान में देवता पने उत्पन्न हुवा. चारपल्योपम का आयुष्यपाया वहां से आयुष्य का भव का क्षयकर महाविदेह क्षेत्र में जन्म धारनकर यावत् सिद्ध बुद्ध मुक्त हो सब दुःख का अन्त करेगा ॥ ९ ॥ इतिचौथा सुरादेव श्रावक का अध्ययन समाप्त ॥ ४ ॥

॥ पञ्चमं-अध्ययनम् ॥

सूत्र

उक्खेवो पंचमंस्स अज्झयणस्स-एवं खलु जंबू ! तेणंकालेणं तेणंसमएणं आलंभियानामं नयरी होत्था; संखवणे उज्जाणे; जियसत्तूराया ॥ चुल्लसयएगाहावई परिवसइ, अड्ढे जाव छहिरण्ण कोडीओ निहाणपउत्ताओ, छवुड्ढीपउत्ताओ, छपवित्थरपउत्ताओ, छव्वया दसगोसाहस्सिएणं, वहुलाभारिया ॥ सामीसमोसड्ढे, जहा आणंदो तहा धम्मंसोच्चा गिहि धम्मंपडिवज्जंति; सेसं जहा कामदेवे जाव समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मं

अर्थ

उक्षेप पांचवे अध्ययन का—यों निश्चय, हे जम्बू ! उस काल उस समय में आलंभिका नाम की नगरी थी, शंख वन उद्यान था, जित शत्रू राजा था, चुल्लनी शतक गाथापति रहता था. उस के छ हिरण्य कोडी निध्यान में थी, छे हिरण्य कोडी व्यापार में थी, छे हिरण्य कोडी का पाथरा था; दश हजार गौ का एक वर्ग ऐसे छ वर्ग गौ के थे, साठ हजार गौ थी. बहुला नाम की भार्या थी. श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे, आणंद श्रावक की तरह चुल्लनी शतक भी वंदने गया, धर्मकथा श्रवण की, गृहस्थ का धर्म-व्रत धारन किये, अपनी स्त्री को भी श्रावक व्रत धारन कराया, गौतम स्वामीने प्रश्न किया तैसा ही उत्तर दिया, भगवंतने विहार किया. चुल्लशतक श्रावक बडे पुत्रको गृहभार संभलाकर पौषधशाला

उवसंपज्जित्ताणं विहरंति ॥१॥ तएणं तस्स चुल्लगसयगस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसी एगेदेवे अंतियं पाउब्भवित्ता, जाव असिंग्गहाय एवं वयासी-हंभोच्चूल्लसयग्गा जाव नभंजासि तो ते अज्ज जेट्ठं पुत्तं साओ गिहाओ णीणेमी; एवं जहा चुल्लणीपियं, णवरं एक्केक सत्तमंससोल्लया जाव कणियंसं जाव आइच्चामि ॥ २ ॥ तएणं से चुल्लसए अभीए जाव विहरंति॥३॥तएणं से देवे चुल्लसयं चउत्थंपि एवं वयासी-हंभो चुल्लसयग्गा! जाव नभंजसि तोते अज्ज जाओ इमाओ छहिरण्णकोडीओ, णिहाणपउताओ, छवुडीपउताओ,

अर्थ

में श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी पास अंगीकार किया धर्म विशेष शुद्ध पालता विचरने लगा॥१॥तब चुल्ल शतक के पास आधी रात व्यतीत हुवे एक देवता प्रगट हुआ, कामदेव के अध्ययन में कहा जैसा रूप बनाकर हाथ में खड्ग धारन कर कहने लगा—भो चुल्लशतक! जो व्रत का भंग न करेगा तो तेरे बडे पुत्र को तेरे सन्मुख मारकर उस के मांसके सात टुकडे कर कडाईमे तलकर तेरे शरीर पर छांटूंगा. यों चुल्लनीपिताकी तरह तीनों पुत्रों को मार, इतना विशेष-एकेक के सात २ टुकडे किये कडाइ में तलकर चुल्लशतक के शरीर पर छांटे ॥ २ ॥ तब चुल्ल शतक डरे नहीं यावत् धर्म ध्यान ध्याते हुवे विचरने लगे ॥ ३ ॥ तब वह देव चुल्लशतक से चौथी वक्त यों बोला—भो चुल्लशतक! जो तू व्रत नहीं भंगेगा तो तेरा आज

सूत्र

छपवित्थरपउताओ, सव्वाओ गिहाओ णीणेमि २ त्ता आलंभियाए णयरीए सिंघाडग जाव पहेसु सव्वओ समंत्ता विप्पइरासि, जहणं तुमं अट्ट दोहट्ट वसट्टे अकालेचेव जीवियाओ ववरोवज्जासि ॥ ४ ॥ तएणं से चुल्लगसए तेणंदेवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरति ॥ ५ ॥ ततेणं से देवे चुल्लगसयं अभीयं जाव पासित्ता दोच्चंपि तच्चंपि तहेव भणंति जाव ववरोविज्जासि ॥ ६ ॥ तएणं तस्स चुल्लगसयस्स तेणं देवेणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्त समाणे, अयमेय! रूवे अज्झत्थिए जाव समुपज्जित्था-अहोणं इमे पुरिसे अणारिए जहा चुल्लणिपिता तहा चिंतेति जाव कणियसे जाव आइच्चाति,

अर्थ

यह छे हिरण्य कोडी का द्रव्य निध्यान में है सो, छे कोडी व्यापार में है सो, और छे कोडी का वखेरा है सो यों अठाराही कोडी का द्रव्य ग्रहण कर इस आलंभिका नगरी के त्रीवट चौवट यावत् महा पंथ में चारों तरफ विखर देवूंगा-फेंक देवूंगा; जिस से तू आर्तध्यान ध्याकर दुःखी हो अकाल मृत्यु पावेगा ॥ ४ ॥ तब चुल्लशतक उस देवता का उक्त वचन श्रवण कर डरा नहीं यावत् धर्म ध्यान ध्याता विचरने लगा ॥ ५ ॥ तब वह देव चुल्लशतक को निडरपने धर्म ध्यान ध्याता देख, दो वक्त तीन वक्त कहा तेरा अठारा क्रोड का धन विखेर देवूंगा, जिस से तू अकाल मृत्यु पावेगा ॥ ६ ॥ तब चुल्ल शतक उस देव का दो तीन वक्त उक्त वचन श्रवण कर यों विचारने लगा—अहो

॥ षष्टम अध्ययनम् ॥

सूत्र

छट्ठस्स उक्खेवओ-एवं खलु जंबू ! तेणंकालेणं तेणंसमएणं कंपिल्लपुर नयरे, सहसंबणे उज्जाणे, जित सत्तूराया, कुंडकोलीए गाहावती, पुंसा भारिया॥ छहिरण्ण कोडीनिहाण पउत्ताओ, छ बुड्ढिपउत्ताओ छ पवित्थरपउत्ताओ, छव्वया दसगो साहस्सीएणं वएणं ॥ सामीसमोसढे अहाकामदेवो तहा सावयधम्मं पडिवज्जइ, सेसव्वेवत्तव्वया जाव पडिलाभेमाणे विहरति ॥ १ ॥ तएणं से कुंडकोलिए समणोवासए अन्नयाकायाइ पुव्वावरण्ह काल-

अर्थ

छठे अध्ययन का उक्षेप—यों निश्चय हे जंबू ! उस काल उस समय में कम्पिल्लपुर नगर था, सहश्रम्र उद्यान था, जितशत्रु राजा था, वहां कुंडकोलिक गाथापति रहता था, उसकी पुंसा नामकी भार्या थी, कुंडकोलिक गाथापति के छ हिरन्य कोडीतो निधान में था, छ हिरन्य कोडी व्यापर में था, छ हिरन्य कोडी का घरवखेरा था, दशहजार गाय का एक वर्ग ऐसे छ वर्ग का साठ हजार गौथी, ॥ श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी पधारे, सहश्रम्र उध्यान में अवग्रह ग्रहण कर विचरने लगे, परिषदा दर्शनार्थ आइ कुंडकोलिक गाथापति भी आया, धर्म कथा सुनाई, परिषदा पीछीगइ, कुंडकोलिक गाथापतिने आणंद श्रावक की तरह गृहस्थ धर्म बारा व्रत धारन किया, और सर्व तैसे ही यावत् चवदह प्रकार का दान देता हुवा विचर रहा था, ॥ १ ॥ तब कुंडकोलिया श्रमणो पासक अन्यद

सूत्र

समयंसि (पाठान्तर-पुव्वरत्ता वरत्तकालसमयंसी) जेणेव असोगवणिया, जेणेव पुढविसिला पट्टए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता, नाममुद्दगंच उत्तरिज्जंगंच पुढवीसिलापट्टए ठवेइ २ त्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं पण्णंति उवसंपजित्ताणं विहरंति ॥ २ ॥ तएणं तस्स कुंडकोलियस्स समणोवासयस्स एगेदेवे अंतियं पाउभवित्ता ॥ ३ ॥ तएणं से देवे णाममुद्दगंच उत्तरियंच पुढवीसिला पट्टयाओ गिण्हंति २ त्ता संखिखिणीयं अंतलिक्खं पडिवन्ने कुंडकोलियं समणोवासयं एवं वयासी-हंभो कुंडकोलिया! सुंदरीणं

अर्थ

मूत्र

देवाणुप्पिया ! गोसालस्स मंक्खलिपुत्तस्स धम्मंपण्णत्ती, नत्थिउट्ठाणेइवा, कम्मेइवा, बलेइवा, विरिएइवा, पुरसक्कारपरक्कमेइवा जाव नियतासव्वभावा, मंगूलीणं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मंपण्णत्ती अत्थिउट्ठाणेइवा जाव परक्कमेइवा, अनित्तयासव्वभावा ॥ ४ ॥ तत्तेणं से कुंडकोलिए तं देवं एवं वयासी-जइणं देवाणुप्पिया ! सुंदरी गोसालस्स मंखलि पुत्तस्स धम्मं पण्णत्ती, णत्थि उट्ठाणेइवा जाव णितए सव्व भावा, मंगुलीणं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्म पण्णत्ती अत्थि उट्ठाणेईवा जाव अणितया

अर्थ

जैसा नियत भाव होनहार होता है तैसा ही होता है. और श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी प्ररूपित धर्म अहित कारी है; क्यों कि जिसमें उत्थान कर्म बल वीर्य पुरुषाकार पराक्रम है. अर्थात् सर्वकार्य उद्यम किये सेही होते हैं, ऐसा अनियत भाव है. ॥ ४ ॥ तब कुंडकोलिया श्रावक उस देवताले ऐसा बोला-यदि हे देवानुप्रिय ! गोशाला मंखली पुत्र प्ररूपित धर्म बहुत अच्छा है क्यों कि जिस में उत्थान कर्म बल वीर्य पुरुषात्कार कुछ नहीं है, सब काम होनहार मुजब ही होता है ऐसा नियत भाव है, और श्रमण भगवंत महावीर स्वामी के प्ररूपित धर्म

या नहीं ! ऐसा अजमाना वह बल, ४ उठान वह वीर्य, ५ स्कंध मस्तकादि चिन्हित स्थान रखना वह पुरुषात्कार, और जिस स्थान रखना है पहोंचादेना वह पराक्रम।

सूत्र

सव्वभावा, तुमेणं देवाणुप्पिया ! इमा एयारूवा दिव्वादेविड्ढी, दिव्वादेवजूई, दिव्वे देवाणुभावे किंणालद्धे किणापत्ते किणा अभिसमणागए, किं उट्ठाणेणं जाव पुरिसक्कार परक्कमेणं उदाहु अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसक्कारेणं ? ॥ ५ ॥ तएणं से देवे कुंडको-लियं समणो वासेयं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! इमेयारूवा दिव्वा देविड्ढी अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसक्कार परक्कमेणं लद्धा पत्ता अभिसमणागया ॥ ६ ॥ तएणं से कुंडकोलिय तं देवं एवं वयासी-जइणं देवाणुप्पिया ! तुमे एयारूवे दिव्वा देविड्ढी

अर्थ

अमंगल है क्योंकि जिसमें उत्थान कर्म बल वीर्य पुरुषात्कार पराक्रम है, कार्य किये से होता है ऐसा आनियत भाव है. तो हे देवानुप्रिय ! तुमारे को यह दिव्य देवता सम्बन्धी ऋद्धि, दिव्य देवता सम्बन्धी द्युति-क्रान्ती, दिव्य देवता सम्बन्धी भाव, किस प्रकार मिला है, किस प्रकार प्राप्त हुवा है, किस प्रकार सन्मुख आया है, क्या उत्थान कर्म बल वीर्य पुरुषात्कार पराक्रम के फोडने से मिला है, कि बिना उठान कर्म बल वीर्य पुरुषात्कार पराक्रम फोडने से मिला है कहो ? ॥ ५ ॥ तब वह देव कुंड कोलिक श्रमणोपासक से इस प्रकार बोला—यों निश्चय, हे देवानुप्रिय ! मुझे यह इस प्रकार की दिव्य देवता सम्बन्धी ऋद्धि द्युति-भाव बिना उत्थान कर्म बल वीर्य पुरुषात्कार पराक्रम किये ही मिला है, प्राप्त हुवा है, सन्मुख आया है ॥ ६ ॥ तब कुंडकोलिक श्रावक उस देवता से इस प्रकार बोला—यदि हे देवानुप्रिय ! तुमारे को इस प्रकार

सूत्र

२ जाव अणुट्ठाणेइ जाव अपुरिकारपरिक्कमेइवा लद्धा पत्ता अभिसमन्नायया ॥ जेसिणं जीवाणं नत्थि उट्ठाणेइवा जाव परक्कमेइवा तंकिंणं देवा?अहेणं देवाणुप्पिया ! तुमे इमाएयारूवा दिव्वादेविड्ढी २ उट्ठाणेणं जाव परक्कमेणं लद्धापत्ता अभिसन्नागया, एव न भवति तो जंवदांसि सुंदरीणा गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती, णत्थि उठाणेइवा जाव नितीया सव्व भावा मंगुलीणं ? समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपणत्ती अत्थि उट्ठाणेईवा जाव अणित्तया सव्वभावा तं ते मिच्छा ॥७॥ तएणं से देवे-कुंडलिएणं समणोवासएणं एवंवुत्ते समाणे-संकीए जाव कलुससमावण्णे,

अर्थ

की देवता की ऋद्धि विना उत्थान कर्म बल वीर्य पुरुषात्कार पराक्रम से मिली है, तो जिन जीवों के उत्थान कर्म बल वीर्य पुरुषात्कार पराक्रम नहीं है अर्थात् जो जीव तपसंयमादि करनी नहीं करते हैं वे जीव देवता क्यों नहीं होजाते हैं, इस लिये हे देवानुप्रिय ! तेने यह दिव्य देव सम्बन्धी ऋद्धि द्युति इत्यादि जो प्राप्त की है वह उत्थान यावत् पराक्रम से ही उपलब्ध-प्राप्त हुइ है और इस लिये ही हे देवानुपिया ! जो तु बोला कि-गोसला मंखली पुत्र का धर्म बहुत अच्छा है. विना उत्थानादि, का नीयत भाव प्रमाने होता है और श्रमण भगवन्त श्री महावीर का प्ररूपा धर्म उत्थानादि युक्त यावत् अनीयत भाव का बुरा हैं. यह तेरा कहना मिथ्या है ॥ ७ ॥ तब वह देवता कुंडकोलिक श्रमणोपासक का

नो संचाएति कुंडकोलीए समणोवासयस्स किंचि पामुक्ख मातिक्खितित्ते, नामसुद्दयंग उत्तरिज्जियंच पुढविसिलापट्टए ठवेइ २त्ता जामेव दिसिंपाउब्भूया तामेवदिसिं पडिगया ॥ ८ ॥ तेणंकालेणं तेणंसमएणं सामीसमोसड्ढे ॥ ९ ॥ तत्तेणं से कुंडकोलीए इमीसे कहाएलद्धट्ठे हट्ठ तुट्ठे जहा कामदेवो तहा निग्गच्छति जाव पज्जुवासति ॥ धम्मकहा ॥ कुंडकोलीयाइ, समणे भगवं महावीरं कुंडकोलिय समणोवासयं एवं वयासी-सेनूणं कुंडकोलिया! कल्ल तुब्भं पुव्वावरण्ह कालसमयंसि(पा० पुव्वरत्तवरत्त कालसमयंसि)

उक्त अर्थ श्रवण कर शंकित हुवा कांक्षित हुवा भ्रमर जाल में पडा यावत् चित्त में कलुपता भाव उत्पन्न हुवे. कुंडकोलिक श्रावक को किंचित भी मत्युत्तर देने समर्थ नहीं हुवा,वह नाम कित मुद्रिका और वस्त्र पीछे उस ही स्थान सिलापर रक्खकर जिस दिशा से आयाथा उसदिशा पीछा चलागया ॥८॥ उस काल उस समय में श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी पधारे ॥ ९ ॥ तब कुंडकोलिक श्रावक भगवंत आगम सुन खुशी हुवा जिस प्रकार कामदेव दर्शन करने आया था तैसेही कुंडकोलिक भी आया यावत् सेवा करने लगा. भगवंतने धर्म कथा कही,फिर सर्व परिषदा के सन्मुख कुंडकोलिक से श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी यों कहने लगे हे कुंड कोलिक ! काल-तुमारे पास मध्यान्ह काल में (या आधीरात्रि व्यतीत हुवे) अशोक वाडी में एक

सूत्र

आसोगवणियाए, एगेदेवे अंतियं पाउब्भवित्था, ततेणंसे देवे नाम मुद्दंच जाव पाडिगए, सेण्णूणं कुंडकोलिया ! अट्ठे समट्ठे ? हंताअत्थि ॥ तं धण्णोसिणं तुमे, जहा काम देवो ॥ १० ॥ अज्जोति, समणे भगवं महावीरे णे णिग्गंथाय णिग्गंथीओय आमंतोत्त एवं वयासी-जइताव अज्जो! गिहिणो गिहिमज्झेवसंत्ताणं अण्णउत्थिए अट्ठेहिय हेऊहिय पसिणेहिय कारणेहिय वागरणेहिय णिपट्ठपसिणवागरेणं करेंतए; सक्कापुणाइं अज्जो! समणेहिं णिग्गंथेहिं दुवालसंगं गणिपिडगं अहिज्जमाणेहिं अण्णउत्थिया अट्ठेहिय जाव णिप्पट्ठ पसिणंकरित्तए ॥ ११ ॥ तएणं समणा णिग्गंथाय णिग्गंत्थिओय समणस्स

अर्थ

देवता प्रगट हुवा था यावत् तुमने उस को निरुत्तर किया, तब वह पीछा गया. यह अर्थ है सच्चा है क्या ? कुंडकोलिक बोला—हां भगवन्त ! सच्चा है. भगवानने कहा-हे कुंडकोलिक ! इस लिये तुमारे को धन्य है ? जिस प्रकार कामदेव की प्रशंसा की उसहीं प्रकार इसकी भी प्रशंसा की ॥ १० ॥ अहो आर्यो! श्रमण भगवंत महावीरस्वामीने निग्रन्थ (साधु) ओको और निर्ग्रन्थी (साध्वी) को आमंत्रणकर कहने लगे-यदि हे आर्यों! यह गृहस्थावास में रहा हुवा गृहस्थ ही अन्य तीर्थिक देवता को शास्त्रार्थ कर, हेतु दृष्टान्तकर, प्रश्नोत्तर कर, वचन की वागरणाकर, निरुत्तर निकृष्टकिया, तो हे आर्यो! तुमतो समर्थ हो द्वादशांग शास्त्रके पाठिक हो, तो तुम भी अन्य तीर्थिक को शास्त्रार्थ कर यावत् निकृष्ट-उत्तर रहित करना चाहिये ॥ ११ ॥ तब श्रमण निर्ग्रन्थ

सूत्र
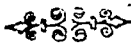
तहा जेट्ठं पुत्तं कुटुंबेट्ठवित्ता, तहा पोसहसालाए जाव धम्मपण्णंति उवसंपजित्ताणं विहराति ॥ एवं एक्कारस्स उवासग पडिमाओ ॥ तहेव सोहम्मेकप्पे अरुणज्झते विमाणे जाव अंतकाहिंति ॥ १५ ॥ निक्खेवो उपासगदसाणं छट्ठं अज्झयणं सम्मत्तं ॥६॥*

अर्थ

महीने की संलेषणा की, साठ भक्त अनशन छेदन कर काल के अवसर काल पूर्ण कर प्रथम सौधर्म देवलोक के अरुणध्वज विमान में देवतापने उत्पन्न हुवा, चार पल्योपम का आयुष्य पाया ॥ १५ ॥ तहां से आयुष्य का भव का स्थिति का क्षय कर महा विदेह क्षेत्र में अवतार ले सिद्ध बुद्ध मुक्त होगा ॥ १६ ॥ निक्षेपं उपाशक दशांग का सूत्र कहना ॥ इति छठा कुंडकोलिक श्रावक का अध्ययन संपूर्ण ॥ ६ ॥

* सप्तम-अध्ययनम् *

सूत्र
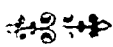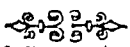
सत्तमस्स उक्खेवो-पोलासपुरनामं नगरे, सहसंबणं उज्जाणं, जियसत्तूराया, ॥ १ ॥ तत्थणं पोलासपुरेणयरे सद्दालपुत्ते नामं कुंभकारे आजीवितोवासए परिवसइ, आजीविय समयंसि लद्धट्ठे, गहियट्ठे, पुच्छियट्ठे, विणिच्छियट्ठे, अभिगयट्ठे, अट्ठिमींजापेमाणुरागरत्तेय; अयमाउसो! आजीवियसमए अट्ठे, अयंपरमट्ठे, सेसे अणट्ठेत्ति; एवं आजीविय समएणं अप्पाणं भवेमाणे विहरई ॥ २ ॥ तस्सणं सद्दालपुत्तस्स आजीवि उवासगस्स

अर्थ

सातवा अध्ययन का उक्षेप-उस काल उस समय में पोलासपुर नामका नगर था, तहां सह श्रम्ब नायका उध्यान था, जित शत्रु नामका राजा था ॥ १ ॥ उस पोलासपुर नगर में सद्दालपुत्र नामका कुंभकार आजिविका पंथी (गोशाले के मतका उपासक) रहता था, आजीविक धर्मका अर्थ को ग्रहण किया था, संदेह सो पुच्छा था, निःसंदेह निश्चितार्थ हुवा था, ग्रहण किये अर्थमें विशेप संज्ञ बना था, उसकी हड्डीयों मींजीयों आजीविका पंथ में प्रेमानुराग रक्त बनीथी, वह कहता था हे आयुष्यमान! आजीविका धर्म है वही अर्थ है, वही परमार्थ है, इससिवाय शेष अनर्थ है, इस प्रकार आजीविका (गोशाले प्रणित) धर्म में अपनी आत्मा को भावता हुवा विचरता था ॥ २ ॥ उस सद्दाल पुत्र आजीविका के उपशाक के एक हिरन्य कोडी निधानमें

सूत्र

अरहाजिणेकेवली, सव्वण्णू सव्वदरिसी, तिलोकहिय महियपूइए, सदेवमणूया सुरस्स लोयस्स अच्चणिच्चे वंदणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे, कल्लाणं मंगलं, देवयं चेइयं जाव पज्जुवासणिज्जे, तवोकम्मं संपया संपउत्ते, तण्णं तुम्मं वंदेज्जाहि जाव पज्जुवासेज्जाहि, पडिहारिएणं पीढफलगासिज्जा संथारएण उवणिमंतेज्जाहिं. दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी-जामेवदिसिं पाउब्भूए तामेवदिसिं पडिगए ॥ ७ ॥ तएणं तस्स सद्दालपुत्तस्स आजीविय उवासगस्स तेणं देवेणं एवं वुत्तसमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिय

अर्थ

अर्हन्त जिनेश्वर केवल ज्ञानी—निर्दोष, तीन लोक के जीवों के अर्चनीक पूज्यनीक सब देवता मनुष्य सुरलोक के अर्चनीक वंदनीय पूज्यनीय कल्यान के करता, मङ्गल के करता, देवाधीदेव यावत् सेवा भक्ति करने योग्य जिनको तपकर्म से प्राप्त हुइ सम्पदा उस युक्त अर्थात् विशुद्ध तप के प्रभाव से घन घातिक कर्म का नाश हो अनन्त चतुष्टय अतिशयादि ऋद्धि के धारक हुवे हैं, वे यहां आवेगे. उनको तू वंदना नमस्कार करना, उनकी सेवा भक्ति करना, उन को पाडिहारे (पीछे ग्रहण किये जाते ऐसे) पाट पाटले मकानकी आमंत्रणा करना. इस प्रकार वह देवता दोतीनवक्त कहकर जिसादिशासे आया उस दिशा (देवस्थान)में पीछा गया ॥७॥ तब सद्दालपुत्र अजीविका उपाशक उसदेव के पास उक्त कथन श्रवनकर मन में विचार करने लगा-

ते रायमग्गंसि वित्तंकप्पेमाणा विहरंति ॥ ४ ॥ तत्तेणं से सद्दालपुत्ते आजीवितोवासए अण्णयाकयाइ पुव्वावरणकाल समयंसि (पाठान्तर-पुव्वरत्तावरत्त कालसमयंसि) जेणेव आसोगवणिया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अंतिय धम्मं पण्णति उवसंपजित्ताणं विहरंति ॥५॥ तएणं तस्स सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स एगेदेवं अंतियं पाउब्भवित्था ॥ ६ ॥ ततेणं से देवे अंतलिक्ख पडिवन्ने सखिंखिणि-याइंवत्था जाव पवरपरिहिए सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी-एहीतिणं देवाणुप्पिया! कल्लं इह महामाणे उप्पण्णणाण दंसणधरे, तीयप्पडुप्पणमणागयं जाणए,

सूत्र

अरहाजिणेकेवली, सव्वण्णूसव्वदरिसी, तिलोकहिय महियपूईए, सदेवमणूया सुरस्स लोयस्स अच्चणिज्जे वंदणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे, कल्लाणं मंगलं, देवयं चेइयं जाव पज्जुवासणिज्जे, तवोकम्मं संपया संपउत्ते, तण्णं तुम्मं वंदेज्जाहि जाव पज्जुवासेज्जाहि, पडिहारिएणं पीढफलगसिज्जा संथारएण उवणिमंतेज्जाहिं. दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी-जामेवदिसिं पाउब्भूए तामेवदिसिं पडिगए ॥ ७ ॥ तएणं तस्स सद्दालपुत्तस्स आजीविय उवासगस्स तेणं देवेणं एवं वुत्तसमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए

अर्थ

अर्हन्त जिनेश्वर केवल ज्ञानी–निर्दोष, तीन लोक के जीवों के अर्चनीक पूज्यनीक सब देवता मनुष्य सुरलोक के अर्चनीक वंदनीय पूज्यनीय कल्यान के करता, मङ्गल के करता, देवाधीदेव यावत् सेवा भक्ति करने योग्य जिनको तपकर्म से प्राप्त हुइ सम्पदा उस युक्त अर्थात् विशुद्ध तप के प्रभाव से घन घातिक कर्म का नाश हो अनन्त चतुष्टय अतिशयादि ऋद्धि के धारक हुवे हैं, वे यहां आवेगे. उनको तू वंदना नमस्कार करना, उनकी सेवा भक्ति करना, उन को पाडिहारे (पीछे ग्रहण किये जावे ऐसे) पाट पाटले मकानकी आमंत्रणा करना. इस प्रकार वह देवता दोतीनवक्त कहकर जिसदिशासे आया उस दिशा (देवस्थान)में पीछा गया ॥७॥ तब सद्दालपुत्र अजीविका उपाशक उसदेव के पास उक्त कथन श्रवनकर मन में विचार करने लगा-

सूत्र

जाव समुप्पन्ने-एवं खलु मम धम्मायरिए धम्मोवएसए गोसाले मंखलीपुत्ते, से णं महामाणे उप्पण्णणाणं दसणधरे जाव तवोकम्मं संपयासंपओते, सेणं कल्लं इहं हव्वमा-गच्छिस्संति, तत्तेणं अहं वंदिस्सामि जाव पज्जुवासामि, पाडिहारिगणं जाव उवनिमं-त्तिस्सामि ॥ ८ ॥ तत्तेणं कल्लं जाव जलंते समणे भगवं महावीरे जाव समोसड्ढे, परिसाणिग्गया जाव पज्जुवासंति ॥९॥ तएणं से सद्दालपुत्ते आजीविय उवासय इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे-एवं खलु समणे भगवं महावीरे जाव विहरंति, तं गच्छामिणं समणं भगवं महावीरं वंदामी नमंसामी जाव पज्जुवासामी, एवं संपेहेति २ त्ता ण्हाए जाव

अर्थ

यों निश्चय मेरे धर्माचार्य धर्मोपदेशक गोशाला मंखली पुत्र वे ही महामहान उत्पन्न ज्ञान दर्शन के धारक यावत् तप कर्म से सम्पदा को प्राप्त करनेवाले हैं, वे यहां काल प्रातःकाल में आवेंगे तब मैं उन को वंदना नमस्कार करूंगा यावत् उन की सेवा भक्ति करूंगा; पाडिहारे पाट पाटले देवूंगा ॥ ८ ॥ तब प्रातः काल होते श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे, परिषदा दर्शनार्थ आई. सेवा भक्ति करने लगी ॥९॥ तब सद्दाल पुत्र आजीविका उपाशक भगवंत पधारने की वारता श्रवण कर अवधार कर विचार करने लगा-यों निश्चय श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे हैं यावत् तप संयम से आत्मा भावते विचर रहे हैं, इस लिये मैं जावूं. श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार करूं. यावत् सेवा भक्ति करूं. यों

सूत्र

पायच्छित्त सुद्धप्पावेसाइं जव अप्पमहग्घाभराणालंकीय सरीरे, मणुस्सवग्गुरा परिगते, सातो गिहातो पडिनिग्गच्छति २ त्ता पोलासपुरं नगरं मज्झं मज्झेणं निगच्छति २त्ता जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २त्ता तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेति वंदति नमंसति२त्ता जाव पज्जुवासंति ॥ १० ॥ तत्तेणं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तस्स आजीविय उवासगस्स तीसेमहाति महालयाए जाव धम्मंकहेइ,जावधम्मकहासमत्ता॥ ११॥सद्दालपुत्ताई, भगवं महावीरे सद्दालपुत्तं आजीवियउवासयस्स एवं वयासी-सेणूणं सद्दालपुत्ता ! कल्लं

अर्थ

विचार कर स्नान किया यावत् शुद्ध हुवा अच्छे स्थान में प्रवेश करने योग्य अल्पभार बहुत मूल्यवाले वस्त्रालंकार से शरीर को अलंकृत किया, बहुत मनुष्यों के परिवार से परिवरा हुवा अपने घर से निकला, निकलकर पोलास पुर नगर के मध्य (बजार) में होकर जहां सहस्राम्र उद्यान जहां श्रमण भगवंत महावीर स्वामी थे तहां आया, आकर तीन वक्त हाथ जोड प्रदक्षिणावर्त फिरकर वंदना नमस्कार किया, वंदना नमस्कार कर सेवा भक्ति करने लगा ॥ १० ॥ तब श्रमण भगवन्त महावीर स्वामीने सद्दाल पुत्रको और उस महापरिषदा को धर्मकथा सुनाई ॥ ११ ॥ सद्दाल पुत्र से श्रमण भगवंत महावीर स्वामी यों कहने लगे-निश्चय हे सद्दाल पुत्र ! कल दो प्रहर दिन व्यतीत हू वे (या आधीरात्रि व्यतीत हुवे) जहां आशोक

सूत्र

तुमं पुव्वावरण्हकाल (पुव्वरत्तवरत्तकाल) समयंसि जेणेव आसोगवणिया जाव विहरंति, तएणं तुब्भंएगे देवे अंतियं पाउब्भविच्चा, तत्तेणं से देवे अंतरिक्ख पडिवण्णे एवं वयासी-हंभो सद्दालपुत्ता ! तंचेव सव्व जाव पज्जुवासिस्सामि, से सेणूणं सद्दालपुत्ता ! अट्ठे समट्ठे ? हंता अत्थि ॥ १२ ॥ तं नो खलु सद्दाल पुत्ता ! तेणं गोसालं मंखलीपुत्तं पणिहाय, एवं वुत्ते ॥ १३ ॥ तएणं तस्स सद्दाल पुत्तस्स समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्त समणस्स, इमेयारूव अज्झत्थिाए जाव समुपज्जित्था—एसणं समणे भगवं महावीरे महामहाणे, उप्पण्ण णाण दंसणधरे जाव

अर्थ

वाडी है तहां तू जाकर यावत् अपनी आत्मा को भावता विचरता था, उस वक्त तेरे पास एक देवता प्रगट हुवा, सर्व व्यतीकर कह सुनाया, यावत् सेवा भक्ति करना ऐसा कहकर वह देव जिस दिशा से आया था, उस दिशा पीछा गया, यह अर्थ योग्य है सत्य हैं ? सद्दाल पुत्र बोला-हां भगवान ! सत्य है॥१२॥ इसलिये निश्चय, हे सद्दाल पुत्र ! उस देवताने गोशाला मंखली पुत्र का आगम दरशाया नहीं था ॥ १३ ॥ तब सद्दाल पुत्र श्रमण भगवंत महावीर स्वामी के उक्त वचन श्रवण कर इस प्रकार अध्यवसाय यावत् उत्पन्न हुवा, यह श्रमण भगवंत महावीर ही महामहान हैं, उत्पन्न ज्ञान दर्शन के धारक हैं, तप कर्म से सम्पदा इन को ही प्राप्त हुइ है, इसलिये मुझ श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार करना यावत्

सूत्र
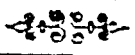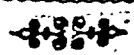
तवोकम्मं संपया संपउत्ते, तं सेयं खलु ममं समणं भगमं महावीरं वंदित्ता नमंसित्ता, पाडिहारिएणं पीढफलग सेज्जासंथार जाव उवानिमंति?, एवं संपेहेति २त्ता उट्ठाए उट्ठे-ति२त्ता समणं भगवं महावीरं वंदाति नमंसाति २त्ता एवं वयासी-एवं खलु भंते ! ममं पोलास पुरस्स नगरस्स वहिया पंचकुम्भकारा वणसया तत्थणं तुब्भे पाडिहारियं पीढफलग जाव संथारयं ओगिण्हित्ताणं विहरह ॥ १४ ॥ ततेणं समणे भगवं महावीरे सद्दाल-पुत्तस्स आजीवि ओवासगस्स एयमट्ठं पडिसुणेति २त्ता, सद्दालपुत्तस्स अजीविओवासगा-स पंचकुंभकारा वणसयेसु फासूएसणिज्जं पाडिहारियं पीढफलग जाव संथारयं ओगिण्णि-

अर्थ

पाडिहारे पाटपाटले स्थानक बिछाना की आमंत्रना करना श्रेय है, यों विचार कर उठा—खडा हुवा, सदा हो श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर यों कहने लगा—यों निश्चय, अहो भगवन् ! पोलास पुर नगर के बाहिर मेरी पांच सो दुकानों हैं, उन में से आपको पाडिहारा पाटपाटले शैय्या संथारक रजोहरण वगैरा चाहिये सो ग्रहण कर विचरना ॥१४॥ तब श्रमण भगवंत महावीर स्वामी सद्दालपुत्र आजीविका उपासक का उक्त कथन सुना-मान्य किया, सद्दालपुत्र की पांचसो कुंभकार की दुकानों में से फासुकनिर्जीव एषणिक-निर्दोष पाडिहारा पाट पाटला स्थानक बिछोना-पराल ग्रहण कर

सूत्र

याणं विहरंति ॥ १५ ॥ तत्तेणं सद्दालपुत्ते आजीविओवासए अन्नया कयाई वाया हयंवा कोलालभंडं अंतोसालाहिंतो बहियानीणेति २ त्ता आयवंसि दलयंति ॥ १६ ॥ तत्तेणं समणंभगवं महावीरे सद्दालपुत्तस्स आजीवियंओवासयस्स एवं वयासी-सद्दालपुत्ता! एसणं कोलालभंडे कओ ? ॥ १७ ॥ तत्तेणं सद्दालपुत्त समणं भगवं महावीरं एवं वयासी-एसणं भंते ! पुव्विं मट्टिया आसी, तओपच्छा उदएणं निमिज्जति २ त्ता छारेणय करिसेणय एगयओ मीसिज्जतिए २ त्ता, चक्के आरुहिज्जति, तत्तोवहवेकारगाय जाव उवट्टियाओय कज्जंति ॥१८॥ तत्तेणं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तं आजीवि

अर्थ

विचरने लगे ॥ १५ ॥ तब सद्दालपुत्र आजीविका उपाशकने अन्यदा किसी वक्त वायु में सूर्य के आताप में सुकाने वरतनो अंदर मकान में से निकाल कर बाहिर रक्खे थे. धूप के आताप में दिये थे ॥ १६ ॥ तब श्रमण भगवंत महावीर स्वामी सद्दालपुत्र आजीविका उपासक से ऐसा बोले-हे सद्दालपुत्र! यह मट्टीके वरतन कैसे बने हैं ? ॥ १७ ॥ तब सद्दालपुत्र श्रमण भगवंत महावीर स्वामी से यों कहने लगा-अहो भगवान ! यह प्रथम मट्टीरूपथे, उस मट्टीको पानीमें मिलाइ छारलीद उस में मिश्रितकर खूंदकर चाकपर चढाइ, तब बहुत लोटे यावत् कुंदाकार वरतन बने ॥ १८ ॥ तब श्रमण भगवंत महावीर स्वामी सद्दालपुत्र से आजीविका उपाशक

सूत्र

ओवागरस एवं वयासी-सद्दालपुत्ता! एसणं कोलालं भंडे किं उट्ठाणेणं कम्मेणं बलेणं विरीयेणं
पुरिसकार परक्कमेणं कज्जं उदाहु अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसक्कार परक्कमेणं कज्जंति ? ॥ १९ ॥
तएणं सद्दालपुत्तो आजीविय ओवासए समणं भगवं महावीरं एवं वयासी-भंते ! अणुट्ठाणेणं
जाव अपुरिसकार परक्कमेणं कज्जति, णत्थि उट्ठाणेतिवा जाव परकमे तिवा, णियत्तया सव्व-
भावा॥ २० ॥तएणं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तं एवं वयासी-सद्दालपुत्तो ! जइणं तुब्भे
केइ पुरिसे वाताहयंवा पक्केल्लयंवा जाव कोलालभंडं अवहरेज्जवा, विक्खरिज्जवा, भिंदेज्जवा,

अर्थ

से ऐसा बोले-हे सद्दालपुत्र ! यह मट्टीसे वरतन हुवे सो क्या उत्थान कर्म बलवीर्य पुरुषात्कार पराक्रम फोडने से हुवे कि विना उत्थान कर्म बलवीर्य पुरुषात्कार पराक्रम के फोडे बने कहो ? ॥ १९ ॥ तब सद्दालपुत्र आजीविका उपाशक श्रमण भगवंत महावीर स्वामी से ऐसा बोला-अहो भगवान ! यह विना उत्थान कर्म बलवीर्य पुरुषात्कार पराक्रम किये ही होनहार होतवता के योग्य से बने हैं, इस में उत्थान कर्म बलवीर्य पुरुषात्कार पराक्रम का कुछ भी प्रयोजन नहीं है, इन का बनने का ऐसा ही सद्भाव था ॥२०॥ तब श्रमण भगवंत महावीर स्वामी सद्दालपुत्र से ऐसा बोले—हे सद्दालपुत्र ! यदि कोई पुरुष हवा में दिये पक्के हुवे मट्टीके वरतनो का हरनकरे-चोरीकर लेजावे, या फोड डाले, भेदे-विभागकरे, छेदे-छिद्रकरे, यावत् एकान्त

अच्छिदेज्जवा, परिठवेज्जवा, अग्गिमित्ताएवा भारियाए सद्धिं उरालाइं भोगाभोगाइं विहरेज्जवा; तस्सणं तुम्मं पुरिसस्स किं दंडं दत्तेज्जाति? ॥ २१ ॥ भंते! अहण्णं तं पुरिसे आओसेज्जवा हणेज्जवा, वंधिज्जवा, महेज्जवा, तज्जेज्जवा, तालेज्जवा णिच्छोडेज्जवा, णिब्भच्छेज्जवा, अकालेचेव जीवियाओ ववरोविज्जवा ॥ २२ ॥ सद्दालपुत्ता ! नो खलु तुब्भं केइ पुरिसे वातहयंवा पक्केल्लयंवा कोलालभंडं अवहरेतिवा जाव परिट्ठवेतिवा, अग्गिमित्ताए भारियाए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरंति, नोवा तुमं तं पुरिसं आओसेज्जसि हणेज्जासि जाव अकालेचेव जीवियाओ ववरोविज्जसि; जइणं णत्थिउट्ठाणेतिवा

में डालदेवे, अथवा तेरी अग्निमित्रा भार्या के साथ उदार प्रधान मनुष्य सम्बन्धी भोग भोगता विचरे; उस पुरुष को तू क्या दंड देवे ! ॥ २१ ॥ सद्दालपुत्र बोला—अहो भगवान ! मैं उस पुरुषपर अक्रोशकरूं दंडादिसेमारूं, बंधन में डालूं, ताडनाकरूं, निभ्रच्छु-चपेटादिलगावूं और अकाल में ही जीवित के रहित करूं अर्थात उसे मारडालूं ॥ २२ ॥ भगवंत बोले—हे सद्दालपुत्र ! कोई पुरुष तेरे वायु मे दिये पक्कहुवे मटीके बरतनो का हरनकरे नहीं, यावत् एकान्त में फेंके नहीं, तेही अग्निमित्रा भार्या के साथ भोग भोगवे नहीं तो उस पुरुषपर तू अक्रोशकरे नहीं मारे नहीं यावत् अकालमें जीवित रहितकरे नहीं. तो यदि उत्थाकर्म यावत् पराक्रम नियत-होनहार के स्वभाव से सब काम होते हैं तो किस लिये तुझे धूप में दिये मट्टी के बरतन

जाव परक्कमेतिवा णितियासव्वभावा. अहणं तुब्भे केई पुरिसे वातावयंवा जाव परिट्ठवेतिवा, अग्गिमित्ताएवा जाव विहरंति, तुमंवा तं पुरिसं आओसंसिवा जाव ववरोविजसि, तो जं वदासि णत्थि उट्ठाणेतिवा जाव णितियासव्वभावा तं तेमिच्छा ॥ २३ ॥ एत्थणं सद्दालपुत्ते संबुद्धे, ॥२४॥ तएणं सदालपुत्ते ! समणं भगवं महावीरं वंदति नमसंति२त्ता एवं वयासी-इच्छामिणं भंते ! तुब्भेणं अंतियं धम्मणिसामित्तए ॥२५॥ तएणं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तस्स तीसेयमहई महाधम्मं परिकहेई ॥ २६ ॥ तत्तेणं से सद्दालपुत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ

को चोरनेवाले को यावत् एकान्तमें परिठनेवाले को और अग्निमित्रा भार्या साथ भोग भोगवनेवाले उस पुरुषपर अक्रोश करना चाहिये यावत् जीव रहित करना चाहिये क्योंकि तूं कहता है कि नहीं है उत्थान कर्म यावत् पराक्रम सब नियत स्वभाव-होनहार होतबसेही होता है, तो तेरा उक्त कथन मिथ्या है ॥ २३ ॥ इतना महावीर स्वामी का वचन श्रवण कर सद्दाल पुत्र तहां प्रतिबोध पाया—समझा ॥ २४ ॥ तब सद्दाल पुत्र श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर ऐसा बोला—अहो भगवंत ! मैं आपके पास धर्म श्रवण करना चाहता हूं ॥ २५ ॥ तब श्रमण भगवंत महावीर स्वामी इस सद्दाल पुत्र को और वहां रही हुई महा परिषदा को धर्म कथा सुनाई ॥ २६ ॥ तब सद्दाल पुत्र श्रमण भगवंत महावीर स्वामी के पास धर्म श्रवण

गवंटिया जालपरिगयं सूजाय जुगलजोत्तओ उज्जुगपसत्थं सुविरय निम्मियं पवरलक्ख-णोववेयं जुत्तामेव धम्मियं जाणप्पवरं उवट्ठवेह २त्ता मम एयमाणत्तिय पच्चुप्पिणह॥ २९॥ तएणं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति ॥ ३० ॥ तएणं सा अग्गिमित्ता भारिया ण्हाया जाव पायच्छित्ता सुद्धप्पवेसाइं अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा, जाव चेडिया चक्कवाल परिकिण्णा धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहति २त्ता पोलासपुरं णयरं मज्झं मज्झेणं नि-गच्छइ २त्ता जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ २त्ता, धम्मिया तो जाणातो पच्चोरुहति २ त्ता चेडिया चक्कवाल परिवुडा जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव

कारीगर का बनाया जाल सीधा जिस का सुंदरा होवे, प्रशस्त अच्छे घाट (आकार) वाल्दा, अच्छे लक्षणवाला धर्म रथ को जोत कर यहां लाकर स्थापन करो, यह मेरी आज्ञा पीछी मेरे सुपरत करो ॥२९॥ तब उस कौटुम्बिक पुरुषने उस ही प्रकार का धर्म रथ सजाकर यावत् लाकर खडा किया आज्ञा पीछी सुपरत की ॥ ३० ॥ तब अग्नि मित्रा भार्याने स्नान कर शुद्ध हुई, शुद्ध उत्तम स्थान में प्रवेश करने योग्य अल्पाधार बहुत मूल्यवाले वस्त्र भूषण कर शरीरको अलंकृत किया, अठारह देश की दासीयों के चक्रवाल से वेष्टित हुई धर्म रथ पर आरुढ हो पोलास पुर नगर के मध्य २ में होकर जहां सहस्राम्र उद्यान था तहां आई, रथ में से नीचे उतरी, दासीयों के चक्रवाल से घेराइ हुई जहां श्रमण भगवंत महावीर स्वामी थे तहां

सूत्र

उवागच्छइ २ त्ता तिक्खुत्तो जाव वंदाति नमंसाति वंदित्ता नमंसित्ता णच्चासण्णे जाव पंजली उडा ठिइया चेव पज्जुवासंति॥ ३१॥तएणं समणे भगवं महावीरे अग्गिमित्ताए तीसेय जाव धम्मं कहेति॥ ३२॥ तत्तोणं सा अग्गिमित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मसोच्चा निसम्म हट्ठ तुट्ठा, समणं भगवं महवीरं वंदाति नमंसइ २ त्ता एवं वयासी-सद्दहामिणं भंते ! निग्गंथपावयणं जाव से जहेयं तुब्भे वदह, जहाणं देवाणुप्पियाणं अंतिए वहवे उग्गा भोगा जाव पव्वईया, नो खलु अहं तहा संचाएमि, अहणं देवा-णुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वय सत्तासिक्खाव्वयं दुवालसविहं गिहि धम्मं पडिवज्जीसामि॥

अर्थ

आई, आकर तीन वक्त वंदना नमस्कार किया, वंदना नमस्कार कर नमूभूत हो खडी हुइ भगवंत की सेवा भक्ति करने लगी॥ ३१॥ तब श्रमण भगवंत महावीर स्वामी उस अग्नि मित्रा भार्या को उस महा परिषध को धर्मकथा सुनाई॥ ३२॥ तब अग्नि मित्रा श्रमण भगवंत महावीर स्वामी के पास धर्म श्रवण कर हृष्ट तुष्ट हुई. श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर यों कहने लगी— अहो भगवान ! मैंने निर्ग्रन्थ के प्रवचन, श्रद्धे है जैसा आपने कहा वह सत्य है, यद्यपी देवानुप्रिया की समीप्य बहुत राजा ईश्वर यावत् मुण्डित होते हैं दीक्षा धारन करते हैं, तद्यपी मैं समर्थ नहीं हूं दीक्षालेने, मैं तो देवानुप्रिया ! की समीप पांच अनुव्रत सात शिक्षाव्रत चार प्रकार का गृहस्थ का धर्म अङ्गीकार करना

अहासुहं जाव मापडिबंध करेह॥ २३॥ तएणं सा अग्गिमित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतीए पंचाणुव्वइयं जाव गिहधम्मं पडिवज्जइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वं-दित्ता नमंसित्ता धम्मीयाजाणं दुरुहंति जामेवदिसिं पाउब्भूया तामेवदिसिं पडिगया॥॥ २४॥ तएणं समणे भगवं महावीरे अण्णयाकयाइ पोलासपुराओ सहस्संबवण उज्जाणओ निग्गछंति २ त्ता बहिया जणवयविहारं विहरंति ॥ २५॥ तएणं से सद्दालपुत्ते समणो वासएजाए अभिगय जीवाजीवे जाव विहरंति ॥ २६ ॥ तएणं गोसाले मंक्खलीपुत्त इमीसे कहाए लद्धट्ठ समाणे-एवं खलु-सद्दालपुत्ते आजीवियसमयं चइत्ता समणाणं

सूत्र

णिग्गंथाणं दिट्ठिं पडिवण्णे,तं गच्छामिणं सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं समणाणं निग्गंथाणं दिट्ठिवामेत्ता, पुणरवि आजीवियदिट्ठिं गिण्हाविताए त्तिकट्टु,एवं संपेहेति २त्ता अजीविये संघसंपरिवुडे जेणेव पोलासपुरे णगरे जेणेव आजीवियसभा तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अजीवियसभाए भंडगणिक्खेवं करेति २ त्ता कितिवएहं अजीविएहिं सद्धिं जेणेव सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणेव उवागच्छइ२त्ता ॥ ३७ ॥ तएणं सद्दाणपुत्ते समणो वासए गोसालं मंखलिपुत्तं एजमाणं पासंति नो आढाइति णो परिजाणाई आणाढाईजमाणे अपरिजाणमाणे तुसणीए संचिट्ठंति ॥ ३८ ॥ तएणं से गोसाले मंखलिपुत्ते

अर्थ

सद्दाल पुत्र को श्रमण निर्ग्रन्थ का धर्म का वमनकरा [छोडाकर] पुनरपी आजीविका पंथ धारन करावूं, यों विचार कर आजीविका संघ के साथ परिवरा हुवा जहां पोलास पुर नगर, जहां आजीविका पंथीयों की सभा [स्थानक] था तहां आया, आकर आजीविका पंथ की सभा में भंडोपकरण की स्थापना कर कितनेक आजीविका पंथीयों को साथमें लेकर जहां सद्दालपुत्र श्रमणोपासक था तहां आया ॥३७॥ तब सद्दाल पुत्र श्रमणोपासकने आजीविका पंथी गोशाला को आता हुवा देखा, उस का आदर सत्कार नहीं किया, अच्छा भी नहीं जाना, अनादर करता, अच्छा नहीं जानता मौनस्थ रहा ॥ ३८ ॥ तब वह

सूत्र

सद्दालपुत्तेणं समणोवासएणं अणाढाईज्जमाणे अपरिजाणमाणे, पीढफलगसिज्जासंथारएट्ठाए समणस्स भगवओ महावीरस्स गुणकित्तणं करेति॥ ३९॥ सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी-आगएणं देवाणुप्पिया! इहं माहामहणे ? ॥ तएणं से सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसालं मंक्खलीपुत्तं एवं वयासी-केणं देवाणुप्पिया महामाहणे?॥ ततेणं गोसाले मंखलीपुत्ते सद्दालपुत्तं समणोवासएणं एवं वयासी-समणे भगवं महावीरे महामाहणे ? से केणट्ठेणं देवाणुप्पिया ! एवं उच्चति-समणे भगवं महावीरे महामाहणे?॥एवं खलु सद्दालपुत्ता! समणे भगवं महावीरं महानाहणे उप्पण्णणाण दंसणधरे जाव महियपूइए जाव तवो कम्मं संपया

अर्थ

गौशाला मंखली पुत्र सद्दाल पुत्र श्रमणोपासक से अनादर पाया हुवा असत्कार पाया हुवा भी पाट पाटले स्थान पीछोना के लिये श्रमण भगवंत महावीर स्वामी के गुण कीर्तन करने लगा ॥ ३९ ॥ सद्दालपुत्र श्रावक से यों बोला हे देवानुप्रिय!, यहां महा महान(महादयालु)आये थे क्या?तब गौशाला मंखली पुत्रसे सद्दालपुत्र यों बोला-अहो देवानुप्रिय!कौन महा महान ? तब गोशाला मंखली पुत्र सद्दाल पुत्र श्रमणोपासक से यों बोला—श्रमण भगवंत महावीर स्वामी महा महान; तब सद्दाल पुत्र बोला—अहो देवानुप्रिय ! किस कारण ऐसा कहा श्रमण भगवंत महावीर स्वामी महा महान ? तब गोशाला मंखली पुत्र बोला—यों निश्चय, हे देवानुप्रिय ! श्रमण भगवंत महावीर स्वामी केवल ज्ञान केवल दर्शन के धारक यावत् तीन लोक के वंदनीक पूजनीक यावत् तप

सूत्र

संपउत्ते, से तेणट्ठेणं देवाणुप्पिया! एवं उच्चति समणे भगवं महावीरे महामाहणे॥ ४० ॥ आगएणं देवाणुप्पिया ! इहं महागोवे ? केणं देवाणुप्पिया ! महागोवे? समणे भगवं महावीरे महागोवे ॥ से केणट्ठेणं देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे महागोवे ? ॥ एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे संसाराडवीए बहवे जीवे तस्समाणे विणस्ससाणे खजमाणे छिज्जमाणे भिज्जमाणे लुप्पमाणे विलुप्पमाणे धम्ममएणं दंडेणं संरक्खमाणे, संगोवेमाणे निव्वाण महावाडे साहत्थि संपावेति, से तेणट्ठेणं सद्दालपुत्ता ! एवं वुच्चइ

अर्थ

कर्म की सम्पदा युक्त, इसलिये हे देवानुप्रिय ! मैंने ऐसा कहा कि श्रमण भगवंत महावीर स्वामी महा-महान अर्थात् परमदयालु हैं ॥ ४० ॥ फिर गौशाला मंखली पुत्र बोला—हे देवानुप्रिय ! यहां महा गोप (गुवाल) आये थे क्या ? सद्दाल पुत्र बोला—कौन देवानुप्रिय ! महा गोप ? गौशाला मंखली पुत्र बोला—श्रमण भगवंत महावीर स्वामी महा गोप. सद्दाल पुत्र बोला—किस कारन श्रमण भगवंत महावीर स्वामी महा गोप हैं ? गोशाला मंखली पुत्र बोला—यों निश्चय, हे देवानुप्रिय ! श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी संसार रूप अटवी में बहुत जीव त्रास पाते, विनाश पाते, क्षय होते, छेदित भेदित होते, लुप्त होते, विलुप्त होते इस प्रकार कर्म से पीडाते हुवे को धर्म रूप दंड (लकडी) कर रक्षा करते हैं, मोक्ष रूप बाडे में भरते हैं, मोक्ष स्थान प्राप्त कराते हैं, इस लिये हे सद्दाल पुत्र ! मैंने ऐसा कहा कि—श्रमण भगवंत

सूत्र

समणे भगवं महावीरे महागोवे॥४१॥आगएणं देवाणुप्पिया! इहं महासत्थवाहे? केणं देवाणुप्पिया महासत्थवाहे? सद्दालपुत्ता! समणे भगवं महावीरे महासत्थवाहे ॥ से केणट्ठेणं देवाणुप्पिया समणे भगवं महावीर महासत्थवाहे? एवं खलु देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे संसाराडवीए बहवे जीवे तस्समाणे जाव विलुप्पमाणे उम्मग्गपडिवण्णे धम्मंमएणं पंथेणं संरक्खमाणे णिव्वाणं महापट्टणंसि साहत्थि संपावेति, से तेणट्ठेणं सद्दालपुत्ता! एवं वुच्चति समणे भगवं महावीरे महासत्थवाहे ॥ ४२ ॥ आगएणं देवाणुप्पिया!

अर्थ

महावीर स्वामी महा गोपाल हैं ॥ ४१ ॥ फिर गौशाला मंखली पुत्र बोला—हे देवानुप्रिय! यहां महा सार्थवाही आये थे क्या? सद्दाल पुत्र बोला—हे देवानुप्रिय! कौन महा सार्थवाही हैं? गौशाला मंखली पुत्र बोला—श्रमण भगवंत महावीर स्वामी महा सार्थवाही हैं. सद्दाल पुत्र बोला—किस कारन श्रमण भगवंत महावीर स्वामी महा सार्थवाही? गोशाला मंखली पुत्र बोला—यों निश्चय, श्रमण भगवंत महावीर स्वामी संसार अटवी में बहुत जीवों त्रास पाते हैं यावत् विशेष लुप्त होते हैं: सन्मार्ग छोड उन्मार्ग में प्रवर्तते हैं, उन को धर्म रूप मार्ग में लगाकर निर्वान रूप महा पाटन में पहोंचाते हैं, संप्राप्त करते हैं, इसलिये हे सद्दाल पुत्र! मैंने ऐसा कहा कि—श्रमण भगवंत महावीर स्वामी महा सार्थवाही हैं ॥४२॥ फिर गौशाला मंखली पुत्र बोला-हे देवानुप्रिय! यहां महा धर्मकथक [महावक्ता] आये थे क्या? सद्दाल पुत्र

सूत्र

इहं महधम्मकही ? केणं देवाणुप्पिया ! महाधम्मकही ? समणे भगवं महावीरे महा धम्मकही ॥ से केणट्ठेणं समणे भगवं महावीरे महाधम्मकही ? एवं खलु देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे महाति महालयंसि संसारंसि बहवे जीवे तस्समाणे विणस्स-खज-छिज्ज-भिज्ज-लुप्प-विलुप्पमाणे उम्मग्गपडिवण्णे सप्पह विप्पणट्ठे मिच्छत्त बलाभिभूए अट्ठविह कम्म तम पडल पाडिछन्ने, बहुहिं अट्ठेहिय जाव वागरणेहिय चाउरंताओ संसारकंताराओ साहत्थी णित्थारेति, से तेणट्ठेणं देवाणुप्पिया एवं वुच्चति

अर्थ

बोला—कौन देवानुप्रिय ! महा धर्म कथक ? गौशाला मंखली पुत्र बोला—श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी महा धर्म कथक हैं ? सद्दाल पुत्र बोला—किस कारन श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी महा धर्म कथक हैं ? गोशाला मंखली पुत्र बोला—हे सद्दाल पुत्र ! यों निश्चय ? श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी संसार रूप अटवी में बहुत से जीवों त्रास पाते हैं यावत् लुप्त होते हैं, सन्मार्ग को छोड उन्मार्ग में प्रवृतते हैं, सन्मार्ग से नष्ट होते हैं, मिथ्यात्व रूप प्रबल बल से पराभव पाये आठ प्रकार कर्म रूप महा अन्धकार में घेराये हुवे उन को बहु विस्तारवाले अर्थ की वागरना करके चतुर्गति रूप संसार कंतार अटवी से स्वहस्त कर पार पहोंचाते हैं, इसलिये हे देवानुप्रिय ! मैंने ऐसा कहा श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी

सूत्र

समणे भगवं महावीरे महाधम्मकही॥ ४३ ॥ आगएणं देवाणुप्पिया ! इहं महानिज्जामए? से केणं देवाणुप्पिया ! महानिज्जामए ? समणे भगवं महावीरे महाणिज्जामए ॥ से केणट्ठेणं समणे भगवं महावीरे महाणिज्जामए ? एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे संसारमहासमुद्दे बहव जीवे तस्समाणे विणस्समाणे जाव विलुप्पमाणे वुड्डमाणे निवुड्डमाणे उप्पियमाणे धम्म मइए नावाए णिव्वाणंतीराभिमुहे साहित्थि संपाविंत्ति, से तेणट्ठेणं देवाणुप्पिया ! एवं वुच्चति समणे भगवं महावीरे महानिज्जामए ॥ ४४ ॥ तएणं से

अर्थ

महा धर्म कथक (महा वक्ता) हैं ॥ ४३ ॥ फिर गोशाला मंखली पुत्र बोला—हे देवानुप्रिय ! यहां महा निर्यामक आये थे क्या ? सद्दाल पुत्र बोला—कौन महा निर्यामक ? गोशाला मंखली पुत्र बोला—श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी महा निर्यामक. सद्दाल पुत्र बोला—किस कारन श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी महा निर्यामक ! गोशाला मंखली पुत्र बोला—यों निश्चय, हे देवानुप्रिय ! श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी इस संसार रूप समुद्र में बहुत जीवों त्रास पाते हैं विनाश पाते हैं यावत् विलुप्त होते हैं, संसार में पड़ते हैं, डूबते हैं, जन्म मृत्यु रूप पानी में तनाते हैं, उनको धर्म रूप नावामें आरूढ कर निर्वान रूप तीर—किनारे के सन्मुख करते हैं अपने हाथ से पार कर-सिद्ध पुर पाटन पहोंचाते हैं, इसलिये हे देवानुप्रिय ! मैंने ऐसा कहा कि श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी महा निर्यामक (धर्म झाज के चलाने-

सूत्र

सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसालं मंखलीपुत्तं एवं वयासी-तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! इयच्छेया जाव इयणिउणा,इयनयवादी,इयउवएसलद्धा, इयविण्णाणपत्ता, पभूणं तुब्भे मम धम्मायरिएणं धम्मोवएसेणं समणेणं भगवया महावीरेणं सद्धिं विवादं करित्तए ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ से केणट्ठेणं देवाणुप्पिया! एवं वुच्चति नो खलु तुब्भे मम धम्मायरिएणं जाव महावीरेणं सद्धिं विवादं करित्तए? सद्दालपुत्ता! से जहा नामए केइपुरिसे तरुणे जुगवं जाव निउण सिप्पोवगते, एगंमहं आयंवा एलयंवा सूयरंवा कुक्कुडंवा तित्तिरंवा वट्टयंवा

अर्थ

सूत्र

सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसालं मंखलीपुत्तं एवं वयासी-तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! इयच्छेया जाव इयणिउणा,इयनयवादी,इयउवएसलद्धा, इयविणाणपत्ता, पभूणं तुब्भे मम धम्मायरिएणं धम्मोवएसेणं समणेणं भगवया महावीरेणं सद्धिं विवादं करित्तए ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ से केणट्ठेणं देवाणुप्पिया! एवं वुच्चति नो खलु तुब्भे मम धम्मायरिएणं जाव महावीरेणं सद्धिं विवादं करित्तए? सद्दालपुत्ता! से जहा नामए केइपुरिसे तरुणे जुगवं जाव निउण सिप्पोवगते, एगंमहं आयंवा एलयंवा सूयरंवा कुक्कुडंवा तित्तिरंवा वट्टयंवा

अर्थ

वाले) हैं ॥ ४४ ॥ तब सद्दाल पुत्र श्रमणोपासक गोशाला मंखली पुत्र से यों बोला—अहो देवानुप्रिय ! तुम लोक में इस प्रकार के अत्यन्त चतुर निपुण हो, इस प्रकार नयवादी हो, और उपदेश की कला को व विज्ञान को प्राप्त हुवे हो, इस लिये तुम मेरे धर्माचार्य धर्मोपदेशक श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी के साथ विवाद करने—शास्त्रार्थ करने समर्थ हो क्या ? तब गोशाला मंखली पुत्र बोला—यह अर्थ समर्थ नहीं है, अर्थात् श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी के साथ में विवाद करने समर्थ नहीं हूं. तब सद्दाल पुत्र बोला—किस कारन अहो देवानुप्रिय ! तुम मेरे धर्माचार्य धर्मोपदेशक महावीर स्वामी के साथ विवाद करने समर्थ नहीं हो ? तब गोशाला मंखली पुत्र बोला-हे सद्दाल पुत्र ! यथा दृष्टान्त कोई निपुण यौवन अवस्थावंत कला कौशल्यता युक्त शिल्पकारी पुरुष एक बडे बकरे को,मेंढे को, सूवर को, मुर्गे को,तितर को, बटेरको,

गुणकित्तणं करेहि तम्हाणं अहं तुब्भे पडिहारिएणं पीढ जाव संथारयणं उवनिमंतेमि, नो चेवणं धम्मेतिवा, तवोतिवा ॥ तंगच्छहणं तुब्भे मम कुंभारावणेसु पाडिहारिए पीढफलयं जाव ओगिण्हित्ताणं उवसंपाजित्ताणं विहरह॥४६॥तएणं गोसाले मंखलीपुत्ते सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स एयमट्ठं परिसुणेइ २ त्ता, कुंभकारवणासु पाडिहारियं पीढपलग जाव उवसंपाजित्ताणं विहरति ॥४७॥ ततेणं से गोसाले मंखलीपुत्ते सद्दालपुत्तं समणोवासस्स जाहे नो संचाएति बहुहिं आघवणेहिय पण्णवणेहिय, सण्णवणाहिय, विण्णवणाहिय परुवणेहिय; निग्गंथातो पावयणातो संचालित्तएवा खोभित्तएवा विप्परिणामित्तए, ताहे

सोगिएणय आइंचामि जहाणं तुमं अट्ट दुहट्ट वसट्ट जाव जीवियाओ विवरोविज्जसि ॥५३॥ तएणं से सद्दालपुत्ते तेणं देवेणं एवं वुत्ते सम्माणे अभीते जाव विहरति ॥५४॥ तएणं से देवे सद्दालपुत्तं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी-हंभो सद्दालपुत्ते ! तंचेव भणंति ॥५५॥ तएणं सद्दालपुत्ते तेणं देवेणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे अयं अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था, एवं जहा चुल्लणीपिया तहेव चिंतेति-जेणं ममं जेट्ठपुत्तं, जेणं ममं मज्झिमंपुत्तं, जेणं मम कणियं पुत्तं जाव आइचंति जा विय णं मम इमा अग्गिमित्ता भारिया समसुहदुह सहाइया तंपिइच्छति सातोगिहाओ णीणेत्ता मम आगाओ घात्तित्ते,

शरीर पर छांटूंगा जिस से तू आर्त ध्यान ध्याता हुवा यावत् अकाल में मृत्यु पावेगा ॥ ५३ ॥ तब सद्दाल पुत्र उस देवता के उक्त वचन श्रवण कर यावत् धर्म ध्यान ध्याता हुवा विचरने लगा ॥ ५४ ॥ तब वह देवता सद्दाल पुत्र को दो तीन वक्त उक्त वचन कहे, तब सद्दाल पुत्रने चुल्लणीपिता जैसा विचार किया मेरी, अग्निमित्रा भार्या सुखदुःखका विभाग लेनेवाली उसे भी मारना चाहता है इस लिये श्रेय है मुझे कि इसे पकडूं, यों विचारकर उसे पकडने उठा, देवता आकाश में उडगया, उसके हाथमें स्थंभ आया, कोलाहल शब्द किया, अग्निमित्रा भार्या आई, सर्व वृत्तान्त सुनाया, प्रायश्चित्त ले शुद्ध हुये, संथारा किया, साठ भक्त अनशनका छेदन

सूत्र

तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तए त्तिकट्टु उट्ठाइए जहा चुल्लणीपिता तहेव सव्वं भाणियव्वं, णवरं अग्गिमित्ता भारियाकोलाहलं सुणेत्ता, भणाति,सेसं जहा चुल्लणीपिता॥ वत्तव्वया णवरं अरुण भूएविमाणे उववातो॥ जाव महाविदेहवासे सिज्झिहिति ॥५६॥ निक्खेवओ, उपासग दसाणं सत्तमज्झयणं सम्मत्तं ॥ ७ ॥ * *

अर्थ

कर, आयुष्य पूर्ण कर प्रथम देवलोक के अरुणभूत विमान में देवतापनें उत्पन्न हुवे, चार पल्योपम का आयुष्य पाये, महा विदेहक्षत्र में जन्म धारन कर सिद्ध होगा यावत् सर्व दुःखका अन्त करेगा. यह उपाशक दशांग का सदाल पुत्र श्रावक का सातवा अध्ययन संपूर्ण हुवा ॥ ७ ॥

✻ अष्टम-अध्ययनम् ✻

सूत्र

अट्ठमस्स उक्खवो-एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे, गुणसिलए चेइए सेणियएराया ॥१॥ तत्थणं रायगिहे महासयए नामं गाहावई परिवसइ अड्ढे जाव अपरिभूए जहा आणंदो, णवरं अट्ठहिरण्णकोडीओ संकासाओ निहाणपउत्ताओ, अट्ठहिरण्णकोडीओ संकासाओ बुड्ढीपउत्ताओ, अट्ठहिरण्ण कोडीओ संकासाओ पवित्थर पउत्ताओ, अट्ठवया दसगोसाहस्सिएणं वएणं ॥२॥ तस्स महासयस्स रेवइ

अर्थ

अठवा अध्या का उत्क्षेप-यों निश्चय है जंबू ! उस काल उस समय में राजगृहीनामे नगरी थी, गुणसिलानामा चैत्यथा, श्रेणिक नाता राजा राज्य करता था ॥१॥ तहां राजगृही नगरी में महाशतक नामका गाथापति रहताथा, वह ऋद्धिवंत यावत् अपरा भवितथा, जिस प्रकार आणंद श्रावक का कहा तैसा ही सब इसका कहना, विशेष इतना-आठ हिरन्य क्रोड स्वयं की निध्यानमेथी, आठ हिरन्यक्रोडी स्वयं की व्यापारमे थी, आठ हिरन्य क्रोडी स्वयं की पाथराथा, दशहजार गौका एक वर्ग ऐसे आठ वर्ग गाईयोंके(८० हजार गौ) स्वयंके थे + ॥२॥ उस महा शतक गाथापति के रेवती प्रमुख तेरी भार्या थीं, वे पूर्ण अंगोपाम की धारक

+ महाशतककी १३ स्त्रीयों जो १९ कोडी का द्रव्य और १९ वर्ग(गोकल)गाइयों के पिताके घरसे लाइ थी वह द्रव्य संख्या व गाइयों की संख्या अलग होने से यहां संकासा का पाठ अधिक संभवता है.

सूत्र

पामोक्खाओ तेरस्स भारियाओहोत्था. अहीण जाव सुरूवाओ॥३॥ तस्सणं महासयस्स रेवइय भारियाए कोलहरियाओ अट्ठहिरण्णकोडीओ अट्ठवया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था, अवसेसाणं दुवालसण्णं भारियाणं कोलहरिया एगमेगा हिरण्णकोडीओ एगमेगयवय दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था ॥ ४ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं सामीसमोसड्ढे, परिसाणिग्गया जहा आणंदो तहाणिगच्छइ, तहेव सावगधम्मं पडिवज्जइ. णवरं अट्ठहिरण्णकोडीओ संकासाओ उच्चारेति, अट्ठवया, रेवती पामोक्खाणं तेरस्स भारियाहिं अवसेसं मेहुणविहं पच्चक्खाइ, सेसं सव्वं तहेव. इमचणं एयारुवं अभिग्गहं

अर्थ

यावत् सुरूपवती थी ॥ ३ ॥ उस महा शतक की रेवती भार्या अपने पिता के घर से आठ हिरण्य क्रोड और आठ वर्ग गाइयों के लाइ थी, वाकी की बाराह भार्याओं अपने २ पिता के घर से एकेक क्रोड हिरण्य की, और एकेक वर्ग गाइयों का लाइ थी ॥ ४ ॥ उस काल उस समय में श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी पधारे, परिषदा आइ, जिस प्रकार आनंद गाथापति भगवन्त के दर्शनार्थ गया था उस ही प्रकार महा शतक गाथापति भी दर्शनार्थ गया. और उस ही प्रकार श्रावकका धर्म बारहव्रत रूप धारन किया, जिस में इतना विशेष—स्वयं की आठ हिरण्य क्रोड का निध्यान, आठ हिरण्य क्रोड व्यापार की, आठ हिरण्य क्रोड का पाथरा. यों चौवीस हिरण्य क्रोड का द्रव्य और आठ वर्ग गाइयों के रखकर बाकी के

अभिगिण्हइ कल्लाकल्लिमए कप्पई मे दो दोणियाए कंसपाईए हिरण भारियाए संव-
वहारित्तइ ॥ ५ ॥ तएणं से महासए समणोवासएजाए अभिगय जीवाजीव जावे
विहरइ ॥६॥ तएणं समणे भगवं महावीरे बहिया विहारं विहरइ ॥७॥ तएणं तीसे
रेवइ गाहावईणीए अण्णयाकयाई पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुटुंबजागरियं जाग-
रमाणे जाव इमेयारूवे अज्झत्थिय जाव समुपज्जइ-एवं खलु अहं इमंसि दुवालसणं
सवत्तीणं विघाएणं णो संचाएमि महासएणं समणोवासएणं सद्धिं ओरालाइं माणु-

अर्थ

द्रव्य के त्याग किये, तैसे ही रेवती प्रमुख तेरे भार्यों के उपरान्त मैथुन सेवन के त्याग किये, और विशेष में इसने इस प्रकार अभिग्रह धारन किया, कि—सदैव दो द्रोणे दो कांसी [धातु] के कटोरे हिरण्यसे भरकर व्यापार करना मुझे कल्पे, अधिक नहीं कल्पताहै, और सब आणंद श्रावकके जैसी मर्यादा की ॥ ५ ॥ तब महा शतक श्रावक हुवा वे जीवादिनव पदार्थ के जान यावत् चौदह प्रकार का दान देते हुवे विचरने लगा ॥ ६ ॥ तब श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी बाहिर जनपद देश में विहार कर विचरने लगे ॥ ७ ॥ तब रेवती गाथापतनी अन्यदा किसी वक्त आधी रात्रि व्यतीत हुवे बाद कुटुम्ब

१ एक द्रोण ३४ सेर प्रमाण होता है इसलिये महाशतकने सदैव दो द्रोण अर्थात ६८ सेर सुवर्ण से अधिक व्यापार करने का त्याग किया था, ऐसा एक उपशक दशा के भाषांतर में छपाहै

सूत्र
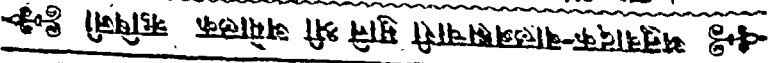
सयाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरित्तए, तं सेयं खलु मम एयाओ दुवालसवि सवत्तीयाओ अग्गिपओगेणंवा, विसप्पओगेणंवा, सत्थप्पओगेणंवा, जीवियाओ ववरो-वित्ता, एयासिं एगमेगं हिरण्णकोडीं एगमेगंवयं सयमेव उवसंपाजित्ताणं महासयएणं सद्धिं ओरालाइ भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरत्तिए; एवं संपेहेइ २त्ता तासिं दुवालसाए सवत्तीणं अंतराणिय छिद्दाणिय विरहाणिया पडिजागरमाणी विहरइ ॥ ८ ॥ तएणं सा रेवई अण्णयाकयाई तासिं दुवालसण्हं सवत्तीणं अंतरं जाणीत्ता छसवत्तीओ सत्थ-

अर्थ

जागरणा जागती हुई यावत् इस प्रकार का विचार उत्पन्न हुवा—यों निश्चय में बारह सौंकी के विघ्न करके महा शतक श्रमणोपासक के साथ औदार्य प्रधान मनुष्य सम्बन्धी भोगोपभोग भोगवती विचरने को, समर्थ नहीं हूं इस लिये मुझे इन बारह सौंकी को, अग्निके प्रयोग कर, शास्त्र के प्रयोग कर, विष के प्रयोग कर जीवित रहित करना अर्थात मारना और उनका एकेका हिरण्य क्रोडका द्रव्य और एकेक गाइयोंका वर्ग मेरे स्वाधीन करके महाशतक के साथ औदार प्रधान उपभोग परिभोग भोगवती विचरना श्रेय है. ऐसा विचार करके उन बारे सौंकी का अन्तर छिद्र विरह देखती हुइ प्रमाद रहित विचरने लगी ॥ ८ ॥ तब वह रेवती अन्यदा किसी वक्त उन बारे सौंकी को अन्तर-एकान्तपना, छिद्र-मारने का मौका प्राप्त होते, छ

सूत्र

प्पओगेणं उद्दवेइ २त्ता छसवत्तीओ विसप्पओगेणं उद्दवेइ २त्ता तासिं दुवालसण्हं सवत्तीणं कोलघरियं एगमेगं हिरणकोडी एगमेगंवयं सयमेव पडिवज्जइ, २त्ता महासएणं सद्धिं ओरालाइ भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरइ ॥ ९ ॥ तएणं सा रेवई मंस लोलूया, मंसे मूच्छिया जाव अज्झोववण्णा बहुविहेहिं मंसेहिय सोल्लेहिय तलिएहिय भंजिएहिय सूरंच महुंच मेरगंच मज्जंच सिधुंच पसण्णंच आसाएमाणी ४ विहरइ ॥ १० ॥ तएणं रायगिहे णयरे अण्णयाकयाइ अमारिघाए घुट्टयावि होत्था ॥ ११ ॥ तएणं

अर्थ

सौंकी को शस्त्र के प्रयोग कर, और छ सौंकी को विष-जेहर के प्रयोग कर मारडाली. और उन बारे ही सौंकी का पिता के घर से लाया हुवा एकेक हिरण्य क्रोड का द्रव्य और एकेक गाइयों का वर्ग स्वयं उसे अंगीकार करके महा शतक के साथ औदार्य-प्रधान मनुष्य सम्बन्धी काम भोगोपभोग भोगवती हुइ विचरने लगी ॥ ९ ॥ तब वह रेवती मांस के आहार में लोलुप्त-मूर्च्छित यावत् आशक्त बनकर बहुत प्रकार के मांस का सोल्ला-टुकडा कर तलकर भूंजकर सूरा के साथ मद्य (सेहत) के साथ, मदिरा के साथ, सिंधोडी (सेंदी ताडके रस) के साथ, प्रसन्न(खजूर रस) मदिराको पीतीहुई पिलातीहुई देतीहुई दिलाती हुई विचरने लगी॥१०॥ तब अन्यदा किसीवक्त राजगृही नगरीमें श्रेणिक राजाने अमरीपडाह बजवाया अर्थात् " मेरे राज्य में कोई भी पंचेन्द्रिय का वध-घात करना नहीं " इस प्रकार उद्घोषन करवाइ-ढौंडी

सूत्र

सा रेवईमंसलोलूया मंसेसुमुच्छिया ४ कोलघरिए पुरिसे सद्दावेइ२त्ता एवं वयासी-तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! ममं कोलघरिएहिं गोवएहिंतो कल्लाकल्लिं दुवे २ गोणपोयए उद्दवेह२त्ता मम उवणेह ॥१२॥ तएणं ते कोलहारिया पुरिसा रेवइगाहावईणीए तहत्ति एयमट्ठं पडिसुणेइ२त्ता रेवईए कोलघरिएहिंतो वएहिंतो कल्लाकल्लिं दुवे२गोणपोयए वहेंति२त्ता तं रेवईए गाहावइणीए उवणेंति॥१३॥तएणं सारेवईए तेहिं गोणमंसेहिं सोल्ले-हिय४सुरंच ४ आसाएमाणी विहरइ॥१४॥तएणं तस्स महासयगस्स समणोवासगस्स

अर्थ

पिडगाइ ॥ ११ ॥ तब वह रेवती मांस आहार की लोलुप बनी, मांस आहार में मूर्च्छित हुई, पिता के घर का जो मनुष्य इस की सेवा में था उसे बोलाकर यों कहने लगी—हे देवानुप्रिय ! तू मेरे पिता के घर से लाई हुई गौ के वर्ग में से सदैव दो गाइयों के बच्चे (बछडे) मारकर मेरे को दियाकर ॥ १२ ॥ तब वह पिता के घर का पुरुष रेवती गाथापतनी का वचन प्रमाण किया, मान्य किया, मान्य कर रेवती के पिता के दिये हुवे गाइयों के वर्ग (गोकुल) में से सदैव दो गाय के बच्छे का वधकर उस रेवती को देने लगा ॥ १३ ॥ तब वह रेवती उस गौ मांस का सोला कर तल भूंज मदिरा मद्य के साथ अस्वादती-खाती हुई विचरने लगी ॥ १४ ॥ तब वे महा शतक श्रावक बहुत शील व्रत गुणव्रत आदि से अपनी आत्मा भावते

बहुहिं सीलव्वय जाव भावेमाणस्स चउद्दससं वच्छरा वइक्कंता, एवं तहेव जेट्ठपुत्तं ठवेई जाव पोसहसालाए धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥ १५ ॥ तएणं सा रेवइ मत्तालोलूया विइण्णकेसी उत्तरिज्जयं विकड्ढमाणी २ जेणेव पोसहसाला जेणेव महासयए समणोवासए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता महोम्माय जणणाइं सिंगारियाइं इत्थि भावाइं उवदंसेमाणी २ महासययं समणोवासयं एवं वयासी-हंभो महासयगा! समणोवासया! धम्मकामया, पुण्ण-कामया, सग्गकामया, मोक्खकामया; धम्मकंखिया, पुण्णकंखिया, सग्गकंखिया,

अर्थ

विचरते हुवे चौदह वर्ष व्यतीत हुवे पन्नरहवा वर्ष वर्तते आनंद श्रावक की परे धर्म जागरणा करते विचार किया यावत् वह पुत्र को घर का भार सुपरत कर पौषधशाला में दर्भ के संथारे पर बैठे हुवे श्रमण भगवंत महावीर स्वामी प्रणित धर्म को अंगीकार करके विचरने लगे ॥ १५ ॥ तब वह रेवती मदिरा पान कर मद मस्त बनी जिस के सिर के बाल विखरे हुवे हैं, शरीर के वस्त्र उतर कर नीचे पड़ा रहे हैं, इस प्रकार विकराल रूप धारन कर पौषधशाला में जहां महाशतक श्रमणोपासक था तहां आई, आकर मोहमद को उत्पन्न करनेवाले, शृंगार रस कर पूरित, काम उत्पादक स्त्री के भाव भेद देखाती हुई महाशतक श्रमणो-पासक से इस प्रकार कहने लगी—भो महाशतक श्रमणोपासक! धर्म के, पुण्य के, स्वर्ग के, मोक्ष के कामी;

सूत्र

मोक्खकंखिया; धम्मपिवासिया, पुण्ण पवा सग ,

किणं तुब्भं देवाणुप्पिया ! धम्मेणवा पुण्णणवा, सग्गेणवा मोक्खेणवा, जंणं तुमं मए सर्द्धि ओरालाइ जाव भुंजमाणे णो विहरसि ॥ १६ ॥ तएणं से महासयए समणो वासय रेवईए गाहावइणीए एयमट्ठं नो आढाई नो परियाणाई, अणाढ्ढाईज्जमाणा अपरियाणियामाणा तुसणीए धम्मोज्झाणवग्गए विहरइ ॥ १७ ॥ तएणं सा रेवई महा सयं समणोवासएणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी-हंभो महासया समणोवासया ! तं चेव भणई ॥ सोवि तहेव जाव अणाढ्ढाईज्जमाणे विहरई ॥ १८ ॥ तएणं सा रेवइ

अर्थ

धर्म के, पुण्य के, स्वर्ग के, मोक्ष के वांच्छक, धर्म के,पुण्य के, स्वर्ग के, और मोक्ष के प्यासे, यदि तुम अहो देवानुप्रिय ! मेरे साथ औदार प्रधान मनुष्य सम्बन्धी ये काम भोग भोगवते हुये न विचरोगे तो धर्म-पुण्य - स्वर्ग-मोक्ष का क्या लाभ प्राप्त कर सकोगे ? ॥ १६ ॥ तब वह महाशतक श्रावक रेवती गाथापतनी के उक्त वचन का, आदर विना किये सत्कार विना दिये मौनस्थ धर्म ध्यान ध्याता हुवा विचरने लगा॥ १७ ॥ तब वह रेवती महाशतक श्रावक को दो वक्त तीन वक्त इस प्रकार बोली—भो महाशतक श्रमणोपासक! सब ऊपर मुजब कहा. तो भी वे महाशतक धर्म ध्यान ध्याते हुवा ही विचरनें

गाहावइणी महासएणं समणोवासएणं अणाढाईज्जमाणी अपरियाणिज्जमाणी जामेवदिसिं पाउब्भूया तामेवदिसिं पडिगया ॥ १९ ॥ तएणं से महासयए समणोवासए पढमं उवासगं पडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरई, पढमं अहासूतं जाव एक्कारसवि ॥२०॥ तएणं से महासयए तेणं उरालेणं जाव किसे धमणिसंतए जाए॥२१॥ तएणं तस्स महासयस्स अण्णया पुव्वरत्ता वरतकाले रामयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स, इमेयारुवे अज्झत्थिए-एवं खलु अहं इमेणं उरालेणं जहा आणंदो तहेव अपच्छिम मारणांतिय संलेहणाए झोसियसरीर भत्तपाणं पडियाइक्खए कालं अणव-

अर्थ

लगा ॥ १८ ॥ तब रेवती गाथापतनी महाशतक श्रावक से अनादर पाईहुई अपमान पाईहुई जिस दिशा से आई थी उस दिशा (अपने घर) को पीछी गई ॥ १९ ॥ तब महाशतक श्रमणोपासक प्रथम श्रावक की प्रतिमा अंगीकार कर विचरने लगे यावत् आनंद श्रावक की परेही इग्यारे प्रतिमा सम्यक् प्रकारसे आराधकर पालकर पूर्ण की ॥२०॥ तब महाशतक श्रावक उस उदार प्रधान तप कर यावत् धमनी भूत दुर्बल हुवे ॥२१॥ तब महाशतक श्रावक अन्यदा किसीवक्त आधीरात्रि व्यतीत हुवे धर्मजागरना जागते हुवे इस प्रकार विचार उत्पन्न हुवा, यों निश्चय इस उदार प्रधान तप से मेरा शरीर दुर्बल हुवा यावत् आणंदश्रावक की तरह अपश्चिम मरणांतिक संलेपना झोसना कर भक्तपान का त्यागकर काल की वांछा

सूत्र

कंक्खमाणे विहरइ ॥ २ २॥ तएणं तस्स महासयगस्स समणोवासगस्स सुभेणं पारणामेण जाव खओवसमेणं ओहिनाणे समुप्पण्णे, पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दे जोयण सहस्सखेत्तं जाणइ पासइ, एवं दक्खिणेणं, पच्चत्थिमेणं, उत्तरेणं जाव चुल्लहिमवंतं वासहरपव्वयं जाणइ पासइ, अहे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलूयच्चुयं नरयं चोरासीवास सहस्स ट्ठिईयं जाणई पासई ॥ २ ३ ॥ तएणं सा रेवईगाहावइणी, अण्णयाकयाई मत्ता जाव उत्तरेज्जयं विकड्ढमाणी २ जेणेव महासयए जेणेव पोसहसालाए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता महासययं

अर्थ

नहीं करता हुवा विचरने लगा ॥ २२ ॥ तब उस महाशतक को शुभपरिनाम की वृद्धिकर यावत् ज्ञानावरणिय कर्म के क्षयोपशमकर अवधिज्ञान उत्पन्न हुवा. जिस से पूर्व दक्षिण और पश्चिम में लवण समुद्र में एक हजार योजन तक जानने देखनेलगा, उत्तर में चुल्लहेमवंत पर्वत तक जानने देखनेलगा ऊपर सौधर्म देवलोक और नीचे प्रथम नरक का लोलचुत नरकावासा में चौरासी हजार वर्ष की स्थिततक जानने देखने लगा ॥ २३ ॥ तब वह रेवती गाथापतिनी अन्यदा मदिरा से उनमत्त बनकर यावत् शरीर के कपडे को नीचेडालती हुइ जहां पौषधशाला जहां महाशतक श्रमणोपासक था तहां आइ, आकर पूर्वोक्त प्रकार दोतीन वक्त बोली, " भो ! महाशतक जो तुम मेरेसाथ भोगनहीं भोगवोगेतो तुम को स्वर्ग मोक्ष से

सूत्र

तहेव भणई जाव दोचंपि तच्चंपि एवं वयासी-हंभो! तहेव ॥२४॥ तएणं से महासए समणोवासए रेवई गाहावइणीए दोचंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समणे आसुरुत्ते ४ ओहिं पउंजई२त्ता ओहिणा अभोइ२त्ता रेवइ गाहावणीए एवं वयासी-हंभो रेवई! अपत्थिय पत्थिए ४ एवं खलु तुमं अंतो सत्तरत्तस्स अलसएणं वाहिणा अभिभूयासमाणी अट्ट दुहट्ट वसट्टा असमाहिपत्ता कालंमासे कालंकिच्चा अहे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुएस्स नरए चउरासीई वाससहस्स ट्ठिइएसु नेरईएसु नेरईत्ताए उववज्जिहिसि ॥ २५ ॥ तत्तेणं सा रेवई गाहावईणी महासयए समणोवासएणं एवं वुत्ता समाणी

अर्थ

क्यालाभ होगा?" ॥ २४ ॥ तब वे महाशतक दोवक्त तीनवक्त उक्त वचन श्रवनकर असुरक्त हुवे क्रोधातुरपने अवधिज्ञानकर देखा, देखकर रेवती गाथापतिनी से ऐसा बोले भो रेवति! अमार्थ की प्रार्थनेवाली मृत्यु की इच्छक, अपलक्षण की धारक, कालीचतुर्दशीकीजन्मी, लज्जाकर रहित यों निश्चय से तू आज से सातवे दिन आलस नाम की व्याधी (रोग) से पराभव पाइ हुई आर्त ध्यान के वशहो दुःखसे पीडा पाती हुई असमाधी भाव से काल के अवसर में काल पूर्ण कर नीचे इस रत्नप्रभा नरक के लुलचुत नरकावास में चौरासी हजार वर्ष की स्थितिपने नेरियेपने उत्पन्न होगी ॥ २५ ॥ तब वह रेवती गाथपति-नी महाशतक श्रावक का उक्त वचन श्रवण कर भयभ्रान्त हुई मन से यों कहने लगी-महाशतक मुझ पर

भीया एवं वयासी-रुट्ठेणं मम महासयए, हीणेणं मम महासयए, अवज्झायाए अहं महासयए समणोवासए, णणजाइणं अहं केणवि कुमारेणं मारिज्जस्सामि त्तिकट्टु, भीया तत्था तसिया उव्विग्गा संजाय भया सणियं २ पच्चोसक्कइ २ त्ता जेणेव सए-गिहे तेणेव उवागच्छइ २ ओहय जाव ज्झियाई ॥२६॥ तएणं सा रेवईगाहवहीणी अंतोसत्तरत्तस्स अलसएणं वाहिणा अभिभूया अट्टदुहट्ट वसट्टा कालमासे कालंकिच्चा इमीसे रयणप्पभाएए पुढवीए लोलूएच्चूए नरए चउरासीइ वाससहस्स ट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइएत्ताए उववण्णा॥२७॥तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे, परि-

रुष्ट हुवे, हीन प्रीतिवाले हुवे, अपध्यानी अर्थात् मेरे पर खराब विचारवाले हुवे, न मालुम मैं इस [शरापकर] किस प्रकार के कुमृत्यु करके मरुंगी. यों विचार करती, भय भीत होती, त्रास पाती, उद्वेग धरती, भय उत्पन्न होने से शनैः२ पीछी सरकती हुइ पौषधशाला के बाहिर निकल कर जहां स्वयं का घर था तहां आई, चिन्तग्रस्थ बनी, आर्त ध्यान धरती रहने लगी ॥ २६ ॥ तब वह रेवती गाथापतिनी सात रात्रि के अन्दर आलस नामक रोग से ग्रहस्थ हो रोग से पराभव पाई हुई, आर्त ध्यान ध्याती हुई दुःखकेवशीभूत हो काल के अवसर काल करके इस रत्नप्रभा नरक के लोलचुत नरकावास में चौरासी हजार वर्ष के आयु-पने उत्पन्न हुई ॥ २७ ॥ उस काल उस समय में श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी पधारे, परिषदा आई

सूत्र

नाणिग्गया जाव पडिगया ॥ २८ ॥ गोयमाइ, समणे भगवं महावीरे एवं वयासी- एवं खलु गोयमा ! इहेव रायगिहे णयरे मम अंतेवासी महासयए णामं समणोवासए पोसहसालाए अपच्छिम मारणंति संलेहणाए झोसीए सरीरे, भत्तपाणं पडियाइक्खिए कालं अणवकंकखमाणे विरइ॥ तएणं तस्स महासयगस्स रेवईए मत्ता जाव उत्तरियं विकट्टमाणी जेणेव पोसहसाला जेणेव महासयए तेणेव उवागए, महोम्मायं जाव एवं वयासी तहेव जाव दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी, तएणंसे महासयए समणोवासए रेवईए गाहावयणीए दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते ४ ओहिणा आभोएइ२त्ता

अर्थ

धर्मकथा श्रवण कर परिषदा पीछी गई॥२८॥गौतम स्वामी से श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी ऐसा बोले-यों निश्चय, हे गौतम ! इस ही राजगृही नगरी में मेरा अन्तेवासी महाशतक श्रमणोपासक पौषधशाला में आपाश्चिम मारणान्तिक संलेषना झोंसना कर आहार पानी का परित्याग कर काल मृत्यु की वांछा नहीं करता हुवा विचरता है. उस महाशतक की पत्नी रेवती काम से मदमस्त बन वस्त्र को शरीर से अलग डालती हुई विकल बनकर जहां पौषध शाला थी जहां महाशतक था तहां आई. कामसे मस्तबनी हुई यावत् दो तीन वक्त वचन कहे, उसे श्रवण कर महाशतक असुरक्त हुवे, अवधीज्ञान से देखा रेवती से यों कहा यावत् नरक में उत्पन्न होगी.हे गौतम-श्रमणो पासक को यावत् अपाश्चिम मरणान्तिक सलेषना

सूत्र

रेवई गाहावाईणीए जाव उववाजिहिसि ॥ णो खलु कप्पइ गोयमा ! समणोवासगस्स अपच्छिम जाव झूसीयसरीरस्स भत्तपाणं पडियाइक्खियस्स परोसंतहिं तच्चेहिं तहिएहिं सब्भूएहिं अणिट्ठेहिं अकंतेहि अप्पिएहिं अमणुणेहिं अमणामेहिं वागरणेहिं वागरित्तए, तंगच्छहणं देवाणुप्पिया ! तुब्भं महासययं समणोवासयं एवं वयाहि--नोखलु देवाणुप्पिया ! कप्पइ समणोवासगस्स अपच्छिम जाव भत्तपाण पडियाइक्खियस्स परो संतेहि जाव वागरित्तए, तुमे यणं देवाणुप्पिया! रेवई गाहावइणी संतेहिं ४ अणिट्ठेहिं वागरणेहिं वागरिया, तंणं तुम्मं एयस्स ठाणस्स आलोएहिं जाव जहारिहंच पायछितं पडिवज्जहिं ॥ २९ ॥ तएणं से भगवं गोयमे समणस्स भगवओ

अर्थ

किये हुवे को आहार पानी के त्याग किये हुवे को सत्य तथ्य सद्भूत हो परंतु किसी को अनिष्टकारी अकंतकारी अप्रियकारी अमनोज्ञ अनगमते बचन लगते होवे वे कहना कल्पता नहीं है. इसलिये हे गोतम! तुम जावो महाशतक श्रमणोपासक से ऐसा कहो कि-हे देवानुप्रिया ! श्रमणोपासक को सलेषना किये हुवे को सत्यतथ्य सद्भूत बचन भी अनिष्टा अप्रिय किसी को कहना कल्पता नही है. परंतु तुमने हे देवाणुप्रिया ! रेवती गाथापतिनी को संतापी अनिष्ट बचन कहे, इसलिये तुम उस पाप स्थानक की आलोचना करो यावत् यथा उचित प्रायःश्चित्त ग्रहणकरो ॥ २९ ॥ तब

णाणिग्गया जाव पडिगया ॥ २८ ॥ गोयमाइ, समणे भगवं महावीरे एवं वयासी-एवं खलु गोयमा ! इहेव रायगिहे णयरे मम अंतेवासी महासयए णामं समणोवासए पोसहसालाए अपच्छिम मारणंति संलेहणाए झोंसीए सरीरे, भत्तपाणं पडियाइक्खिए काल अणवकंक्खमाणे विरइ॥ तएणं तस्स महासयगस्स रेवईए मत्ता जाव उत्तरियं विकड्ढमाणी जेणेव पोसहसाला जेणेव महासयए तेणेव उवागए, मोहुम्मायं जाव एवं वयासी तहेव जाव दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी, तएणंसे महासयए समणोवासए रेवईए माहावयणीए दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते ४ ओहिणा आभोएइ२त्ता

धर्मकथा श्रवण कर परिपदा पीछी गई॥२८॥गौतम स्वामी से श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी ऐसा बोले-यों निश्चय, हे गौतम ! इस ही राजगृही नगरी में मेरा अन्तेवासी महाशतक श्रमणोपासक पौषध-शाला में आपश्चिम मारणान्तिक संलेषना झोंसना कर आहार पानी का परित्याग कर काल मृत्यु की वांछा नहीं करता हुवा विचरता है. उस महाशतक की पत्नी रेवती काम से मदमस्त तन वस्त्र को शरीर से अलग डालती हुई विकल बनकर जहां पौषध शाला थी जहां महाशतक था तहां आई. कामसे मस्तबनी हुई यावत् दो तीन वक्त वचन कहे, उसे श्रवण कर महाशतक असुरक्त हुवे, अवधीज्ञान से देखा रेवती से यों कहा यावत् नरक में उत्पन्न होगी. हे गौतम-श्रमणोपासक को यावत् अपश्चिम मरणान्तिक संलेषना

सूत्र

रेवई गाहावाईणीए जाव उववाजिहिसि ॥ णो खलु कप्पई गोयमा ! समणोवासगस्स अपच्छिम जाव झूसीयसरीरस्स भत्तपाणं पडियाईक्खियस्स परोसंताहिं तच्चेहिं ताहिएहिं सब्भूएहिं अणिट्ठेहिं अकंतेहि अप्पिएहिं अमण्णुणेहिं अमणामेहिं वागरणेहिं वागरित्तए, तंगच्छहणं देवाणुप्पिया ! तुब्भं महासययं समणोवासयं एवं वयाहि--णोखलु देवाणुप्पिया ! कप्पइ समणोवासगस्स अपच्छिम जाव भत्तपाण पाडियाइक्खियस्स परो संतेहि जाव वागारित्तए, तुमे यणं देवाणुप्पिया! रेवई गाहावईणी संतेहिं ४ अणिट्ठेहिं वागरणेहिं वागरिया, तंणं तुम्मं एयस्स ठाणस्स आलोएहिं जाव जहारिहंच पायछितं पडिवज्जहिं ॥ २९ ॥ तएणं से भगवं गोयमे समणस्स भगवओ

अर्थ

किये हुवे को आहार पानी के त्याग किये हुवे को सत्य तथ्य सद्भूत हो परंतु किसी को अनिष्टकारी अकंतकारी अप्रियकारी अमनोज्ञ अनगमते बचन लगते होवे वे कहना कल्पता नहीं है. इसलिये हे गोतम! तुम जावो महाशतक श्रमणोपासक से ऐसा कहो कि-हे देवानुप्रिया ! श्रमणोपासक को सलेषना किये हुवे को सत्यतथ्य सद्भूत वचन भी अनिष्ट अप्रिय किसी को कहना कल्पता नहीं है. परंतु तुमने हे देवाणुप्रिया ! रेवती गाथापतिनी को संतापी अनिष्ट वचन कहे, इसलिये तुम उस पाप स्थानक की आलोचना करो यावत् यथा उचित प्रायःश्चित्त ग्रहणकरो ॥ २९ ॥ तब

महावीरस्स तहत्ति, एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ २ त्ता, तओपडिणिक्खमइ २ त्ता रायगिहं नगरं मज्झं मज्झेणं अणुप्पविसे २ त्ता जेणेव महासयगस्स गिहं जेणेव महासय समणोवासय तेणेव उवागच्छइ, ॥ ३० ॥ तएणं से महासयए समणोवासए भगवं गोयमं एज्जमाणं पासइ २ त्ता हट्ठ जाव हियए भगवं गोयमं वंदइ णमंसइ॥ ३१॥ तएणं से भगवं गोयमे महासयगस्स समणोवासयस्स एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे एव माइक्खइ भासइ पण्णवेइ परूवेइ-नोखलु कप्पइ देवाणुप्पिया ! समणोवासगस्स अपच्छिमे जाव वागरित्तए॥ तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! रेवईए गाहावइनी

अर्थ

भगवन्त गौतम ! श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की आज्ञा तहत्ति की, उक्त अर्थ को सविनय मान्य किया, तहां से निकले राजगृही नगरी के मध्य २ में से प्रवेश कर जहां महाशतक का घर महाशतक श्रावक था था तहां आये ॥३०॥ तब वह महाशतक श्रमण भगवन्त गौतम स्वामी को आते हुवे देखकर हृष्ट तुष्ट यावत् आनन्दित हुवा भगवन्त गौतम स्वामी को वन्दना नमस्कार किया ॥३१॥ तब भगवन्त गौतम ! महाशतक श्रावक को यों कहने लगे—हे देवानुप्रिय ! अपश्चिम मलेखनावन्त श्रावक को अनिष्ट वचन किसी को कहना, कल्पता नहीं है. हे देवानुप्रिय ! तुमने रेवती गाथापतिनी को सत्य तथा सद्भूत परंतु अनिष्ट अकंत अप्रिय अमनोज्ञ दुःखदाइ वचन कहे, संतापी इसलिये तुम इस स्थानक की आलोचना करो यावत्

संत्तेहिं ४ अणिट्ठेहि ५ वागरणेहि वागरिया, तं तुमं देवाणुप्पिया! एयस्स ठाणस्स आलोएहिं जाव पडिवज्जहि॥ ३२॥ तएणं से महासयए भगवं गोयमस्स तहत्ति, एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ २ त्ता तस्स ठाणस्स आलोएइ जाव अहारिहंच पायच्छित्तं पडिवज्जइ ॥ ३३ ॥ तएणं से भगवं गोयमे महासगस्स समणोवासए अंतियाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता रायगिहं नगरं मज्झं मज्झेणं णिगच्छइ २ त्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ॥ ३४॥ तएणं समणे भगवं महावीरे अण्णयाकयाई रायगिहाओ णयराओ पडिनिक्खमइ २ त्ता वहिया जणवय विहरं विहरइ ॥ ३५ ॥ तएणं से महासयए समणोवासए वहुहिं

अर्थ—प्रायःश्चित्त लो॥३२॥ तब महाशतक श्रावकने भगवन्त गौतम का वचन तहत किया उक्त वचन विनय कर मान्य किया और उस पाप की आलोचना कर प्रायःश्चित्त अंगीकार किया ॥ ३३ ॥ तब भगवन्त गौतम महाशतक के पास से निकले राजगृही के मध्य २ में होकर निकलकर जहां श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी थे तहां आकर संयम तप कर अपनी आत्माको भावते हुवे विचरने लगे॥३४॥ तब श्रमण भगवन्त महावीर स्वामीने अन्यदा राजगृही नगरी से बाहिर विहार कर जनपद देशमें विचरने लगे ॥ ३५ ॥ तब महाशतक

अर्थ

सीलव्वय जाव भावेत्ता वीसंवासाइं समणोवासग परियागं पाउणित्ता, इक्कारस्स उवासग पडिमाओ समंकाएणं फासित्ता, मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झोसित्ता, सट्ठिं भत्ताई अणसणाइ छेदेत्ता, आलोइए पडिकंते समाहिपत्ते कालंमासं कालंकिच्चा सोहमकप्पे अरूणवडिंसए विमाणे देवत्ताए उववण्णे, चत्तारि पलिओवमाइं ठिई, महाविदेहवासे सिज्झहि॥ णिक्खेवो॥उवासग दसाणं अट्ठमं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ ८ ॥

॥ नवमम्-अध्यनम् ॥

सूत्र

नवमस्स उक्खेवो, एवं खलु जंबु ! तेणंकालेणं तेणंसमएणं सावत्थी नयरी, कोट्ठग चेइए, जिय सत्तुराया ॥ तत्थणं सावत्थीए नंदिणीपिया नामं गाहावइ परिवसइ, अड्ढे; चत्तारि हिरण्णकोडीओ निहाणपउताओ, चत्तारी हिरण्यकोडी बुड्ढीपउताओ, चत्तारि हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउताओ, चत्तारीवया दसगो सहास्सिणं वएणं, अस्सिणी भारिया ॥ १ ॥ सामी समोसढे, जहा आणंदो तहेव गिहिधम्मं पडिवजही ॥ सामी वहिया विहारं विहरइ ॥ २ ॥ तएणं से नंदिणीपिया समणोवासए जाए जाव विहरइ ॥ ३ ॥

अर्थ

नववा अध्ययन, यों निश्चय अहो जम्बू ! उस काल उस समय में श्रावस्ति नामे नगरी थी, कोष्टक नामका चैत्य था, जित शत्रु राजा राज्य करता था, ॥ तहां श्रावस्ति नगरी में नंदिनी पिता नामक गाथापति रहता था, वह ऋद्धिवंत यावत् अपराभवित था. उस के चार हिरण्य क्रोडी द्रव्य तो निधान में था, चार हिरण्य क्रोडी द्रव्य व्यापर में था, चार हिरण्य क्रोडी द्रव्य का घरवखेरा था, चार वर्ग गाइयों के थे, अश्विनी नामकी भार्या थी ॥ १ ॥ श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे जिस प्रकार आनन्द गाथापतिने गृहस्थ का धर्म अंगीकार किया उसही प्रकार इसने भी किया ॥ तब महावीर स्वामीने बाहिर

तएणं तस्स नंदिणीपियस्स बहुसीलव्वयगुण जाव भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छराइं वइक्कंताइं तहेव जेट्ठपुत्तं ठवेइ, धम्मपण्णत्तिं॥वीसंवासाइं परियागं नाणत्तं. अरुणगवे विमाणो उववाओ ॥ महाविदेहवासे सिज्झिहिति ॥ ३ ॥ निक्खेवो उवासग दसाणं नवमं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ ९ ॥ × ÷

अर्थ

जनपद देश विहार किया॥२॥तब नंदिनी पिता श्रमणोपासक जीवाजीवका ज्ञान हुवा, यावत् चौदह प्रकारका दान देता विचरने लगा ॥ ३ ॥ तब नंदिनी पिता श्रमणोपासक को बहुत प्रकार व्रत पालते चौदह वर्ष व्यतीत हुवे पन्दरवे वर्ष में एकदा धर्म जागरना जागते आनंद की तरह विचार हुवा तैसे ही बडे पुत्र को घरभार सुपूतकर पौषध शाला में महावीर स्वामी प्रणित धर्म धारन कर विचरने लगा, इग्यारे प्रतिमा का आराधन किया, एक महीने का संथारा हुवा, आयुष्य पूर्ण कर प्रथम देवलोक के अरुण गवे विमान मे देवता पने उत्पन्न हुवा. चार पल्य की स्थिति, वहां से महाविदेह क्षेत्र में जन्म धारन कर सिद्ध होंगे ॥ इति नंदिनी पिता श्रावक का नवमा अध्ययन समाप्तम् ॥ ९ ॥

ओहिन्नाणं पिसाए, मा वाहि, धण्ण उत्तरिज्जेय ॥ भज्जाय सुव्वया दुव्वया, निव्वरुणगाय
दोण्णि॥ ४॥ अरुणे अरुणाभेखलु, अरुणप्पह अरुणकंतेय सिट्ठेय ॥ अरुणज्झयेय अरुणभूए,
वंतसक गब्भे किले॥ ५॥ आणंदाइ, उवासग भावणावट्टिंहि सव्वकय पडिमागा। ससारते-
रउवासा, दुसत्तसट्ठि पारणा तत्था॥ ६॥ उवासगदसासत्तम अंग समत्तं॥ उवासगदसाणं
सत्तमस्स अंगस्स एगो सुयखंधो दस अज्झयणा एक्कारसगा दस चेवदिवसेसु उद्दिसंति॥
अणुन्निजइ दोसुवि दिवसेसु अंगं तहेव ॥ सत्तम अंग उवासग दसाणं समत्तं ॥ ७ ॥

॥ सूत्र सार रूप दशही श्रावकों का संक्षिप्त यंत्र. ॥

संख्या.	ग्राम के नाम.	श्रावक के नाम.	स्त्री के नाम.	धन प्रमान.	गौ प्रमान.	उपसर्ग.	विमान नाम.
१	वाणिज्यग्राम	आनन्द	शिवानन्दा	१२००००००००	४००००	अवधिज्ञान	अरुण
२	चम्पानगरी	कामदेव	भद्रा	१८००००००००	६००००	पिशाचादि	अरुणनाभ
३	बानारासी	चुल्लनिपिता	शामा	२४००००००००	८००००	भद्रमाताका	अरुणप्रभ
४	बानारासी	सुरादेव	धन्ना	१८००००००००	६००००	१६ रोगका	अरुणकांत
५	आलंभिया	चूलशतक	बहुला	१८००००००००	६००००	धन्नास्त्रीका	अरुणशिष्ट
६	काम्पलकपुर	कुंडकोलिक	पुंसा	१८००००००००	६००००	धर्मचर्चाका	अरुणज
७	पोलासपुर	सद्दालपुत्र	अग्निमित्रा	३००००००००	८००००	स्त्रीघातका	अरुणभूत
८	राजगृही	महाशतक	रेवतीआदी १३	२४००००००००	८००००	रेवतीस्त्रीका	अरुणवंतशक
९	श्रावस्ति	नन्दिनीपिता	अश्विनि	१२००००००००	४००००	उपसर्ग नहीं	अरुणगर्व
१०	श्रावस्ति	मालिहीपिता	फाल्गुणी	१२००००००००	४००००	उपसर्ग नहीं	अरुणकिल

* इति सप्तमाङ्गं *

॥ उपाशक दशा सूत्र समाप्तम् ॥

वीराब्द-२४५४ जेष्ठ कृष्ण १३ गुरुवार.

श्री उपासकदशांग शास्त्र की प्रस्तावना.

प्रणम्य श्री महावीरं, महानंदकरं मुदा॥उपासकदशा वार्तिकं, करोति सुबोधिकम् ॥१॥

महा आनन्द के कर्ता श्री महावीर स्वामीजी को नमस्कार करके उपासक दशा शास्त्र के अर्थ का सब जीवों को सुख से बोध होवे इसलिये इस का हिन्दी भाषानुवाद मैं कहता हूं.

छठे अंग ज्ञाता सूत्र में धर्म कथानुयोग कहा है. और वही अनुयोग इस उपासक दशा शास्त्र में हैं. ज्ञाता धर्म कथा में अनेक दृष्टांत में से साधु की उत्तम क्रिया बताई है और इस सूत्र में श्रावक का उत्कृष्ट आचरण का कथन किया है. इसका पठन करना श्रावकों को अति आवश्यकीय होने से इसकी १०० प्रत अधिक निकाली गई है.

संपूर्ण उपासक दशांग का पठन करते मालुम होगा कि इतने धुरंधर श्रावकोंने किसी स्थान तीर्थंकर भगवान की मूर्ति की पूजा नहीं की है. वैसे ही किसी स्थान जैन मंदिर नहीं बनाये हैं. सूत्र पाठ में स्थान २ पर जो अरिहंत चेइय शब्द का प्रयोग है वह प्रक्षेपा हुवा है; परंतु मूल पाठ का नहीं है. प्रसिद्ध विद्वान ए. एफ. रडोल्फ हरनल पी. एच डी. ने उपासक दशांग सूत्र का इंग्रेजी में भाषांतर कियाहै

शास्त्रोद्धार प्रारंभ वीराब्द २४४२ ज्ञान पंचमी

इति

ासक दशांग सूत्र

समाप्तम्

शास्त्रोद्धार समाप्ति वीराब्द २४४६ विजयादशमी